

नन्द्यादिनां विषयानुक्रमः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

‘नन्दी-आदि-सप्तसूत्र’ लघु-बृहद्विषयानुक्रमः [आगम-संबंधी-साहित्य]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]
(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["---"]
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) श्री-आगमोदयसमिति ग्रन्थोद्धारे ग्रन्थांकः ५५. श्रीनन्दी-अनुयोगद्वार-आवश्यक-ओषनिर्युक्ति-दशवैकालिक-पिण्डनिर्युक्ति-उत्तराध्ययनानां सूत्रसूत्रगाथानिर्युक्तिमूलभाष्यभाष्याणामिकारादिक्रमः अंकशुद्धिः लघुर्बृहंश्च विषयानुक्रमः । (नन्द्यादिः विषयानुक्रमः) प्रकाशकः-श्री आगमोदयसमितेः कार्यवाहकः जीवनचन्द्र साकरचन्द्र शवेरी । इदं पुस्तकं मुम्बय्यां निर्णयसागरमुद्रणालये कोलभाटवीथ्यां २६-२८ तमे गृहे रामचंद्र येसु शेडगेद्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । प्रतयः १२५०] वीरसंवत् २४५४, विक्रमसंवत् १९८४, सन १९२८. [वितनं रु० २-०-०.
	*** मूल संपादकेन संपादितः 'ओरिजिनल टाईटल' पेज

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["---"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) विजयतेतरां श्रीमद्गणपतिद्वादशाङ्गात्मा. विदितपूर्वमेतद्विपश्चितां यदुतागमवाचनाप्रकाशकारिण्या यथार्थोभिधानया आगमोदयसमित्या श्रीमज्जनवरेन्द्रवदनविनिर्गतत्रिपदी- हिमवज्जातप्रभवः कोष्ठबुद्धिकत्वाद्यनन्यसाधारणगुणगणभृद्विर्गणभृद्भिः रचित आगमनिचय ऐदंयुगीनश्रमणस्योपकृतये वाचनायां सौ- कर्याय च मुद्रापितः, मुद्रापिते च तस्मिन् उत्तमोत्तममुद्रणालयसत्कोत्तमोत्तमाक्षरैर्जातमस्येव समेषां पाठकाध्येतृविलोककानां शर्मानूनं, परं येषामन्यग्रन्थावलोकनेऽनेकत्र दुर्बोधा विषया अवभासेरंस्तेषां यथार्थतया तद्विषयमूलस्थानजिज्ञासापूरणाय सूत्राकारादिक्रमयुतो विषया- नुक्रमोऽयमुपदीक्रियमाणो विदुषां करिष्यत्युपकारमसमं, विषयानुक्रमो लघुस्तावद् अध्ययनानामनुक्रमेण मह्यंस्तु विषयदर्शनपुरस्सरं वादादिस्थानविशेषसूचनयाऽलंकृतः, क्षन्तव्योऽपराधोऽत्र यत् मुद्रणसौकर्याय सर्वेषामागमानां स्वानि सूत्राणि स्वा गाथाश्चैकीकृताः, प्रति- वाङ्मयं निर्युक्तिगाथा भाष्यगाथा अपि च संमील्य विवक्षिताः, अन्यथा प्रतिस्थानं श्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशसूत्रगाथानां पृथक् पृथक्कन्यासेन निर्युक्तिमूलभाष्यभाष्यध्यानशतकसंग्रहणीगाथादीनां पृथक्पृथक्क्षरोपन्यासेन च गौरवं स्यात्, या च क्षतिर्मुद्रणे जाताऽङ्कानां विहारादिना कारणेन तस्याः मार्जनाय चात्राङ्कशुद्धिरादाववधृता लघ्वी महती च सा विलोकनीयाऽवश्यं, प्रारंभे दृष्टिगोचरीकार्यश्च संकेतसूचकोऽधि- कारश्च सदैव तेन मुद्रापितो मतिमद्भिः, परशास्त्रगतसूत्रसूत्रगाथानिर्युक्तिभाष्यादिस्थानजिज्ञासायां अकारादिक्रमावलोककानां चोपकरिष्यति स्पष्टं विशिष्टाङ्कशुद्धिपत्रिकाऽकारादिक्रमस्य पुरतो मध्ये धृत्यर्थयन्ते आनन्दसागराः १९८४ पौषकृष्ण १३ शुक्रवासरे इडरदुर्गे. शान्तिं कृतः शान्तिजिनस्य मूर्त्या, दुर्गस्थचैत्यालयमाश्रयन्त्या । अधिष्ठिते <u>हीडरधाम्नि एषा, प्रस्तावनाऽकारि जनावबुद्धै ॥ १ ॥</u>
	*** पूज्यपाद आनन्दसागरसूरीश्वरेण लिखितं प्रास्ताविक-कथनं

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

क्रमांकः	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः	क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः
अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
०१	✿ आचार			०७	✿ उपासकदशा		
०२	✿ सूत्रकृत्			०८	✿ अंतकृद्दशा		
०३	✿ स्थान			०९	✿ अन्तरोपपातिकदशा		
०४	✿ समवाय			१०	✿ प्रश्नव्याकरण		
०५	✿ भगवती			११	✿ विपाकश्रुत		
०६	✿ ज्ञाताधर्मकथा			-----	-----		
उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
१२	✿ औपपातिक			१८	✿ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति		
१३	✿ राजप्रश्नीय			१९	✿ निरयावलिका		
१४	✿ जीवाजीवाभिगम			२०	✿ कल्पवतंसिका		
१५	✿ प्रज्ञापना			२१	✿ पुष्पिता		
१६+१७	✿ सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति			२२	✿ पुष्पचूलिका		
-----	-----			२३	✿ वृष्णिदशा		

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

क्रमांकः	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः	क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः
प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
२४	✻ चतुःशरण			२९	✻ संस्तारक		
२५	✻ आत्रप्रत्याख्यान			३०	✻ गच्छाचार		
२६	✻ महाप्रत्याख्यान			३१	✻ गणिविज्जा		
२७	✻ भक्तपरिज्ञा			३२	✻ देवेन्द्रस्तव		
२८	✻ तंदुलवैचारिक			३३	✻ मरणसमाधि		
*** [३४-३९] छेदसूत्र-वृत्ति का विषयानुक्रम पूज्य आगमोद्धारकश्रीने नहीं बनाया ***							
मूल-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
४०	✻ आवश्यक	०१२	०२५	४२	✻ दशवैकालिक	०१३	०६६
४१/१	✻ पिंडनिर्युक्ति	०१३	०८२	४३	✻ उत्तराध्ययन	०१४	०९०
४१/२	✻ ओघनिर्युक्ति	०१३	०५३	-----	-----		
चूलिका-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
४४	✻ नन्दी	०११	०१६	४५	✻ अनुयोगद्वार	०११	०१९

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांकः एवं दीप-क्रमांकः

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-	
०१	✽ आचार	४०२	१४७	५५२	१६	✽ सूर्यप्रज्ञप्ति	१०७	१०३	२१४
०२	✽ सूत्रकृत्	०८२	७२३	८०६	१७	✽ चन्द्रप्रज्ञप्ति	१०७	१०७	२१८
०३	✽ स्थान	७८३	१६९	१०१०	१८	✽ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१७८	१३१	३६५
०४	✽ समवाय	१६०	०९३	३८३	१९	✽ निरयावलिका	०२०	-----	०२१
०५	✽ भगवती	८६९	११४	१०८७	२०	✽ कल्पवतंसिका	००२	००१	००५
०६	✽ ज्ञातार्थकथा	१६५	०५७	२४१	२१	✽ पुष्पिता	००६	००२	०११
०७	✽ उपासकदशा	०५८	०१३	०७३	२२	✽ पुष्पचूलिका	००१	००१	००३
०८	✽ अंतकृद्दशा	०२७	०१२	०६२	२३	✽ वृष्णिदशा	००२	००१	००५
०९	✽ अनुत्तरोपपातिकदशा	००६	००२	०१३	२४	✽ चतुःशरण	-----	०६३	०६३
१०	✽ प्रश्नव्याकरण	०३०	०१४	०४७	२५	✽ आतुरप्रत्याख्यान	००१	०७०	०७१
११	✽ विपाकश्रुत	०३४	००३	०४७	२६	✽ महाप्रत्याख्यान	-----	१४२	१४२
१२	✽ औपपातिक	०४३	०३०	०७७	२७	✽ भक्तपरिज्ञा	-----	१७२	१७२
१३	✽ राजप्रश्नीय	०८५	-----	०८५	२८	✽ तंदुलवैचारिक	०२०	१३९	१६१
१४	✽ जीवाजीवाभिगम	२७३	०९३	३९८	२९	✽ संस्तारक	-----	१३३	१३३
१५	✽ प्रज्ञापना	३५२	२३१	६२२	३०	✽ गच्छाचार	-----	१३७	१३७

✽ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नहीं किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांकः एवं दीप-क्रमांकः

[illegible]

❖ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नहीं किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

[नन्दी-आदि-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ] इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

✦ यह प्रत “नन्द्यादि-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ” नामसे सन १९२८ (विक्रम-संवत् १९८४) में ‘आगमोदय समिति’ नामक संस्था’ द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराजसाहेब ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने ‘नन्दी, अनुयोगद्वार, आवश्यक’ वगैरेह मूल तथा चूलिका-सूत्रों के सूत्र एवं उस पर पूर्वाचार्य रचित वृत्ति आदि का संपादन किया था । उन प्रतोंमें जो मूलसूत्र, गाथा, वृत्ति आदि थे उन सभी सूत्रादि के विषयों का अनुक्रम संक्षेप और विस्तार से लिखकर इस प्रतमें प्रकाशित करवाया है । अर्थात् ४+१ मूलसूत्र और नन्दी आदि चूलिका-सूत्रों के लघु और बृहत् विषयानुक्रम के रचयिता, संपादक और प्रकाशक श्री आगमोद्धारक आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब ही हैं ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीने इसी तरह अंगसूत्रों, उपांगसूत्रों और प्रकीर्णक सूत्रों के सूत्र-आदि के विषयों का अनुक्रम भी संक्षेप और विस्तार से लिखकर संपादन और प्रकाशन करवाया है ।

✦ हमारा ये प्रयास क्यों?✦ आगम की सेवा करने के हमें तो बहुत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तकों के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके हैं, किन्तु लोगों की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरूप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमें पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमें प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसे वर्ण का क्रम चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो सके ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने आगम संबंधी ५२ विषयों को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमें से ऐसी कई प्रतें मिलती हैं, जिसमें ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते हैं, उनमें से थोड़े विषयों का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमें भी प्राप्त हैं ।

✦ अभी तो ये jain_e_library.org का ‘इंटरनेट पब्लिकेशन’ है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगों तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर इसको मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है।

.... मुनि दीपरत्नसागर.

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म. सा.]

नन्दी-आदि सप्त-सूत्राणाम् लघु-विषयानुक्रमः

← पुनः संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["---"]																																																			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																																			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	सूत्रादीनां	नन्दादिसप्तसूत्राणां अकारादिक्रमः लघ्वी बृहती च अङ्गसूचा लघुबृहद्विषयानुक्रमौ च, तत्र सूत्रादीनां चिह्नावली ॥ <table><tr><td>सूत्रम् १</td><td>२ अनुयोगद्वाराणि { १५२</td><td>५ दशवैकालिकसू. { २१</td><td rowspan="5">एतैश्चिह्नैः सूत्रादीनि शास्त्रक्रमश्च ज्ञेयः, यथाऽकारादिक्रमे 'आभि- निबोधियमाणं' ३-१ एवमस्ति, तथा च तृतीयशास्त्रस्य श्रीमदाव- श्यकस्य निर्युक्तेरियं प्रथमा गाथेति, एवं तत्तत्सूत्रभाष्यादिषु ज्ञेयं । य- काराकारणकारनकारसंयोगपुरक- इत्यदीर्घादेशकादिलुप्तालुप्ततादि न भेदभागत्र ।</td></tr><tr><td>सूत्रगाथा १ *</td><td>१४२ *</td><td>५१५ *</td></tr><tr><td>निर्युक्तिः १</td><td></td><td>३७३</td></tr><tr><td>मूलभाष्यं १ X</td><td>५४</td><td>६३+</td></tr><tr><td>भाष्यं १±</td><td>२१*</td><td>६७१</td></tr><tr><td>ध्यानशतकम् । १</td><td>१७१९</td><td>३७+</td><td></td></tr><tr><td>सङ्ग्रहनिः +१</td><td>२५७+X</td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td>११०५</td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td>+७१</td><td></td><td></td></tr><tr><td>१ नन्दीसूत्रम् { ५१</td><td>३ आवश्यकसूत्रम् । { ८१२</td><td>७ उत्तराध्ययनानि । { ८८</td><td></td></tr><tr><td>३० *</td><td>३२२+</td><td>१६४०*</td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td>५६२</td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td>४५+</td><td></td></tr></table>		सूत्रम् १	२ अनुयोगद्वाराणि { १५२	५ दशवैकालिकसू. { २१	एतैश्चिह्नैः सूत्रादीनि शास्त्रक्रमश्च ज्ञेयः, यथाऽकारादिक्रमे 'आभि- निबोधियमाणं' ३-१ एवमस्ति, तथा च तृतीयशास्त्रस्य श्रीमदाव- श्यकस्य निर्युक्तेरियं प्रथमा गाथेति, एवं तत्तत्सूत्रभाष्यादिषु ज्ञेयं । य- काराकारणकारनकारसंयोगपुरक- इत्यदीर्घादेशकादिलुप्तालुप्ततादि न भेदभागत्र ।	सूत्रगाथा १ *	१४२ *	५१५ *	निर्युक्तिः १		३७३	मूलभाष्यं १ X	५४	६३+	भाष्यं १±	२१*	६७१	ध्यानशतकम् । १	१७१९	३७+		सङ्ग्रहनिः +१	२५७+X				११०५				+७१			१ नन्दीसूत्रम् { ५१	३ आवश्यकसूत्रम् । { ८१२	७ उत्तराध्ययनानि । { ८८		३० *	३२२+	१६४०*				५६२				४५+		चिह्नावली.
सूत्रम् १	२ अनुयोगद्वाराणि { १५२	५ दशवैकालिकसू. { २१	एतैश्चिह्नैः सूत्रादीनि शास्त्रक्रमश्च ज्ञेयः, यथाऽकारादिक्रमे 'आभि- निबोधियमाणं' ३-१ एवमस्ति, तथा च तृतीयशास्त्रस्य श्रीमदाव- श्यकस्य निर्युक्तेरियं प्रथमा गाथेति, एवं तत्तत्सूत्रभाष्यादिषु ज्ञेयं । य- काराकारणकारनकारसंयोगपुरक- इत्यदीर्घादेशकादिलुप्तालुप्ततादि न भेदभागत्र ।																																																	
सूत्रगाथा १ *	१४२ *	५१५ *																																																		
निर्युक्तिः १		३७३																																																		
मूलभाष्यं १ X	५४	६३+																																																		
भाष्यं १±	२१*	६७१																																																		
ध्यानशतकम् । १	१७१९	३७+																																																		
सङ्ग्रहनिः +१	२५७+X																																																			
	११०५																																																			
	+७१																																																			
१ नन्दीसूत्रम् { ५१	३ आवश्यकसूत्रम् । { ८१२	७ उत्तराध्ययनानि । { ८८																																																		
३० *	३२२+	१६४०*																																																		
		५६२																																																		
		४५+																																																		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["नन्दी + अनुयोग"]																																																										
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																																										
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नं. अ.आ. ओ. द. पि. उ. ॥ १२९ ॥	अथ नद्यादिसप्तसूत्र्या लघुर्विषयानुक्रमः । १ नन्दीसूत्रम्. <table><tr><th>विषयांकः</th><th>विषयः</th><th>गाथांकः</th><th>पत्रांकः</th></tr><tr><td>१</td><td>तीर्थकरगणधराद्यावलिका</td><td>४३*</td><td>५४</td></tr><tr><td>२</td><td>पर्वदः</td><td>४७*</td><td>६४</td></tr><tr><td>३</td><td>अवधिज्ञानम् सू. १६ ॥</td><td>५७*</td><td>९८</td></tr><tr><td>४</td><td>मनःपर्यवज्ञानम्</td><td>१८ ॥ ५८*</td><td>१११</td></tr><tr><td>५</td><td>केवलज्ञानम्</td><td>२३ ॥ ६०*</td><td>१३९</td></tr><tr><td>६</td><td>मतिज्ञानम्</td><td>३७ ॥ ८०*</td><td>१८४</td></tr><tr><td>७</td><td>श्रुतज्ञानम्</td><td>५८ ॥ ८५*</td><td>२४७</td></tr></table> २ अनुयोगद्वाराणि. <table><tr><td>१ आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः</td><td>५७॥५*</td><td>४३</td></tr><tr><td>२ उपक्रमाधिकारः</td><td>१४९॥ १२२*</td><td>२४८</td></tr><tr><td>१ आनुपूर्वी</td><td>१२०॥१६*</td><td>१०४</td></tr><tr><td>२ दशनामाधिकारः</td><td>१३०॥९२*</td><td>१५०</td></tr><tr><td>३ प्रमाणद्वाराधि.</td><td>१४६॥१२२*</td><td>२४१</td></tr><tr><td>३ निक्षेपाधिकारः</td><td>१५०॥१३२*</td><td>२५७</td></tr><tr><td>४ अनुगमाधिकारः</td><td>१५१॥१३५*</td><td>२६१</td></tr><tr><td>५ नयाधिकारः</td><td>१५२॥१४१*</td><td>२६७</td></tr></table>	विषयांकः	विषयः	गाथांकः	पत्रांकः	१	तीर्थकरगणधराद्यावलिका	४३*	५४	२	पर्वदः	४७*	६४	३	अवधिज्ञानम् सू. १६ ॥	५७*	९८	४	मनःपर्यवज्ञानम्	१८ ॥ ५८*	१११	५	केवलज्ञानम्	२३ ॥ ६०*	१३९	६	मतिज्ञानम्	३७ ॥ ८०*	१८४	७	श्रुतज्ञानम्	५८ ॥ ८५*	२४७	१ आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः	५७॥५*	४३	२ उपक्रमाधिकारः	१४९॥ १२२*	२४८	१ आनुपूर्वी	१२०॥१६*	१०४	२ दशनामाधिकारः	१३०॥९२*	१५०	३ प्रमाणद्वाराधि.	१४६॥१२२*	२४१	३ निक्षेपाधिकारः	१५०॥१३२*	२५७	४ अनुगमाधिकारः	१५१॥१३५*	२६१	५ नयाधिकारः	१५२॥१४१*	२६७	लघुः विष- यानुक्रमः ॥ १२९ ॥
विषयांकः	विषयः	गाथांकः	पत्रांकः																																																								
१	तीर्थकरगणधराद्यावलिका	४३*	५४																																																								
२	पर्वदः	४७*	६४																																																								
३	अवधिज्ञानम् सू. १६ ॥	५७*	९८																																																								
४	मनःपर्यवज्ञानम्	१८ ॥ ५८*	१११																																																								
५	केवलज्ञानम्	२३ ॥ ६०*	१३९																																																								
६	मतिज्ञानम्	३७ ॥ ८०*	१८४																																																								
७	श्रुतज्ञानम्	५८ ॥ ८५*	२४७																																																								
१ आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः	५७॥५*	४३																																																									
२ उपक्रमाधिकारः	१४९॥ १२२*	२४८																																																									
१ आनुपूर्वी	१२०॥१६*	१०४																																																									
२ दशनामाधिकारः	१३०॥९२*	१५०																																																									
३ प्रमाणद्वाराधि.	१४६॥१२२*	२४१																																																									
३ निक्षेपाधिकारः	१५०॥१३२*	२५७																																																									
४ अनुगमाधिकारः	१५१॥१३५*	२६१																																																									
५ नयाधिकारः	१५२॥१४१*	२६७																																																									

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["आवश्यक"]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नं. अ.आ. ओ. द. पि. उ. ॥ १२९ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)	
		३ श्रीआवश्यकसूत्रम् लि. मा. प. १ सामायिकाध्ययनम् पीठिका ७९ ५० प्रथमा वरवरिका २२० ३० १३६ द्वितीया वरवरिका ४६१ १११ १८८ उपसर्गाः ५२६ ११४ २२७	समवसरणं ५९० ११९ २३९ गणधरवादः ६५९ २५६ दशधासामाचारी ७२३ १२३ २७१ निह्ववक्तव्यता ७८७ १४८ ३२५ शेष उपोद्घातनिर्युक्तिः ८७९ १५१ ३७४ नमस्कारनिर्युक्तिः १०२४ ४५२ सामायिकनिर्युक्तिः सू. १-१०६६ १८९ ४९० २ चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनम् ७* १११३ २०५ ५१० ३ वन्दनाध्ययनम् सू. २-१२४२ ५५० ४ प्रतिक्रमणाध्ययनम् सू. २५॥९* १५२४ ७६३
		ध्यानशतकम् १०५ ६१ पारिष्ठापनिकानि १३७० २०६ ६४ संग्रहणी ७१ ७२ योगसंग्रहनिर्युक्तिः १४१७ २१६ ७२ अस्वाध्यायनिर्युक्तिः १५१४ २३१ ७५ ५ कायोत्सर्गाध्ययनम् सू. ३५ नि. १६५१ मा. २४१ ८० ६ प्रत्याख्यानाध्ययनम् सू. ५४॥२१* नि. १७१९ मा. २५७ ८६६	लघुः विष- यानुक्रमः ॥ १२९ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["ओघनिर्युक्ति, दशवैकालिक, पिंदनिर्युक्ति"]			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	४ ओघनिर्युक्तिः प्रतिलेखनादीनि द्वाराणि ३३० १९१ १२७ पिण्डद्वारं ६६६ ३१२ २०७ उपधिनिरूपणं ७६३ ३२२ २२२ अनायतनवर्जनं ७८५ २२४ प्रतिषेवणाद्वारम् ७८९ २२४ आलोचनाद्वारं ७९२ २२५ विशुद्धिद्वारम् ८१२ २२७		५ पिण्डैषणाध्ययनम् १ प्रथम उद्देशः १५९* २३६ ६१ १८० २ द्वितीय उद्देशः २०९* २४६ ६२ १९० ६ महाचारकथा (धर्मार्थकामाध्यय- नम्) २७७* २७० २०६ ७ वाक्यशुद्ध्याध्ययनम् ३३४* २९४ २२३ ८ आचारप्रणिध्यध्ययनम् ३९८* ३१० २३८ ९ विनयाध्ययनम् १ प्रथम उद्देशकः ४१५* ३२९ २४५ २ द्वितीय उद्देशकः ४३८* २५१ ३ तृतीय उद्देशकः ४५३* २५४ ४ चतुर्थ उद्देशकः सू.२०॥४६०* २५८ १० समिक्षाध्ययनम् ४८१* ३६० २६८ ११ रतिवाक्यचूडा सू.२१४९९* ३६९ २७७ १२ विविक्तचर्याचूडा ५१५* ३७३ ६३ २८४	
	५ दशवैकालिकं १ हुमपुष्पिकाध्ययनम् ५* १५३ ८२ २ श्रामण्यपूर्विकाध्ययनम् १६* १७९ ९९ ३ क्षुल्लिकाचारकथा ३१* २१७ ११८ ४ षड्जीवनिकाध्ययनम् सू. १५॥५९* नि. २३५ भा. ६० प. १६०			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	६ पिंदनिर्युक्तिः नि. भा. प. १ पिण्डनिरूपणम् ७२ १५ २८ २ उद्गमदोषाः ४०३ ३० ११९ ३ व्यस्यदनादोषाः ५१५ ३७ १४६ ४ घृष्टादोषाः ६२८ १७० ५ प्रासैषणादोषाः ६७१ १७८			
	-- X -- X -- X -- X --			

-- X -- X -- X -- X --

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ ["उत्तराध्ययन"]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नं. अ. आ. ओ. द. पि. उ. ॥ १३० ॥	७ अथोत्तराध्ययनानि १ ४८* विनवाध्ययनम् ६४ ६६ २ ९४* परीषदाध्ययनम् १सू. १४१ १३९ ३ ११४* चतुरङ्गीयाध्ययनम् १७८-२-१८८ ४ १३७* अस्मिन्कृताध्ययनम् २०७ २२७ ५ १५९* अक्षममरणाध्ययनम् २३५ २५४ ६ १७७* मुक्तनिर्गन्धी २४३-३०-२७० ७ २०७* औरभिकाध्ययनम् २४९ २८५ ८ २२७* क्रापिलीयाध्ययनम् २५१ २९७ ९ २८९* नमिप्रव्याध्ययनम् २७९ ३२० १० ३२६* दुष्पत्रकमध्ययनम् ३०९ ३४१ ११ ३५९* बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ३१७ ३५३ १२ ४०५* हरिकेशीयाध्ययनम् ३२७ ३७३ १३ ४४०* चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ३५७ ३९३ १४ ४९३* इषुकारीयाध्ययनम् ३७२ ४११ १५ ५०९* सभिक्षुकाध्ययनम् ३७९ ४२० १६ ५२६* ब्रह्मचर्यसमा १०॥ ३८५ ४३० १७ ५४७* पापश्रमणाध्ययनम् ३९० ४३६ १८ ६००* संयतीयाध्ययनम् ४०४ ४५० १९ ६९८* शृगापुत्रीयाध्ययनम् ४२१ ४६६ २० ७५८* महानिर्गन्धी ४२८-४५-४८१ २१ ७८२* समुद्रपालीयाध्ययनम् ४४२ ४८८ २२ ८३१* रथनेमीयाध्ययनम् ४५० ४९७ २३ ९२०* केशिगौतमीयाध्ययनम् ४५७ ५१२ २४ ९४७* प्रबचनमात्राध्ययनम् ४६३ ५२० २५ ९९१* यज्ञीयाध्ययनम् ४८२ ५३१ २६ १०४३* सामाचार्यध्ययनम् ४८९ ५४७ २७ १०६०* खलुङ्गीयाध्ययनम् ४२८ ५५४ २८ १०९६* मोक्षमार्गाध्ययनम् ५०५ ५६९ २९ ८८ सू. सम्यक्त्वपराक्रमा ५१३ ५९८ ३० ११३४* तपोमार्गाध्ययनम् ५१६ ६१० ३१ ११५५* चरणविध्यध्ययनम् ५२१ ६१८ ३२ १२६६* प्रमादस्थानाध्ययनम् ५२९ ६३९ ३३ १२९१* कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ५३६ ६४८ ३४ १३५२* लेइयाध्ययनम् ५४५ ६६२ ३५ १३७७* अनगारमार्गाध्ययनम् ५५१ ६६८ ३६ १६४०* जीवाजीववि ५६२ ७१३ इति उत्तराध्ययनानि <td>लघुः विष- यानुक्रमः </td>	लघुः विष- यानुक्रमः

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म. सा.]

नन्दी-आदि सप्त-सूत्राणाम्

बृहत्-विषयानुक्रमः

← पुनः संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्द्यादिसप्तसूत्र्या बृहद्विषयानुक्रमः । <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> नन्दीसूत्रबृहद्विषयानुक्रमः । ॥ तीर्थकरणधराद्यावलिका ॥ गाथादि पत्रं (१-२) जिनसद्वचनस्तुतिः १ १* भगवत्तीर्थकृत्स्तुतिः (जीव- सिद्धिः, शाब्दप्रामाण्यं, तस्या- नुभूतत्वनिरासः, भवविमोच- नखण्डनम्) २ २* वर्द्धमानस्वाभिनमस्कारः १५ (वेदपौरोषेयत्वनिरासः) ३* श्रीमहावीरस्वातिशयद्वारेण स्तुतिः । (सर्पशवादः, रागादेरत्यन्त- २३ क्षयः, नैरात्म्यनिरासः, सा- </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ह्यसुक्तिनिरासः, भेदाभेद- सिद्धिः) ४-१७* श्रीसहस्रस्य नगर-चक्र-रथ- पद्म-चन्द्र-सूर्य-समुद्र-मेरुभि- रुपमा ४२ १८-१९* तीर्थकरावलिका ४७ २०-२१* गणधरावलिका ४८ २२* शासनस्तुतिः ४८ २३-४२* स्वविद्यावलिका ४८ ४३* कृतश्रुतममस्कारः ज्ञानपर्वत्- प्ररूपणां प्रतिजानीते ५४ ४४* शैलघनकुटादिभिर्योग्यायो- ग्यपर्वत् । (दृष्टान्ताः) ५४ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ४५-४७* विज्ञाविज्ञदुर्विषयपर्वदः ६३-६४ सु.१ ज्ञानभेदाः (५) (भेदपञ्च- कतत्कमसिद्धिः) ६५ २ प्रमाणद्वैविध्यम् (मतिश्रुतयोः पारोक्ष्यं) ७१ ३ इन्द्रियनोऽन्द्रियप्रत्यक्षे ७५ ४ इन्द्रियप्रत्यक्षाणि (५) ७६ ५ नोऽन्द्रियप्रत्यक्षाणि (३) ७७ ६ अवधिभेदौ ७६ ७ भवप्रत्ययौ द्वौ ७६ ८ क्षायोपशमिकौ द्वौ (क्षयोप- शमसिद्धिः) ७६ ९ गुणवतोऽवधिभेदषट्कम् ८१ </td></tr> </table>	नन्दीसूत्रबृहद्विषयानुक्रमः । ॥ तीर्थकरणधराद्यावलिका ॥ गाथादि पत्रं (१-२) जिनसद्वचनस्तुतिः १ १* भगवत्तीर्थकृत्स्तुतिः (जीव- सिद्धिः, शाब्दप्रामाण्यं, तस्या- नुभूतत्वनिरासः, भवविमोच- नखण्डनम्) २ २* वर्द्धमानस्वाभिनमस्कारः १५ (वेदपौरोषेयत्वनिरासः) ३* श्रीमहावीरस्वातिशयद्वारेण स्तुतिः । (सर्पशवादः, रागादेरत्यन्त- २३ क्षयः, नैरात्म्यनिरासः, सा-	ह्यसुक्तिनिरासः, भेदाभेद- सिद्धिः) ४-१७* श्रीसहस्रस्य नगर-चक्र-रथ- पद्म-चन्द्र-सूर्य-समुद्र-मेरुभि- रुपमा ४२ १८-१९* तीर्थकरावलिका ४७ २०-२१* गणधरावलिका ४८ २२* शासनस्तुतिः ४८ २३-४२* स्वविद्यावलिका ४८ ४३* कृतश्रुतममस्कारः ज्ञानपर्वत्- प्ररूपणां प्रतिजानीते ५४ ४४* शैलघनकुटादिभिर्योग्यायो- ग्यपर्वत् । (दृष्टान्ताः) ५४	४५-४७* विज्ञाविज्ञदुर्विषयपर्वदः ६३-६४ सु.१ ज्ञानभेदाः (५) (भेदपञ्च- कतत्कमसिद्धिः) ६५ २ प्रमाणद्वैविध्यम् (मतिश्रुतयोः पारोक्ष्यं) ७१ ३ इन्द्रियनोऽन्द्रियप्रत्यक्षे ७५ ४ इन्द्रियप्रत्यक्षाणि (५) ७६ ५ नोऽन्द्रियप्रत्यक्षाणि (३) ७७ ६ अवधिभेदौ ७६ ७ भवप्रत्ययौ द्वौ ७६ ८ क्षायोपशमिकौ द्वौ (क्षयोप- शमसिद्धिः) ७६ ९ गुणवतोऽवधिभेदषट्कम् ८१
नन्दीसूत्रबृहद्विषयानुक्रमः । ॥ तीर्थकरणधराद्यावलिका ॥ गाथादि पत्रं (१-२) जिनसद्वचनस्तुतिः १ १* भगवत्तीर्थकृत्स्तुतिः (जीव- सिद्धिः, शाब्दप्रामाण्यं, तस्या- नुभूतत्वनिरासः, भवविमोच- नखण्डनम्) २ २* वर्द्धमानस्वाभिनमस्कारः १५ (वेदपौरोषेयत्वनिरासः) ३* श्रीमहावीरस्वातिशयद्वारेण स्तुतिः । (सर्पशवादः, रागादेरत्यन्त- २३ क्षयः, नैरात्म्यनिरासः, सा-	ह्यसुक्तिनिरासः, भेदाभेद- सिद्धिः) ४-१७* श्रीसहस्रस्य नगर-चक्र-रथ- पद्म-चन्द्र-सूर्य-समुद्र-मेरुभि- रुपमा ४२ १८-१९* तीर्थकरावलिका ४७ २०-२१* गणधरावलिका ४८ २२* शासनस्तुतिः ४८ २३-४२* स्वविद्यावलिका ४८ ४३* कृतश्रुतममस्कारः ज्ञानपर्वत्- प्ररूपणां प्रतिजानीते ५४ ४४* शैलघनकुटादिभिर्योग्यायो- ग्यपर्वत् । (दृष्टान्ताः) ५४	४५-४७* विज्ञाविज्ञदुर्विषयपर्वदः ६३-६४ सु.१ ज्ञानभेदाः (५) (भेदपञ्च- कतत्कमसिद्धिः) ६५ २ प्रमाणद्वैविध्यम् (मतिश्रुतयोः पारोक्ष्यं) ७१ ३ इन्द्रियनोऽन्द्रियप्रत्यक्षे ७५ ४ इन्द्रियप्रत्यक्षाणि (५) ७६ ५ नोऽन्द्रियप्रत्यक्षाणि (३) ७७ ६ अवधिभेदौ ७६ ७ भवप्रत्ययौ द्वौ ७६ ८ क्षायोपशमिकौ द्वौ (क्षयोप- शमसिद्धिः) ७६ ९ गुणवतोऽवधिभेदषट्कम् ८१		
	[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दीसूत्रे ॥ १३१ ॥	१० आनुगासुकेऽन्तगतमध्यगतौ (३) (नियतानियतावधौ) ८१ ११ अनानुगासुकम् ८९ १२॥४८-५५*वर्द्धमानावधिः, जघ- न्योत्कृष्टौ, क्षेत्रकालप्रतिबन्धः, कालाद्यैः सूक्ष्मता च ९० १३-१५-हीयमानप्रतिपात्य- प्रतिपात्यवधयः ९७ १६ द्रव्यक्षेत्रकालभावैरवधिज्ञानम् ९७ ५६-५७* भवप्रत्ययगुणप्रत्ययद्रव्यक्षेत्र- कालबाह्याभ्यन्तरावधिसङ्ग्रहः ९८ १७ मनःपर्यवज्ञानम् (अन्तरद्वी- पाः, पर्याप्तयः, चारणाः) १०० १८ मनःपर्यवज्ञाने तद्भेदतज्ज्ञेया- धिकारः । (क्षुल्लकप्रतरौ) १०८	१९ केवलज्ञाने सयोग्ययोगिकेवलम् ११२ २० द्विभेदसिद्धकेवलज्ञानम् । (स- त्पदादिभिः (८) क्षेत्रका- लादीनां (१५) प्ररूपणा) ११३ २१ अनन्तरसिद्धभेदाः (१५) (स्वयंबुद्धप्रत्येकबुद्धविशेषः, क्षीमुक्तिसिद्धिः) १३० २२॥५९* परम्परसिद्धानां केवलज्ञानं द्रव्याद्यैश्च (युगपदितरैको- पयोगचर्चा) १३३ २३॥६०* तीर्थकृद्भवसो द्रव्यश्रुतता १३९ २४ मतिश्रुतयोर्भिन्नता १४० २५ मतिश्रुतयोरसम्यगितरते १४३ २६ मतिज्ञानेऽश्रुतनिश्चितभेदा औ- ६१-६५ त्पत्तिक्याद्याः (४) औ-	* त्पत्तिक्या लक्षणं, तद्दृष्टा- न्ताश्च (२६) १४४ ६६-६८ वैतयिक्या लक्षणं तद्दृष्टा- न्ताश्च (१५) १५९ ६९-७० कर्मजाया लक्षणं तद्दृष्टा- न्ताश्च (१२) १६४ ७१-७४ पारिणामिक्या लक्षणं तद्- दृष्टान्ताश्च (३१) १६५ २७ श्रुतनिश्चितभेदाः (४) १६८ २८ अवग्रहभेदौ १६८ २९ व्यञ्जनावग्रहाः (४) (न- यनमनसोरप्राप्यकारिता, श्रुतेः प्राप्यकारिता, शब्दस्य द्रव्यता) १६९ ३० अर्थावग्रहाः । (६) १७३ ३१ अवग्रहैकार्थिकानि (५) १७४	बृहद्विष- यानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ			
	[आगम-४४] चूलिका-१ 'नन्दीसूत्र'			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	३२ ईहाभेदास्तदेकार्थिकानि च (५) १७५	४२ मिथ्याश्रुतं, (सम्यग्मिथ्याश्रुतत्वे हेतुश्चारो द्रव्याद्यैः (४) पर्य-वाक्षरमक्षरानन्तभागः, काल-चक्रस्वरूपं च) १९४	५७॥८२-८४* दृष्टिवादः सप्रभेदः परि० २३५	
	३३ षड्विधोऽपायस्तदेकार्थिकानि च (५) १७६		७-८६ सूत्र २२-८८ पूर्वगत १ व. २० चू. ४, २ व. १४ चू. १२, ३ व. ८, चू. ८, ४ व. १८ चू. १०, ५ व. १२, ६-२, ७-१६, ८-३०, ९-२०, १०-१५, ११-१२, १२-१३, १३-३०, १४-२५, अनुयोग २ चूलिका ४ भेदाः । (सिद्धपञ्चाशिका)	
दीप क्रमांक के लिए देखीए	३४ षड्विधा धारणा तदेकार्थिकानि च (६) १७६	४३ साद्यवसानेतरश्रुताधिकारः १९५		
'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	३५ अवग्रहादेः कालः १७७	४४ गमिकेतरौ, आवश्यकोत्कालिककालिकप्रकीर्णकभेदाः २०२		
	३६ व्यञ्जनावग्रहे प्रतिबोधकमलकदृष्टान्तौ १७८	४५-५६ अङ्गप्रविष्टभेदाः २०९	५८ } द्वादशाङ्गीविराधनाऽऽराधना- ८५ * } फलं नित्यत्वविषयश्च २४७	
	३७ द्रव्यादेराभिनिबोधकभेदाः, ७५-८० कालः, स्पष्टत्वादि, मिश्रश- * न्दादि, तदेकार्थिकानि च १८४		५९ सङ्ग्रहगाथा (श्रुतभेदाः (१४) ८६-९० बुद्धिगुणा (८) ऽनुयोगाः * (७) (३) (अनुज्ञानन्दिर्यो- गनन्दिश्च) २४९	
	३८ श्रुतज्ञानभेदाः १८७			
	३९॥८१* अक्षरानक्षरश्रुते १८७			
	४० सञ्ज्ञसञ्ज्ञश्रुते (कालिक-हेतुदृष्टिवादसञ्ज्ञाः) १८९			
	४१ सम्यक्श्रुतम् १९२	४२ मिथ्याश्रुतं, (सम्यग्मिथ्याश्रुतत्वे हेतुश्चारो द्रव्याद्यैः (४) पर्य-वाक्षरमक्षरानन्तभागः, काल-चक्रस्वरूपं च) १९४		
		४३ साद्यवसानेतरश्रुताधिकारः १९५		
		४४ गमिकेतरौ, आवश्यकोत्कालिककालिकप्रकीर्णकभेदाः २०२		
		४५-५६ अङ्गप्रविष्टभेदाः २०९		
		आचाराङ्ग १ सूत्रकृताङ्ग २- (३६३ पाखण्डाधिकारः)- स्थानाङ्ग ३ समवायाङ्ग ४- व्याख्याप्रज्ञप्ति ५ ज्ञाताधर्मो- ६ उपासकदशाङ्गा ७ ऽन्त- कृद्दशाङ्गा ८ ऽनुत्तरौपपातिक- ९ प्रभव्याकरण १० विपा- कश्रुता ११ नामधिकाराः २३४		
			इति नन्दीविषयाः	

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	अनुयोग० ॥ १३२ ॥	अनुयोगे वृद्धविषयानुक्रमः ॥		वृद्धविष- यानुक्रमः. ॥ १३२ ॥
	श्रीवीरजिनगौतमाधिर्माचार्य- श्रुतदेवत्तानमस्काराः १ आवश्यकश्रुतस्कन्धनिक्षेपाः १ ज्ञानपंचकं १ २ मत्यादीनां नोद्देशसमुद्देशानु- ज्ञाः किन्तु श्रुतस्यैव, अनुयो- गश्च, (उद्देशादिविधिः) ३ ३-४ अज्ञानज्जयोरुद्देशादि कालि- कोत्कालिकयोरुद्देशादि ६ ५ आवश्यकतदतिरिक्तयोरुद्दे- शादि । (सूत्रिगुणाः निक्षे- पैकार्थादि व्याख्याषर्षदुद्देशाः) ७	६ आवश्यककाङ्क्षतत्स्कंधाध्ययनो- द्देशप्रश्नः ९ १० आवश्यकश्रुतस्कंधाध्ययननिक्षेप- प्रतिज्ञा निक्षेपचतुष्कनियमः १० ८ नामस्थापनाद्रव्यभावावश्य- कानि (नामलक्षणं) १० ९ नामावश्यकं जीवादेर्नाम ११ १० काष्ठकर्मादौ सद्भावासद्भाव- स्थापने (स्थापनालक्षणम्) १२ ११ नामस्थापनयोर्भिन्नत्वम् १३ १२ आगमनोआगमाभ्यां द्रव्या- वश्यकम् (द्रव्यलक्षणम्) १४	१३ शिक्षितादिगुणं द्रव्यावश्यकं (विद्याधरदृष्टान्तः) १५ १४ द्रव्यावश्यकैकानेकत्वे नयाः १७ १५ नोआगमतो द्रव्यावश्यकत्रै- विध्यम् १९ १६ शय्यासंस्तारकनैपेथिकीसिद्ध- शिक्षातलगतं ह्यशरीरमाद्यम् । १९ १७ पण्यत्वावश्यकधारी द्वितीयं २१ १८ लौकिककुप्रावचनिकलोको- त्तरिकाणि तद्व्यतिरिक्ते २२ १९ राजादीनां अङ्गधावनावि राज- देवकुलादिप्रवेक्ष्य लौकिके २३	
	[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"> <tr> <td> २० चरकचीरिकादीनामिन्द्रादेरुपलेपनादि कुप्रावचनिके २५ २१ षट्कायनिरनुकंपादेरावश्यकं लोकोत्तरिकं (असंविग्रहप्रान्तः) २६ २२ आगमनोआगमाभ्यां भावावश्यकम् (भावलक्षणम्) २८ २३ आगमतो भावावश्यकं २८ २४ नोआगमतो भावे लौकिकादि त्रिधा २५ लौकिके भारतरामायणवाचना २६ चरकचीरिकादिः इत्याहंयादि कुप्रावचनिके २९ २७-२८* श्रमणादीनां तंश्चित्तादित्वेन लोकोत्तरिकं भावावश्यककार्थिकानि (८) च ३१ </td><td> २८-३१* अहर्निशान्तयोरवश्यकर्तव्यता ३१ २९-३६ श्रुतनिक्षेपचतुष्कं; नामश्रुतं, स्थापनाश्रुतं, आगमनोआगमद्रव्यश्रुतभेदौ, ज्ञशरीरद्रव्यश्रुतं अव्यशरीरद्रव्यश्रुतं च ३१-३३ ३७ पत्रकादि अंजनादि च नोआगमे व्यतिरिक्तं द्रव्यश्रुतं ३४ ३८ आगमनोआगमाभ्यां भावश्रुतम् ३५ ३९ आगमभावश्रुतं ३६ ४० नोआगमभावश्रुतभेदौ ४१ भारतरामायणमीमांसुस्वरूपकौटिल्यादि लौकिके ३६ ४२ अक्षरांगादि लोकोत्तरे ३७ ४३-४४* श्रुतकार्थिकानि (१०) ३८ </td><td> ४४-४५ स्कन्धनिक्षेपाः (४) नामस्थापना-ऽतिदेशश्च ३९ ४६ द्रव्ये आगमनोआगमौ व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ३९ ४७-४९ सचित्ताचित्तमिश्रस्कन्धनिरूपणम् ४० ५०-५३ अथवा कृत्स्नाकृत्स्नानेकद्रव्यस्कन्धाः सत्स्वरूपं च ४१ ५४-५७ भावे आगमनोआगमौ, आगमे ज्ञ उपयुक्तं, नोआगमे आवश्यकश्रुत-स्कन्धः ४२ ५७*५ स्कन्धैकार्थिकानि ४३ ५८ आवश्यके षड् अर्थोपकाराः ४३ ६१ विण्ढार्थोपसंहारः प्रत्येकाध्ययन-कथनप्रतिष्ठा च । ४४ </td></tr> </table>	२० चरकचीरिकादीनामिन्द्रादेरुपलेपनादि कुप्रावचनिके २५ २१ षट्कायनिरनुकंपादेरावश्यकं लोकोत्तरिकं (असंविग्रहप्रान्तः) २६ २२ आगमनोआगमाभ्यां भावावश्यकम् (भावलक्षणम्) २८ २३ आगमतो भावावश्यकं २८ २४ नोआगमतो भावे लौकिकादि त्रिधा २५ लौकिके भारतरामायणवाचना २६ चरकचीरिकादिः इत्याहंयादि कुप्रावचनिके २९ २७-२८* श्रमणादीनां तंश्चित्तादित्वेन लोकोत्तरिकं भावावश्यककार्थिकानि (८) च ३१	२८-३१* अहर्निशान्तयोरवश्यकर्तव्यता ३१ २९-३६ श्रुतनिक्षेपचतुष्कं; नामश्रुतं, स्थापनाश्रुतं, आगमनोआगमद्रव्यश्रुतभेदौ, ज्ञशरीरद्रव्यश्रुतं अव्यशरीरद्रव्यश्रुतं च ३१-३३ ३७ पत्रकादि अंजनादि च नोआगमे व्यतिरिक्तं द्रव्यश्रुतं ३४ ३८ आगमनोआगमाभ्यां भावश्रुतम् ३५ ३९ आगमभावश्रुतं ३६ ४० नोआगमभावश्रुतभेदौ ४१ भारतरामायणमीमांसुस्वरूपकौटिल्यादि लौकिके ३६ ४२ अक्षरांगादि लोकोत्तरे ३७ ४३-४४* श्रुतकार्थिकानि (१०) ३८	४४-४५ स्कन्धनिक्षेपाः (४) नामस्थापना-ऽतिदेशश्च ३९ ४६ द्रव्ये आगमनोआगमौ व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ३९ ४७-४९ सचित्ताचित्तमिश्रस्कन्धनिरूपणम् ४० ५०-५३ अथवा कृत्स्नाकृत्स्नानेकद्रव्यस्कन्धाः सत्स्वरूपं च ४१ ५४-५७ भावे आगमनोआगमौ, आगमे ज्ञ उपयुक्तं, नोआगमे आवश्यकश्रुत-स्कन्धः ४२ ५७*५ स्कन्धैकार्थिकानि ४३ ५८ आवश्यके षड् अर्थोपकाराः ४३ ६१ विण्ढार्थोपसंहारः प्रत्येकाध्ययन-कथनप्रतिष्ठा च । ४४
२० चरकचीरिकादीनामिन्द्रादेरुपलेपनादि कुप्रावचनिके २५ २१ षट्कायनिरनुकंपादेरावश्यकं लोकोत्तरिकं (असंविग्रहप्रान्तः) २६ २२ आगमनोआगमाभ्यां भावावश्यकम् (भावलक्षणम्) २८ २३ आगमतो भावावश्यकं २८ २४ नोआगमतो भावे लौकिकादि त्रिधा २५ लौकिके भारतरामायणवाचना २६ चरकचीरिकादिः इत्याहंयादि कुप्रावचनिके २९ २७-२८* श्रमणादीनां तंश्चित्तादित्वेन लोकोत्तरिकं भावावश्यककार्थिकानि (८) च ३१	२८-३१* अहर्निशान्तयोरवश्यकर्तव्यता ३१ २९-३६ श्रुतनिक्षेपचतुष्कं; नामश्रुतं, स्थापनाश्रुतं, आगमनोआगमद्रव्यश्रुतभेदौ, ज्ञशरीरद्रव्यश्रुतं अव्यशरीरद्रव्यश्रुतं च ३१-३३ ३७ पत्रकादि अंजनादि च नोआगमे व्यतिरिक्तं द्रव्यश्रुतं ३४ ३८ आगमनोआगमाभ्यां भावश्रुतम् ३५ ३९ आगमभावश्रुतं ३६ ४० नोआगमभावश्रुतभेदौ ४१ भारतरामायणमीमांसुस्वरूपकौटिल्यादि लौकिके ३६ ४२ अक्षरांगादि लोकोत्तरे ३७ ४३-४४* श्रुतकार्थिकानि (१०) ३८	४४-४५ स्कन्धनिक्षेपाः (४) नामस्थापना-ऽतिदेशश्च ३९ ४६ द्रव्ये आगमनोआगमौ व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ३९ ४७-४९ सचित्ताचित्तमिश्रस्कन्धनिरूपणम् ४० ५०-५३ अथवा कृत्स्नाकृत्स्नानेकद्रव्यस्कन्धाः सत्स्वरूपं च ४१ ५४-५७ भावे आगमनोआगमौ, आगमे ज्ञ उपयुक्तं, नोआगमे आवश्यकश्रुत-स्कन्धः ४२ ५७*५ स्कन्धैकार्थिकानि ४३ ५८ आवश्यके षड् अर्थोपकाराः ४३ ६१ विण्ढार्थोपसंहारः प्रत्येकाध्ययन-कथनप्रतिष्ठा च । ४४		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ									
	[आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'									
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)									
प्रत सूत्रांक यहाँ देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	अनुयोग० ॥ १३३ ॥									
	५९	अध्ययननामानि अनुयोगनामानि च अथ उपक्रमाधिकारः	७०	प्रशस्ताप्रशस्तौ, अप्रशस्ते ब्राह्मण्यादीनां, प्रशस्ते गुर्वोदीनां (ब्राह्मणी-गणिकामालक्याः) ४९	७६	षट्विंशतिभङ्गकीर्त्तनानि ५६	वृद्धविषयानुक्रमः ॥ १३३ ॥			
६०	लौकिकोपक्रमाः (६) द्रव्ये व्यतिरिक्ते सचित्ताचित्तमिश्राः ४५	७०	शास्त्रीयोपक्रमे आनुपूर्वीनामप्रमाण-वक्तव्यतार्थोपकारसमावताराः ५१	७७	भङ्गकीर्त्तनप्रयोजनम् ५७					
६१	सचित्ते द्विपदचतुष्पदापदेषु परिकर्मणि नाशे च ४६	७१	नामाद्यानुपूर्व्यः (१०), आगमद्रव्यानुपूर्वी नोआगमद्रव्यानुपूर्वी, व्यतिरिक्ते औपनिधिक्यनौपनिधिकी च नैगमव्यवहारयोः, संग्रहस्य चान्या ५२	७८	भङ्गदर्शनम् (२६) ५८					
६२	नटादिमागधान्तानां द्विपदः			७९	आनुपूर्वीद्रव्यसमवतारः ५९					
६३	अश्वादीनां चतुष्पदः			८०*	अनुगमे सत्पदप्ररूपणाद्याः (९) ५९					
६४	आम्नादीनामपदः			८१-८९	सत्पदप्ररूपणा, द्रव्यप्रमाणं क्षेत्रं स्पर्शना कालः अंतरं भागो भावः					
६५	खन्धादीनामचित्तः				द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्पबहुत्वम् ६९					
६६	स्थासकादियुक्ताश्वादेर्मिश्रः ४७	७३	आद्ययोः अर्थपदप्ररूपणाभङ्गकथनभङ्गदर्शनसमवतारानुगमाः ५३	९०	संग्रहानौपनिधिक्या अर्थपदप्ररूपणाद्याः (५)					
६७	हलकुलिकादिः क्षेत्रस्योपक्रमः, नालिकादिभिः कालस्य ४८	७४	अर्थपदप्ररूपणा ५४	९१	अर्थपदप्ररूपणा ७०					
६९	भावे आगमनोआगमौ, नोआगमे	७५	प्ररूपणाप्रयोजनं ५५	९२	तत्प्रयोजनं भङ्गकीर्त्तनं तत्प्रयोजनं च					
				९३-९४	भङ्गदर्शनं समवतारस्य ७१					
				९५, ९६*	सत्पदप्ररूपणादीनि अष्टौ ७२					

वृद्धविष-
यानुक्रमः

॥ १३३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ९६ औपनिधिकयां त्रयम् ७३ ९७ पूर्वानुपूर्वीपश्चानुपूर्व्यानुपूर्व्यः ७४ ९८ (षड्व्यसिद्धिः) पुद्गलास्तिकाये पूर्वानुपूर्व्याद्याः ७७ ९९- क्षेत्रानुपूर्वीभेदौ नैगमव्यवहारयोः १०० संग्रहस्य च ७८ १०१, १०* नैगमव्यवहारयोरनौपनिधिक्या- मर्थप्ररूपणताद्याः (५) अर्थप्ररूपणा भङ्गदर्शनं समवतारः, अनुगमे स- त्पदाद्याः (९) ८५ १०२-११* संग्रहेणानौपनिधिकीक्षेत्रानुपू- र्व्यामर्थपदप्ररूपणताद्याः (५) ८७ १०३ औपनिधिकीक्षेत्रानुपूर्व्यः (३) </td> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> अधोलोके रत्नप्रभाद्याः (८)तिर्यग्लोके जम्बूद्वीपाद्याः, १२-१४* ऊर्ध्वलोके सौधर्माद्याः(१५)९२ १०४-१११ कालानुपूर्व्यौ, नैगमव्यवहारयो- रनौपनिधिकी, अर्थपदप्ररूपणताद्याः, अर्थपदप्ररूपणता भङ्गकीर्त्तनं भङ्गद- र्शनं समवतारोऽनुगमः (अर्थपदप्र- रूपणताद्याः ९) ९७ ११२-११३ सङ्गहेऽनौपनिधिकी अर्थपदप्र- रूपणताद्याः (५) ११४ औपनिधिकी कालानुपूर्व्यां समयादिः सर्वाद्वान्तः ९९ ११५ उत्कीर्तनानुपूर्व्या वृषभाद्याः(२४)१०० ११६ गणनानुपूर्व्या दशकोटिशतान्ताः १०१ </td> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ११७-११८, १६* स्थानानुपूर्वी, सामाचार्या- नुपूर्वी इच्छामिच्छाद्याः (१०) १०२ ११९ भावानुपूर्व्या औदयिकाद्याः(६)१०४ १२० एकादिदशान्तनामोपदेशः ॥ १० नामाधिकारः ॥ १२१, १७* एकनाम १०५ १२२ एकानेकाक्षरनाम्नी जीवाजीवनाम्नी सामान्यविशेषनाम्नी (समेदनारक- तिर्यङ्मनुष्यदेवाः) १०९ १२३ द्रव्य (६) गुण (२६) पर्यायना- १८-२३* मानि, लिङ्गभेदेन वा अन्या- क्षरोद्बोधितानि १२४ आगमलोपप्रकृतिविकारैश्चतुर्नाम ११२ </td> </tr> </table>			९६ औपनिधिकयां त्रयम् ७३ ९७ पूर्वानुपूर्वीपश्चानुपूर्व्यानुपूर्व्यः ७४ ९८ (षड्व्यसिद्धिः) पुद्गलास्तिकाये पूर्वानुपूर्व्याद्याः ७७ ९९- क्षेत्रानुपूर्वीभेदौ नैगमव्यवहारयोः १०० संग्रहस्य च ७८ १०१, १०* नैगमव्यवहारयोरनौपनिधिक्या- मर्थप्ररूपणताद्याः (५) अर्थप्ररूपणा भङ्गदर्शनं समवतारः, अनुगमे स- त्पदाद्याः (९) ८५ १०२-११* संग्रहेणानौपनिधिकीक्षेत्रानुपू- र्व्यामर्थपदप्ररूपणताद्याः (५) ८७ १०३ औपनिधिकीक्षेत्रानुपूर्व्यः (३)	अधोलोके रत्नप्रभाद्याः (८)तिर्यग्लोके जम्बूद्वीपाद्याः, १२-१४* ऊर्ध्वलोके सौधर्माद्याः(१५)९२ १०४-१११ कालानुपूर्व्यौ, नैगमव्यवहारयो- रनौपनिधिकी, अर्थपदप्ररूपणताद्याः, अर्थपदप्ररूपणता भङ्गकीर्त्तनं भङ्गद- र्शनं समवतारोऽनुगमः (अर्थपदप्र- रूपणताद्याः ९) ९७ ११२-११३ सङ्गहेऽनौपनिधिकी अर्थपदप्र- रूपणताद्याः (५) ११४ औपनिधिकी कालानुपूर्व्यां समयादिः सर्वाद्वान्तः ९९ ११५ उत्कीर्तनानुपूर्व्या वृषभाद्याः(२४)१०० ११६ गणनानुपूर्व्या दशकोटिशतान्ताः १०१	११७-११८, १६* स्थानानुपूर्वी, सामाचार्या- नुपूर्वी इच्छामिच्छाद्याः (१०) १०२ ११९ भावानुपूर्व्या औदयिकाद्याः(६)१०४ १२० एकादिदशान्तनामोपदेशः ॥ १० नामाधिकारः ॥ १२१, १७* एकनाम १०५ १२२ एकानेकाक्षरनाम्नी जीवाजीवनाम्नी सामान्यविशेषनाम्नी (समेदनारक- तिर्यङ्मनुष्यदेवाः) १०९ १२३ द्रव्य (६) गुण (२६) पर्यायना- १८-२३* मानि, लिङ्गभेदेन वा अन्या- क्षरोद्बोधितानि १२४ आगमलोपप्रकृतिविकारैश्चतुर्नाम ११२
९६ औपनिधिकयां त्रयम् ७३ ९७ पूर्वानुपूर्वीपश्चानुपूर्व्यानुपूर्व्यः ७४ ९८ (षड्व्यसिद्धिः) पुद्गलास्तिकाये पूर्वानुपूर्व्याद्याः ७७ ९९- क्षेत्रानुपूर्वीभेदौ नैगमव्यवहारयोः १०० संग्रहस्य च ७८ १०१, १०* नैगमव्यवहारयोरनौपनिधिक्या- मर्थप्ररूपणताद्याः (५) अर्थप्ररूपणा भङ्गदर्शनं समवतारः, अनुगमे स- त्पदाद्याः (९) ८५ १०२-११* संग्रहेणानौपनिधिकीक्षेत्रानुपू- र्व्यामर्थपदप्ररूपणताद्याः (५) ८७ १०३ औपनिधिकीक्षेत्रानुपूर्व्यः (३)	अधोलोके रत्नप्रभाद्याः (८)तिर्यग्लोके जम्बूद्वीपाद्याः, १२-१४* ऊर्ध्वलोके सौधर्माद्याः(१५)९२ १०४-१११ कालानुपूर्व्यौ, नैगमव्यवहारयो- रनौपनिधिकी, अर्थपदप्ररूपणताद्याः, अर्थपदप्ररूपणता भङ्गकीर्त्तनं भङ्गद- र्शनं समवतारोऽनुगमः (अर्थपदप्र- रूपणताद्याः ९) ९७ ११२-११३ सङ्गहेऽनौपनिधिकी अर्थपदप्र- रूपणताद्याः (५) ११४ औपनिधिकी कालानुपूर्व्यां समयादिः सर्वाद्वान्तः ९९ ११५ उत्कीर्तनानुपूर्व्या वृषभाद्याः(२४)१०० ११६ गणनानुपूर्व्या दशकोटिशतान्ताः १०१	११७-११८, १६* स्थानानुपूर्वी, सामाचार्या- नुपूर्वी इच्छामिच्छाद्याः (१०) १०२ ११९ भावानुपूर्व्या औदयिकाद्याः(६)१०४ १२० एकादिदशान्तनामोपदेशः ॥ १० नामाधिकारः ॥ १२१, १७* एकनाम १०५ १२२ एकानेकाक्षरनाम्नी जीवाजीवनाम्नी सामान्यविशेषनाम्नी (समेदनारक- तिर्यङ्मनुष्यदेवाः) १०९ १२३ द्रव्य (६) गुण (२६) पर्यायना- १८-२३* मानि, लिङ्गभेदेन वा अन्या- क्षरोद्बोधितानि १२४ आगमलोपप्रकृतिविकारैश्चतुर्नाम ११२				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> अनुयोग० ॥ १३४ ॥ </td> <td style="width: 45%; vertical-align: top;"> १२५ नामिकनैपातिकाऽऽख्यातिकौपसर्गिक- मिश्रभेदाः पञ्चनामनि ११३ १२६ षण्णाम्नि औदयिकः २४* जीवा (३४) जीवो (५२०) द्य- निष्पन्नौ, औपाशमिक उपशमनि- ष्पन्नश्च (११) क्षायिकः क्षयनि- ष्पन्नश्च (४६) क्षयोपशमः (४) क्षयोपशमनिष्पन्नश्च (५१) पारिणा- मिकः साद्य (जीर्णसुरादीषत्प्राग्भा- रान्तः) नादिकौ (धर्मास्तिकायादि १०) सान्निपातिकः (३ सं. ३ सं. ४ सं. ५ सं.) १२७ १२७, २५-५६* सप्तनामनि षड्जायाः का- रणलक्षणग्राममूर्च्छनास्थानयोनिम- </td> <td style="width: 45%; vertical-align: top;"> योच्छासाकारगुणप्रतभणित्तिभिः १३२ १२८, ५७-६२* अष्टनामनि विभक्तयः (निर्देशाद्याः) १३३ १२९, ६३-८२* नवनामनि वीराद्या रसाः संस्वरूपदृष्टान्ताः १३९ १३०, ८३-९२* दशनाम गौणागौणादान- पदप्रतिपक्षपदप्रधानताऽनादिसिद्धा- न्तनामावयवसंबन्धौ (४) प्रमाणैः (४) (स्थापनाप्रमाणे नक्षत्र देवतापाषण्डगणजीविकाहेत्वाभिप्रा- यिकानि (७) भावप्रमाणे सामासि- कतद्धितज (७) कर्मशिल्पश्लोकसंयो- गसमीपसंयुतैश्चर्यापत्तयैः) धातुनै- रुक्तानि १५७ </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> १३१ प्रमाणभेदाः (४) १५१ १३२, ९३-९४* द्रव्यप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नवि- भागनिष्पन्ने मानोन्मानावमानगणि- मप्रतिमानानि, धान्यमाने असत्त्वादि, रसमाने चतुःषष्टिकादि, उन्मानेऽर्ध- कर्षादि, अवमाने हस्तादि, गणिम एककादि, प्रतिमाने गुंजादि, १५५ १३३, ९५-१०२* क्षेत्रप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नः विभागनिष्पन्ने अङ्गुल (३ सूचिचन- प्रक्षेपः) वितस्याद्यलोकान्तं, नैश्चयि- कपरमाण्वादि, २४ दण्डकेष्वगाहना भेदाः, प्रमाणाङ्गुलं १७३ १३४-१३६, १०३* कालप्रमाणभेदौ, प्रदेश- </td> </tr> </table>	अनुयोग० ॥ १३४ ॥	१२५ नामिकनैपातिकाऽऽख्यातिकौपसर्गिक- मिश्रभेदाः पञ्चनामनि ११३ १२६ षण्णाम्नि औदयिकः २४* जीवा (३४) जीवो (५२०) द्य- निष्पन्नौ, औपाशमिक उपशमनि- ष्पन्नश्च (११) क्षायिकः क्षयनि- ष्पन्नश्च (४६) क्षयोपशमः (४) क्षयोपशमनिष्पन्नश्च (५१) पारिणा- मिकः साद्य (जीर्णसुरादीषत्प्राग्भा- रान्तः) नादिकौ (धर्मास्तिकायादि १०) सान्निपातिकः (३ सं. ३ सं. ४ सं. ५ सं.) १२७ १२७, २५-५६* सप्तनामनि षड्जायाः का- रणलक्षणग्राममूर्च्छनास्थानयोनिम-	योच्छासाकारगुणप्रतभणित्तिभिः १३२ १२८, ५७-६२* अष्टनामनि विभक्तयः (निर्देशाद्याः) १३३ १२९, ६३-८२* नवनामनि वीराद्या रसाः संस्वरूपदृष्टान्ताः १३९ १३०, ८३-९२* दशनाम गौणागौणादान- पदप्रतिपक्षपदप्रधानताऽनादिसिद्धा- न्तनामावयवसंबन्धौ (४) प्रमाणैः (४) (स्थापनाप्रमाणे नक्षत्र देवतापाषण्डगणजीविकाहेत्वाभिप्रा- यिकानि (७) भावप्रमाणे सामासि- कतद्धितज (७) कर्मशिल्पश्लोकसंयो- गसमीपसंयुतैश्चर्यापत्तयैः) धातुनै- रुक्तानि १५७	१३१ प्रमाणभेदाः (४) १५१ १३२, ९३-९४* द्रव्यप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नवि- भागनिष्पन्ने मानोन्मानावमानगणि- मप्रतिमानानि, धान्यमाने असत्त्वादि, रसमाने चतुःषष्टिकादि, उन्मानेऽर्ध- कर्षादि, अवमाने हस्तादि, गणिम एककादि, प्रतिमाने गुंजादि, १५५ १३३, ९५-१०२* क्षेत्रप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नः विभागनिष्पन्ने अङ्गुल (३ सूचिचन- प्रक्षेपः) वितस्याद्यलोकान्तं, नैश्चयि- कपरमाण्वादि, २४ दण्डकेष्वगाहना भेदाः, प्रमाणाङ्गुलं १७३ १३४-१३६, १०३* कालप्रमाणभेदौ, प्रदेश-
अनुयोग० ॥ १३४ ॥	१२५ नामिकनैपातिकाऽऽख्यातिकौपसर्गिक- मिश्रभेदाः पञ्चनामनि ११३ १२६ षण्णाम्नि औदयिकः २४* जीवा (३४) जीवो (५२०) द्य- निष्पन्नौ, औपाशमिक उपशमनि- ष्पन्नश्च (११) क्षायिकः क्षयनि- ष्पन्नश्च (४६) क्षयोपशमः (४) क्षयोपशमनिष्पन्नश्च (५१) पारिणा- मिकः साद्य (जीर्णसुरादीषत्प्राग्भा- रान्तः) नादिकौ (धर्मास्तिकायादि १०) सान्निपातिकः (३ सं. ३ सं. ४ सं. ५ सं.) १२७ १२७, २५-५६* सप्तनामनि षड्जायाः का- रणलक्षणग्राममूर्च्छनास्थानयोनिम-	योच्छासाकारगुणप्रतभणित्तिभिः १३२ १२८, ५७-६२* अष्टनामनि विभक्तयः (निर्देशाद्याः) १३३ १२९, ६३-८२* नवनामनि वीराद्या रसाः संस्वरूपदृष्टान्ताः १३९ १३०, ८३-९२* दशनाम गौणागौणादान- पदप्रतिपक्षपदप्रधानताऽनादिसिद्धा- न्तनामावयवसंबन्धौ (४) प्रमाणैः (४) (स्थापनाप्रमाणे नक्षत्र देवतापाषण्डगणजीविकाहेत्वाभिप्रा- यिकानि (७) भावप्रमाणे सामासि- कतद्धितज (७) कर्मशिल्पश्लोकसंयो- गसमीपसंयुतैश्चर्यापत्तयैः) धातुनै- रुक्तानि १५७	१३१ प्रमाणभेदाः (४) १५१ १३२, ९३-९४* द्रव्यप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नवि- भागनिष्पन्ने मानोन्मानावमानगणि- मप्रतिमानानि, धान्यमाने असत्त्वादि, रसमाने चतुःषष्टिकादि, उन्मानेऽर्ध- कर्षादि, अवमाने हस्तादि, गणिम एककादि, प्रतिमाने गुंजादि, १५५ १३३, ९५-१०२* क्षेत्रप्रमाणे प्रदेशनिष्पन्नः विभागनिष्पन्ने अङ्गुल (३ सूचिचन- प्रक्षेपः) वितस्याद्यलोकान्तं, नैश्चयि- कपरमाण्वादि, २४ दण्डकेष्वगाहना भेदाः, प्रमाणाङ्गुलं १७३ १३४-१३६, १०३* कालप्रमाणभेदौ, प्रदेश-		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४५] चूलिका-२ 'अनुयोगद्वार'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) निष्पन्नः, विभागनिष्पन्ने समवादि पुद्गलपरावर्त्तान्तं १७५ १३७, १०४-१०६* समयप्ररूपणा, आव- लिकादि पत्योपमान्तं १८३ १३८, १०७-११०* उद्धाराद्धाक्षेत्रपत्यसा- गरोपमाणि । १३९, १११-११२* दण्डकेषु स्थितिः १८४ १४०, ११३* सूक्ष्मेतरक्षेत्रपत्यसागरो- पमाः १९२ १४१ षट् द्रव्याणि १९३ १४२ शरीरभेदा बद्धमुक्ताभ्यां दण्डकेषु २०९ १४३ भावप्रमाणानि (३) गुणनयसंख्याः ११० १४४, ११४-११६* गुणा जीवा (८) जीव- योः, अजीवे वर्ण (५) गंध (२) रस- (५) स्पर्श (८) संस्थानानि (५) जीवे ज्ञाने प्रत्यक्षादि (४) प्रत्यक्षे इन्द्रिय- (५) नोइन्द्रिये (३) अनुमाने पूर्ववत् क्षतवर्णादिना शेषवत् (कार्यकारण- गुणावयवाशयैः) दृष्टसाधर्म्यवत् (सा- मान्यविशेषाभ्यां) (अतीताऽनागतव- र्त्तमानाः) औपम्ये साधर्म्यवैधर्म्ये आगमे लौकिकलोकोत्तरौ सूत्रार्थो- भये, दर्शने (४) चारित्रे (५) २२१ १४५ नयप्रमाणे प्रत्यक्षवसतिप्रदेशदृष्टा- न्ताः २२७ १४६, ११९-१२२* संख्यायां नामस्थापना- द्रव्यौ (एकभबिकादि) पम्यपरिमाण- जाणणा (कालिकश्चुतादि) (सद्- सदादिना) गणनाभावाः, जघन्य- मध्यमोत्कृष्टानि संख्यातानि, परित्त्यु- क्तअसंख्यासंख्येषु जघन्याद्याः, परि- त्तुक्तानन्तानन्तकेषु जघन्याद्याः २४१ १४७ ब्रह्मवत्ताः (३) २४३ १४८, १२३* अर्थाधिकाराः २४५ १४९, १२४* समवतारे नामाद्याः (६) २४७ ॥ अथ निक्षेपाधिकारः ॥ १५०, १२५-१३१* निक्षेपे ओषन्तामसूत्रा- ल्लापकाः, ओषे अष्वयनाक्षीणाय- क्षपणानिक्षेपाः, नास्ति सामायिक- निक्षेपः, उरगाद्युपमाः (१२) २५७ ॥ अनुगमाधिकारः ॥ १५१-१३२-१३३* अनुगमे सूत्रानुगमनिर्यु- क्त्यनुगमौ, अन्ये निक्षेपोपोद्धात- (२७) सूत्रस्पर्शाः (संहितादि) २६१ ॥ नयाधिकारः ॥ १५२-१३६-१४३* नये नैगमाद्याः, ज्ञान- क्रिये च । २६७ इति श्रीअनुयोगद्वाराणि

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे. ॥ १३५ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) आवश्यकवृद्धविषयानुक्रमः ।		आवश्यक- वृ० विष- यानुक्रमः ॥ १३५ ॥
	१ नतवीरश्रुतदेवतागुरुसाधुर्विवृतिं प्रति- जानीते । (१) सङ्क्षेपरुच्यनुग्रहाय कृतिः (२) १ २ ॥ अथ ज्ञानपञ्चकरूपा नन्दी ॥ (प्रयोजनादिचर्चा, मङ्गलत्वसिद्धिः, नामादिलक्षणानि, ज्ञानज्ञेययोरैक्यम्) ज्ञानपञ्चकोद्देशः (मतिश्रुतयोर्वि- शेषः) ७ यावत् ३ अवग्रहादेः स्वरूपम् १० ४ अवग्रहादेः कालमानम् ११ ५ इन्द्रियाणां प्राप्ताप्राप्तविषयता (नय-	६ नमनसोरप्राप्यकारिता) १२ ७ केवलमिश्रवासितशब्दश्रवणम् १४ ८ भाषाद्रव्यग्रहणनिसर्गौ ८-९ त्रिविधशरीरे भाषा, चतुर्विधा सा १६ १०-११ भाषायाः लोकपूर्तिसमयाः १७ १२ मत्येकार्थिकानि (९) १८ १३-१६ सत्पदप्ररूपादीनि (९) गत्यादिषु (२०) (ज्ञाने व्यवहारनिश्चयौ) मतिज्ञानस्योपसंहारः, श्रुतस्य प्र- तिज्ञा २२ १७ यावदक्षरसंयोगं श्रुतप्रकृतिरिति २३	१८ श्रुतचतुर्दशभेदकथनप्रतिज्ञा २४ १९-२० श्रुतभेदकथनं, उच्छ्वसिताद्यनक्षर- श्रुतम् २५ २१-२२ आगमकारणशुश्रूषादिवुद्धिगुणाष्ट- कम् २६ २३ श्रवणविधिः सूकादिकः (७) २६ २४ व्याख्यानविधिः सूत्रार्थादिकः (३) २६ २५-२६ अवधिरसंख्यभेदो भवगुणप्रत्ययौ ततश्चतुर्दश भेदाः ऋद्धिप्राप्ताश्च । २७ २७-२८ अवधौ क्षेत्रादि (१४) प्रतिपत्तयः २८ २९ अवधिनिक्षेपाः (७) २९	
	[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		
	३० जघन्यावधिक्षेत्रम् ३१ उत्कृष्टावधिक्षेत्रम् ३० ३२-३५ अवधेः क्षेत्रकालप्रतिबन्धः । (म- ध्यमः) ३१ ३६-३७ द्रव्यादिवृद्धिप्रतिबन्धास्तत्सूक्ष्म- ता च ३३ ३८ अवधेः प्रारम्भसमाप्तिद्रव्यम् ३९-४० औदारिकादिवर्गणाः (१९) ४१ गुरुलघ्वगुरुलघुद्रव्याणि ३६ ४२-४३ द्रव्यक्षेत्रकालप्रतिबन्धोऽवधेः ४४-४५ परमावधेर्द्रव्यक्षेत्रकालभावाः ३८ ४६-४७ नारकतिरश्चोरवधिः ४८-५२ देवानामवधिः ३९ ५३ जघन्योत्कृष्टौ प्रतिपाद्यप्रातिनौ च ४१	५४-५५ स्तिबुकाद्या अवधेराकाराः ५६ देवनारकयोरनुगामी, शेषयो- स्त्रिधा ४२ ५७-५८ क्षेत्रद्रव्यपर्यायकाले त्रयस्त्रिंशत्साग- रान्तर्मुहूर्तसप्ताष्टसमयषट्षष्टिसागराणि ५९ द्रव्यादिषु वृद्धिहानी ४३ ६०-६१ स्पर्धकाः, अनुगामि (३) प्रतिपाला- दयः (३) ६२-६३ बाह्ये उत्पादप्रतिपातौ नान्तरे सम- येन ४४ ६४ असंख्येयाश्चत्वारश्च पर्यायाः पराप- रावधयोः ४५ ६५ नानुत्तरे विभंगः ६६ बाह्याभ्यन्तरावधिमन्तः	६७ सम्बद्धाऽसंबद्धावधौ ४६ ६८ गत्याद्यतिदेश ऋद्धिकथनप्रतिज्ञा च ६९-७० आमर्षौषध्याद्याः (१६) लब्धयः ४७ ७१-७५ वासुदेवचक्रितीर्थकरबलानि ४८ ७६ चारित्र्यवतां नरक्षेत्रविषयं मनःप- र्यायम् ४९ ७७ केवलज्ञानस्वरूपम् ७८ प्रज्ञापनीयदेशना, वाग्योगश्च सा ५० ७९ स्वान्यानुयोगित्वाच्छ्रुतेनाधिकारः ॥ इति ज्ञानपञ्चकरूपा नन्दी ॥ ॥ अथ उपक्रमादि ॥ ८०-८३ आवश्यकनिक्षेपाः अगीतासंविग्रह- ष्टान्तः, आवश्यैकार्थिकानि १०, अ- र्थधिकारः, सभेदा उपक्रम (ब्राह्म-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)								
	<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे. ॥ १३६ ॥ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ण्यादिदृष्टान्ताः) निक्षेपानुगमाः, उ- पोद्घातनिर्युक्तौ मङ्गलं प्रतिज्ञा च (तीर्थस्वरूपम्) ५९ ८४-८६ आवश्यकदि (१०) शास्त्रनिर्युक्ति- प्रतिज्ञा ६१ ८७ सामायिकनिर्युक्तिप्रतिज्ञा (द्रव्यपर- म्परदृष्टान्तः) ६२ ८८ निर्युक्तिस्वरूपम् ६७ ८९-९२ गणधरकृता सूत्ररचना तत्प्रयोजनं च ९३ श्रुतज्ञानं तत्सारश्च, तत्सारो निर्वा- णम् ६९ ९४-९६ नासंयमिनः श्रुतान्मोक्षः, वायुहीन- प्रोक्तम् । ९७ अक्षरणो ह्रस्वः ७० </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ९८-९९ अन्धस्य दीपकोटिवदचरणस्य मुधा श्रुतं, चक्षुष्मतो दीपवत्सचरणस्य सफलम् १०० चन्दनगर्दभवदचरणो ज्ञानी १०१-१०२ एकैकेन विना हते ते पङ्गवन्ध- वत्, संयोगेन फलम् ७१ १०३ मोक्षे ज्ञानतपःसंयमव्यापाराः ७२ १०४ श्रुतं क्षयोपशमे, क्षये कैवल्यज्ञा- नम् ७३ १०५-१०६ कोट्यकोट्यन्तस्य अन्यतरलाभः १०७ सामायिकलाभे परमविदृष्टान्ताः (९) ७५ १०८-१११ प्रथमादिकषायाणामुद्देशे सम्य- क्त्वावेरलाभलाभौ । ७७ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ११२-११३ संज्वलनोद्देशेऽतिचाराः, जेषेषु छेदः, द्वादशक्षयादितश्चारित्र्यम् ७८ ११४-११५ चारित्र्यभेदाः (५) (कल्पाः १०, परिहारविशुद्धितपः) १९ ११६ उपशमश्रेणिः ८१ ११७-१२० सूक्ष्मसंपरायस्वरूपं, कषायम- हिमा, कणादिह ताः, तेष्वविधासि- ता ८३ १२१-१२६ क्षपकश्रेणिः, मध्यक्षेयाः द्विच- रमे निद्राद्याः (२७), चरमे ज्ञाना- वरणाद्याः ८३ १२७ केवलिनः सर्ववर्षिता ८५ १२८ प्रवचनोत्पत्तिः, तदेकार्थिकवद्विभागौ, द्वारमवच्छादयानविषयबोधो द्वाराणि (५) ८६ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> आवश्यक- बृ० विष- यानुक्रमः ॥ १३६ ॥ </td></tr> </table>				नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे. ॥ १३६ ॥	ण्यादिदृष्टान्ताः) निक्षेपानुगमाः, उ- पोद्घातनिर्युक्तौ मङ्गलं प्रतिज्ञा च (तीर्थस्वरूपम्) ५९ ८४-८६ आवश्यकदि (१०) शास्त्रनिर्युक्ति- प्रतिज्ञा ६१ ८७ सामायिकनिर्युक्तिप्रतिज्ञा (द्रव्यपर- म्परदृष्टान्तः) ६२ ८८ निर्युक्तिस्वरूपम् ६७ ८९-९२ गणधरकृता सूत्ररचना तत्प्रयोजनं च ९३ श्रुतज्ञानं तत्सारश्च, तत्सारो निर्वा- णम् ६९ ९४-९६ नासंयमिनः श्रुतान्मोक्षः, वायुहीन- प्रोक्तम् । ९७ अक्षरणो ह्रस्वः ७०	९८-९९ अन्धस्य दीपकोटिवदचरणस्य मुधा श्रुतं, चक्षुष्मतो दीपवत्सचरणस्य सफलम् १०० चन्दनगर्दभवदचरणो ज्ञानी १०१-१०२ एकैकेन विना हते ते पङ्गवन्ध- वत्, संयोगेन फलम् ७१ १०३ मोक्षे ज्ञानतपःसंयमव्यापाराः ७२ १०४ श्रुतं क्षयोपशमे, क्षये कैवल्यज्ञा- नम् ७३ १०५-१०६ कोट्यकोट्यन्तस्य अन्यतरलाभः १०७ सामायिकलाभे परमविदृष्टान्ताः (९) ७५ १०८-१११ प्रथमादिकषायाणामुद्देशे सम्य- क्त्वावेरलाभलाभौ । ७७	११२-११३ संज्वलनोद्देशेऽतिचाराः, जेषेषु छेदः, द्वादशक्षयादितश्चारित्र्यम् ७८ ११४-११५ चारित्र्यभेदाः (५) (कल्पाः १०, परिहारविशुद्धितपः) १९ ११६ उपशमश्रेणिः ८१ ११७-१२० सूक्ष्मसंपरायस्वरूपं, कषायम- हिमा, कणादिह ताः, तेष्वविधासि- ता ८३ १२१-१२६ क्षपकश्रेणिः, मध्यक्षेयाः द्विच- रमे निद्राद्याः (२७), चरमे ज्ञाना- वरणाद्याः ८३ १२७ केवलिनः सर्ववर्षिता ८५ १२८ प्रवचनोत्पत्तिः, तदेकार्थिकवद्विभागौ, द्वारमवच्छादयानविषयबोधो द्वाराणि (५) ८६	आवश्यक- बृ० विष- यानुक्रमः ॥ १३६ ॥
नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे. ॥ १३६ ॥	ण्यादिदृष्टान्ताः) निक्षेपानुगमाः, उ- पोद्घातनिर्युक्तौ मङ्गलं प्रतिज्ञा च (तीर्थस्वरूपम्) ५९ ८४-८६ आवश्यकदि (१०) शास्त्रनिर्युक्ति- प्रतिज्ञा ६१ ८७ सामायिकनिर्युक्तिप्रतिज्ञा (द्रव्यपर- म्परदृष्टान्तः) ६२ ८८ निर्युक्तिस्वरूपम् ६७ ८९-९२ गणधरकृता सूत्ररचना तत्प्रयोजनं च ९३ श्रुतज्ञानं तत्सारश्च, तत्सारो निर्वा- णम् ६९ ९४-९६ नासंयमिनः श्रुतान्मोक्षः, वायुहीन- प्रोक्तम् । ९७ अक्षरणो ह्रस्वः ७०	९८-९९ अन्धस्य दीपकोटिवदचरणस्य मुधा श्रुतं, चक्षुष्मतो दीपवत्सचरणस्य सफलम् १०० चन्दनगर्दभवदचरणो ज्ञानी १०१-१०२ एकैकेन विना हते ते पङ्गवन्ध- वत्, संयोगेन फलम् ७१ १०३ मोक्षे ज्ञानतपःसंयमव्यापाराः ७२ १०४ श्रुतं क्षयोपशमे, क्षये कैवल्यज्ञा- नम् ७३ १०५-१०६ कोट्यकोट्यन्तस्य अन्यतरलाभः १०७ सामायिकलाभे परमविदृष्टान्ताः (९) ७५ १०८-१११ प्रथमादिकषायाणामुद्देशे सम्य- क्त्वावेरलाभलाभौ । ७७	११२-११३ संज्वलनोद्देशेऽतिचाराः, जेषेषु छेदः, द्वादशक्षयादितश्चारित्र्यम् ७८ ११४-११५ चारित्र्यभेदाः (५) (कल्पाः १०, परिहारविशुद्धितपः) १९ ११६ उपशमश्रेणिः ८१ ११७-१२० सूक्ष्मसंपरायस्वरूपं, कषायम- हिमा, कणादिह ताः, तेष्वविधासि- ता ८३ १२१-१२६ क्षपकश्रेणिः, मध्यक्षेयाः द्विच- रमे निद्राद्याः (२७), चरमे ज्ञाना- वरणाद्याः ८३ १२७ केवलिनः सर्ववर्षिता ८५ १२८ प्रवचनोत्पत्तिः, तदेकार्थिकवद्विभागौ, द्वारमवच्छादयानविषयबोधो द्वाराणि (५) ८६	आवश्यक- बृ० विष- यानुक्रमः ॥ १३६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १२९ प्रबचन (५) सूत्रा (५) नुयोगै (५)- कार्थिकानि । १३२ अनुयोगनिक्षेपाः (६) ८७ १३३-१३४ चत्सकगवाद्या दृष्टान्ताः (५) भावे श्रावकभार्यायाः (७) ८८ १३५ भाषकविभाषकव्यक्तिकरेषु काष्ठक- मौद्युपमांः (६) ९६ १३६ व्याख्यानविधौ गोचन्दनकन्धाद्याः सप्रतिपक्षाः (७) दृष्टान्ताः । १३७ शिष्यदोषगुणाः १०० १३८-१३९ शिष्यपरीक्षायां शैलषनकुटादयः (१४) १०० <u>इत्युपक्रमादि</u> </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ॥ अथोपोद्घातनिर्युक्तिः ॥ १४०-१४१ उद्देशनिर्देशादीनि (९६ उपो- द्घातनिर्युक्तिद्वाराणि) १०४ १४२-१४३ उद्देशनिर्देशनिक्षेपाः (८) तद्वि- शेषश्च १०६ १४४ निर्देशनिर्देशकाभ्यां निर्देशे नयवि- चारः १०६ १४५ निर्गमनिक्षेपाः (६) १०७ ॥ अथ वीरजिनादिवक्तव्यता ॥ १४६ अटवीभ्रष्टसाधुमार्गदर्शने सम्य- क्त्वम् १०८ १-२४ तदेव १०९ १४७-१४८ साध्वनुकम्पया सम्यक्त्वं, देवत्वं, भरते मरीचिः १०९ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १४९ कुलकरवंशेश्वाकुकुलाधिकाराः १५०-१५१ पत्न्योपमाष्टभागे दक्षिणमध्य- भरते कुलकराः (७) १०९ १५२ पूर्वभवजन्मनामप्रमाणादीनि (१२) द्वाराणि । ११० १५३-१५४ अपरविदेहेषु वयस्यौ, भरते हस्ती मनुष्यश्च, नाम नीतिश्च १५५-१६८ कुलकराणां नामप्रमाणसंहननव- र्णस्त्रीसंस्थानोच्चत्ववर्णायुःक्यायुःकुल- करत्वकालदेवत्वसत्त्वाहस्त्युपपातनी- तयः १११ १६९-१७० मानवकादृष्टनीतिः, आहार ऋष- भस्व, भरतस्य परिभाषणाद्या (४) नीतिः । ११४ १७० ऋषभवक्तव्यतासूचा ११४ </td></tr></table>	१२९ प्रबचन (५) सूत्रा (५) नुयोगै (५)- कार्थिकानि । १३२ अनुयोगनिक्षेपाः (६) ८७ १३३-१३४ चत्सकगवाद्या दृष्टान्ताः (५) भावे श्रावकभार्यायाः (७) ८८ १३५ भाषकविभाषकव्यक्तिकरेषु काष्ठक- मौद्युपमांः (६) ९६ १३६ व्याख्यानविधौ गोचन्दनकन्धाद्याः सप्रतिपक्षाः (७) दृष्टान्ताः । १३७ शिष्यदोषगुणाः १०० १३८-१३९ शिष्यपरीक्षायां शैलषनकुटादयः (१४) १०० <u>इत्युपक्रमादि</u>	॥ अथोपोद्घातनिर्युक्तिः ॥ १४०-१४१ उद्देशनिर्देशादीनि (९६ उपो- द्घातनिर्युक्तिद्वाराणि) १०४ १४२-१४३ उद्देशनिर्देशनिक्षेपाः (८) तद्वि- शेषश्च १०६ १४४ निर्देशनिर्देशकाभ्यां निर्देशे नयवि- चारः १०६ १४५ निर्गमनिक्षेपाः (६) १०७ ॥ अथ वीरजिनादिवक्तव्यता ॥ १४६ अटवीभ्रष्टसाधुमार्गदर्शने सम्य- क्त्वम् १०८ १-२४ तदेव १०९ १४७-१४८ साध्वनुकम्पया सम्यक्त्वं, देवत्वं, भरते मरीचिः १०९	१४९ कुलकरवंशेश्वाकुकुलाधिकाराः १५०-१५१ पत्न्योपमाष्टभागे दक्षिणमध्य- भरते कुलकराः (७) १०९ १५२ पूर्वभवजन्मनामप्रमाणादीनि (१२) द्वाराणि । ११० १५३-१५४ अपरविदेहेषु वयस्यौ, भरते हस्ती मनुष्यश्च, नाम नीतिश्च १५५-१६८ कुलकराणां नामप्रमाणसंहननव- र्णस्त्रीसंस्थानोच्चत्ववर्णायुःक्यायुःकुल- करत्वकालदेवत्वसत्त्वाहस्त्युपपातनी- तयः १११ १६९-१७० मानवकादृष्टनीतिः, आहार ऋष- भस्व, भरतस्य परिभाषणाद्या (४) नीतिः । ११४ १७० ऋषभवक्तव्यतासूचा ११४
१२९ प्रबचन (५) सूत्रा (५) नुयोगै (५)- कार्थिकानि । १३२ अनुयोगनिक्षेपाः (६) ८७ १३३-१३४ चत्सकगवाद्या दृष्टान्ताः (५) भावे श्रावकभार्यायाः (७) ८८ १३५ भाषकविभाषकव्यक्तिकरेषु काष्ठक- मौद्युपमांः (६) ९६ १३६ व्याख्यानविधौ गोचन्दनकन्धाद्याः सप्रतिपक्षाः (७) दृष्टान्ताः । १३७ शिष्यदोषगुणाः १०० १३८-१३९ शिष्यपरीक्षायां शैलषनकुटादयः (१४) १०० <u>इत्युपक्रमादि</u>	॥ अथोपोद्घातनिर्युक्तिः ॥ १४०-१४१ उद्देशनिर्देशादीनि (९६ उपो- द्घातनिर्युक्तिद्वाराणि) १०४ १४२-१४३ उद्देशनिर्देशनिक्षेपाः (८) तद्वि- शेषश्च १०६ १४४ निर्देशनिर्देशकाभ्यां निर्देशे नयवि- चारः १०६ १४५ निर्गमनिक्षेपाः (६) १०७ ॥ अथ वीरजिनादिवक्तव्यता ॥ १४६ अटवीभ्रष्टसाधुमार्गदर्शने सम्य- क्त्वम् १०८ १-२४ तदेव १०९ १४७-१४८ साध्वनुकम्पया सम्यक्त्वं, देवत्वं, भरते मरीचिः १०९	१४९ कुलकरवंशेश्वाकुकुलाधिकाराः १५०-१५१ पत्न्योपमाष्टभागे दक्षिणमध्य- भरते कुलकराः (७) १०९ १५२ पूर्वभवजन्मनामप्रमाणादीनि (१२) द्वाराणि । ११० १५३-१५४ अपरविदेहेषु वयस्यौ, भरते हस्ती मनुष्यश्च, नाम नीतिश्च १५५-१६८ कुलकराणां नामप्रमाणसंहननव- र्णस्त्रीसंस्थानोच्चत्ववर्णायुःक्यायुःकुल- करत्वकालदेवत्वसत्त्वाहस्त्युपपातनी- तयः १११ १६९-१७० मानवकादृष्टनीतिः, आहार ऋष- भस्व, भरतस्य परिभाषणाद्या (४) नीतिः । ११४ १७० ऋषभवक्तव्यतासूचा ११४		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहाँ देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्द्यादिवृहद्विषयानुक्रमे, ॥ १३७ ॥	१७१-१७२ धनसार्थवाहः, अटवीवासः, घृतदानं च । ऋषभपूर्वभवाः(प्र.) उत्तरकुरुषु, सौधर्मे, विदेहेषु वैद्यपुत्रो राजपुत्रादिवयस्यः ११४ १७३-१७४ कुष्ठिसाधुचिकित्सा ११७ १७५-१७८ देवलोकः, पुण्डरीकिण्यां वज्रसेनपुत्रो वज्रनाभो बाहुसुबाहुपीठमहापीठाश्च, चतुर्दशपूर्विता, तीर्थकरत्वं, द्वयोः वैयावृत्यादि, अप्रीतिश्च ११८ १७९-१८१ अर्हदादिस्थानकानि(२०) ११९ १८१-१८४ आद्यान्तयोः सर्वाणि, मध्यमानामनियतानि, अग्लान्या वेदनम्, अर्वाक् तृतीये नरत्वादौ बन्धः १८५ सर्वार्थे, आषाढबहुलचतुर्थ्या च्यवनम् १२०	१८६ जन्मनामवृद्ध्यादीनि(८)द्वाराणि १२१ १८७ चैत्रकृष्णाष्टम्यां जन्म, तन्महश्च । १८८ दिक्कुमारीकृत्यम् १२३ १८९ वंशस्थापना, अङ्गुल्यामाहारक्रान्तिः १२५ १९० इक्षुभक्षकत्वादिश्वाकवः १९१-१९२ नन्दासुमङ्गलायुतस्य वृद्धिः १२६ १९३ जातिस्मरस्त्रिज्ञानोऽधिककान्तिबुद्धिः १९४ अकालमृत्युः, कन्याग्रहणं च १९५ विवाहः १२७ १९६-४+ षट्पूर्वलक्षेषु भरतादिजन्म १९७-१९८ एकोनपञ्चाशद्दयुगलजन्म, नीत्यतिक्रमः, नृपयाच्या, नाभेरनुज्ञा	१९९-२०० राज्याभिषेकः, विनीतानिवेशश्च १२८ २०१-२०२ अश्वदि (३)उग्रादि(४)सङ्ग्रहः २०३-२०६ आहारादीनि (४०)द्वाराणि १२८ ५-९ नराः कन्दाद्याहाराः, क्षत्रिया इक्षुधान्यभोजिनः, जिनोक्तं घर्षणतीमनादि १०-११ अग्नेरुत्पत्तिः पाकारम्भश्च १३१ २०७ शिल्पशतम् १३२ १२-३० कर्मादीनि (४०) द्वाराणि १३२ २०८-२११ जिनसंबोधनादि (२१) द्वाराणि १३४ २१२-२१३ जीतेन बोधिताः, सांवत्सरिकं, त्यागः, परिवारः, उपधिः १३५ २१४-२१५ लोकान्तिकनामानि तैर्बोधनं च	आवश्यक-वृ० विषयानुक्रमः

आगम
संबंधी
साहित्य

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'

प्रत
सूत्रांक
यहां
देखीए

दीप
क्रमांक
के लिए
देखीए

'संवृत्तिक
आगम
सुत्ताणि'

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

२१६-२२० अर्वाक् संवत्सरात्कोट्यधिकं वर-
वरिकापूर्वं दानं, संवत्सरदानद्रव्यसंख्या

२२१-२२३ जिनानामभिषेकस्त्रीराज्यवि-
चारः । १३६

२२४-२३२ दीक्षापरिवारो वय उपधितपः-
स्थानकालाः

२३३-२३७ विषयसेवाविहारपरीषहजीवाद्यु-
पलम्भश्रुतोपलम्भव्रतसंयमाः १३७

२३८-३०५ छद्मस्थकालतपोज्ञानोत्पादतत्क्षे-
त्रतपःपरिवारतीर्थगणगणधरदेशनाप-
र्यायकुमारत्वादिश्रामण्यद्वाराणि १३८

३०६-३१३ निर्वाणतपःस्थानपरिवाराः (प्रथ-
मानुयोगात्) प्रकृतं च १४२

३१४-३१६ चैत्रकृष्णाष्टम्यां सुदर्शनया चतुः-
सहस्रीयुतस्य प्रव्रज्या विहारश्च

३१७-३२२ आहारालाभात्तापसाः, नमि-
नम्योर्विद्याधरत्वं, कन्यादिभिर्निम-
ग्नं, संवत्सरेणेश्वरसमिक्षा पञ्च दि-
न्यानि श्रेयांसात्पारणं, तक्षशिला-
गमनम् १४३

३२३-३३४ जिनपारणस्थानदातृवृष्टिदातृग-
तयः १४६

३३५-३४१ धर्मचक्रमनार्यविहारः पुरिमताले
केवलं पञ्च महाव्रतानि, ज्ञानमहिमा
च । १४८

३४२-३४७ ज्ञानचक्रोत्पातौ, तातपूजा, मरु-
देवीनिर्गमः, पुत्रादेर्मरीचेश्च दीक्षा

३४८-३४९ षट्खण्डविजयः, सुन्दरीप्र-
व्रज्या, भ्रातृदीक्षा च १५२

३२-३७४ युद्धपञ्चकं बाहुबलिनो दीक्षा
भगिन्यागमः, केवलं, भरतभोगाः,
मरीचेर्दीक्षाध्ययने ५५२

३५०-३६१ उद्वेगः, पारिव्राज्यं, उपदेशः,
शिष्यार्पणं च । १५४

३६२-३६५ समवसरणं, ब्राह्मणानुवृत्तिरर्द्धभ-
रताधिपता च दण्डवीर्यं यावत्, कालेन
मिथ्यात्वं, षष्ठे मास्यनुयोगः १५७

३६६ ब्राह्मणदानं वेदकृति(९)द्वाराणि १५८

३६७-३६८ चक्रिपृच्छा, चक्रयादीनां (१०),
जिनपृच्छा ।

३८४-३६९-३७५ तीर्थङ्कराः (२३) चक्रिणां
प्रश्नो नामानि च १५९

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे, ॥ १३८ ॥ ३९-४३५ वासुबलदेवानां स्वरूपनामशत्रवः ३७६-३९० तीर्थकराणां वर्णप्रमाणगोत्रपुर- जननीजनकगतयः १६० ३९१-४०१ चक्रवर्तिनां वर्णप्रमाणायुःपुर- मातापितृगतयः १६१ ४०२-४१५ वासुबलदेवानां वर्णप्रमाणगोत्रा- युःपुरमातापितृपर्यायगतिनिदा- नानि १६२ (१-१७) जिनान्तराणि प्र. १६४ ४१६-४२० जिनान्तरे चक्रवर्तिवासु- देवाः १६५ ४२१ चक्रवासुदेवान्तराणि १६६ ४४५ भरतजिनप्रभाः १६७ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ४२२-४३२ मरीचेर्निर्देशः, पदवीत्रयं, वैश्व- प्रशंसा, मदश्च १६७ ४३३-४३४ अष्टापदे गमनं, दशसाहस्रया मोक्षः १६८ ४३५ निर्वाणं, चिता, सक्थीनि, स्तूपाः, याचकाः, आहिताग्नयः १६९ ४४५ स्तूपाश्चैत्यम् ४३६ आदर्शगृहं, मुद्रिकापातः, ज्ञानं दीक्षा च भरतस्य ४३७-४३९ मरीचेर्दुर्वचनं, तत्फलं, ब्रह्मदेव- लोकः कपिलः, (पष्टितन्त्रं) १७० ४४०-४५० कौशिकः, पुष्पमित्रः, सौधर्मे, अग्निद्योतः, ईशाने, अग्निभूतिः, सनत्कुमारः, भारद्वाजः, माहेन्द्रे, स्थावरः, ब्रह्मलोके, विश्वभूतिः, </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> सिदानं महाशुक्रे, त्रिष्टुष्टः सप्तम्याः प्रियमित्रः महाशुक्रे नन्दनः, पुष्पो- न्ने ४ (अन्तराऽन्तरा संसारश्च) १७१ ४५१-४५६ विश्वविस्थानकादीनि १७७ ४५७ देवानन्दकुशावतारः १७८ ४५८ स्वप्नापहाराभिप्रहादीनि द्वाराणि ४६-१११५ व्युत्क्रान्तौ स्वप्नाः, सैहरणवि- चारः, चक्रषादय उत्तमकुले नैगमेषि- कथनं, त्रिशलाकुक्षौ संक्रमः, स्वप्ना- पहारः, स्वप्नदर्शनं, सप्तमेऽभिग्रहः, साधिकनवमास्यां चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्म, आभरणविष्टिः, इन्द्रागमः, देवतुष्टिः, देवागमः, मन्दरेऽभिषेकः, जनन्यर्पणं, क्षौमादि, रत्नानयनं, वृद्धिः, वर्णनं, जातिस्मरणं, शक्र- </td></tr> </table>	नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे, ॥ १३८ ॥ ३९-४३५ वासुबलदेवानां स्वरूपनामशत्रवः ३७६-३९० तीर्थकराणां वर्णप्रमाणगोत्रपुर- जननीजनकगतयः १६० ३९१-४०१ चक्रवर्तिनां वर्णप्रमाणायुःपुर- मातापितृगतयः १६१ ४०२-४१५ वासुबलदेवानां वर्णप्रमाणगोत्रा- युःपुरमातापितृपर्यायगतिनिदा- नानि १६२ (१-१७) जिनान्तराणि प्र. १६४ ४१६-४२० जिनान्तरे चक्रवर्तिवासु- देवाः १६५ ४२१ चक्रवासुदेवान्तराणि १६६ ४४५ भरतजिनप्रभाः १६७	४२२-४३२ मरीचेर्निर्देशः, पदवीत्रयं, वैश्व- प्रशंसा, मदश्च १६७ ४३३-४३४ अष्टापदे गमनं, दशसाहस्रया मोक्षः १६८ ४३५ निर्वाणं, चिता, सक्थीनि, स्तूपाः, याचकाः, आहिताग्नयः १६९ ४४५ स्तूपाश्चैत्यम् ४३६ आदर्शगृहं, मुद्रिकापातः, ज्ञानं दीक्षा च भरतस्य ४३७-४३९ मरीचेर्दुर्वचनं, तत्फलं, ब्रह्मदेव- लोकः कपिलः, (पष्टितन्त्रं) १७० ४४०-४५० कौशिकः, पुष्पमित्रः, सौधर्मे, अग्निद्योतः, ईशाने, अग्निभूतिः, सनत्कुमारः, भारद्वाजः, माहेन्द्रे, स्थावरः, ब्रह्मलोके, विश्वभूतिः,	सिदानं महाशुक्रे, त्रिष्टुष्टः सप्तम्याः प्रियमित्रः महाशुक्रे नन्दनः, पुष्पो- न्ने ४ (अन्तराऽन्तरा संसारश्च) १७१ ४५१-४५६ विश्वविस्थानकादीनि १७७ ४५७ देवानन्दकुशावतारः १७८ ४५८ स्वप्नापहाराभिप्रहादीनि द्वाराणि ४६-१११५ व्युत्क्रान्तौ स्वप्नाः, सैहरणवि- चारः, चक्रषादय उत्तमकुले नैगमेषि- कथनं, त्रिशलाकुक्षौ संक्रमः, स्वप्ना- पहारः, स्वप्नदर्शनं, सप्तमेऽभिग्रहः, साधिकनवमास्यां चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्म, आभरणविष्टिः, इन्द्रागमः, देवतुष्टिः, देवागमः, मन्दरेऽभिषेकः, जनन्यर्पणं, क्षौमादि, रत्नानयनं, वृद्धिः, वर्णनं, जातिस्मरणं, शक्र-
नन्दादिबृ- हद्विषयानु- क्रमे, ॥ १३८ ॥ ३९-४३५ वासुबलदेवानां स्वरूपनामशत्रवः ३७६-३९० तीर्थकराणां वर्णप्रमाणगोत्रपुर- जननीजनकगतयः १६० ३९१-४०१ चक्रवर्तिनां वर्णप्रमाणायुःपुर- मातापितृगतयः १६१ ४०२-४१५ वासुबलदेवानां वर्णप्रमाणगोत्रा- युःपुरमातापितृपर्यायगतिनिदा- नानि १६२ (१-१७) जिनान्तराणि प्र. १६४ ४१६-४२० जिनान्तरे चक्रवर्तिवासु- देवाः १६५ ४२१ चक्रवासुदेवान्तराणि १६६ ४४५ भरतजिनप्रभाः १६७	४२२-४३२ मरीचेर्निर्देशः, पदवीत्रयं, वैश्व- प्रशंसा, मदश्च १६७ ४३३-४३४ अष्टापदे गमनं, दशसाहस्रया मोक्षः १६८ ४३५ निर्वाणं, चिता, सक्थीनि, स्तूपाः, याचकाः, आहिताग्नयः १६९ ४४५ स्तूपाश्चैत्यम् ४३६ आदर्शगृहं, मुद्रिकापातः, ज्ञानं दीक्षा च भरतस्य ४३७-४३९ मरीचेर्दुर्वचनं, तत्फलं, ब्रह्मदेव- लोकः कपिलः, (पष्टितन्त्रं) १७० ४४०-४५० कौशिकः, पुष्पमित्रः, सौधर्मे, अग्निद्योतः, ईशाने, अग्निभूतिः, सनत्कुमारः, भारद्वाजः, माहेन्द्रे, स्थावरः, ब्रह्मलोके, विश्वभूतिः,	सिदानं महाशुक्रे, त्रिष्टुष्टः सप्तम्याः प्रियमित्रः महाशुक्रे नन्दनः, पुष्पो- न्ने ४ (अन्तराऽन्तरा संसारश्च) १७१ ४५१-४५६ विश्वविस्थानकादीनि १७७ ४५७ देवानन्दकुशावतारः १७८ ४५८ स्वप्नापहाराभिप्रहादीनि द्वाराणि ४६-१११५ व्युत्क्रान्तौ स्वप्नाः, सैहरणवि- चारः, चक्रषादय उत्तमकुले नैगमेषि- कथनं, त्रिशलाकुक्षौ संक्रमः, स्वप्ना- पहारः, स्वप्नदर्शनं, सप्तमेऽभिग्रहः, साधिकनवमास्यां चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्म, आभरणविष्टिः, इन्द्रागमः, देवतुष्टिः, देवागमः, मन्दरेऽभिषेकः, जनन्यर्पणं, क्षौमादि, रत्नानयनं, वृद्धिः, वर्णनं, जातिस्मरणं, शक्र-		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) प्रशंसा देवागमः तिन्दुसकक्रीडा, लेखशालोपनयनं पृच्छा पैन्द्रव्या- करणं, विवाहः, भोगाः सन्तानं, दीक्षा १८३ ४५९-४६० सांवत्सरिकदानादि, लोकान्ति- कबोधादि, दीक्षापरिणामे निरन्तरं देवसंचारः, चन्द्रप्रभा शिविका तत्प्र- माणवर्णनं, अलङ्कारः, षष्ठभक्तं, ले- खाशुद्धिः, इन्द्रचामरवीजनं, शिविकोत्पादनं, पुष्पवृष्टिः, गगन- तलशोभा, वाजित्राणि ज्ञातखण्डवना- गमः लोचः, केशानां क्षीरोदधिनयनं, तूष्णीकता, व्रतं, मनःपर्यायः, सुहु- र्त्तावशेषे कूर्मारप्रामगमनं १८३ ४६१-४६४ इन्द्रागमः, पारणं, अभिग्रहाः (५) शूलपाणिः, वेदनाः, स्वप्नाः, अच्छन्दकश्च १८८ ११२-११४× शूलपाण्युपसर्गः १९४ (१ प्र.) निमित्ते, अच्छन्दकद्वेषः । ४६५-४६६ अङ्गुलीच्छेदश्चौर्यादि, कंटके वस्त्रं च । ४६७-४७१ चण्डकौशिकः, उत्तरवाचालायां पारणं नैयकराजवन्दनं कम्बलशम्भ- लभक्तिर्गङ्गायाम् । १९७ ४७२-५३८ सामुद्रिकः पुष्ट्यो, गोशालः, वि- जयानन्दमुनन्दैः पारणानि, कोडाके गोशालप्रव्रज्या, सुवर्णखले नियति- ग्रहः, नन्दोपनन्दौ, दाहः, चम्पायां चतुर्मासः, कालाके सिंहः, पत्रालके स्कन्धः, कुमारायां मुनिचन्द्रः, सोमाजयन्तीभ्यां मोचनं, पृष्ठचम्पा, कृतङ्गले द्रविद्रस्थविराः, गोशालपात्रे मांसं, अक्षिविक्रिया मुखत्रासः, मण्डपस्वालनं, कालहस्त्युपसर्गः, पूर्णकलशे शक्रागमः, भद्रिकायां चातुर्मासी, अच्छार्यभक्तं, नन्दि- वेणाचार्यः, विजयाप्रगल्भे, गोशाल- वाहनं, वैशाल्यां शक्रागमः, वि- भेलकमहिमा, तापस्युपसर्गः, शालि- शीर्षे लोकावधिः, भद्रिकाचतुर्मासी, गोशालागमः, आलमिकाचतुर्मासः, कुण्डाके मर्दने च गोशालचेष्टा, कट- पूतना, उत्पलः, वग्गुरपूजा, दन्तुर २४ नंया०

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके आवश्यक ॥ १३९ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) हसनं, वज्रलाढे गोशालबन्धः, राजगृहे चतुर्मासी, लाढावज्रशुद्धभूम्योर्विहारः, वर्षारात्रश्च, तिलस्तम्बः, गोव्वरे वैश्यायनः, शीतलेश्यामोचनं, वैशाल्यां शङ्खपूजा, चित्रपूजा, वाणिज्ये आनन्दकथिता ज्ञानोत्पत्तिः, श्रावस्त्यां चतुर्मासी भद्राद्याः प्रतिमाः बहुलिकागृहे दिव्यानि, पेढाले एक-रात्रिकी, शक्रप्रशंसा, सङ्गमकागमः, विंशतिरुपसर्गाः, चौरकाणाक्षयञ्जलि-विटपिशाचोन्मत्तरूपाणि, शक्रकृतो यात्रादिपृच्छा, वष्यादेशः सप्तकृत्वो रज्जुमोक्षः, कौशिककृतो मोक्षः, व्रज-ग्रामे पारणं, मन्दरे निर्वासनं, हरिहरि-सहस्कन्दप्रतिमामहिमा, चन्द्रसूर्याव- तारः, शक्रेशानजनकधरणभूतानन्दाः, वैशाल्यां चतुर्मासी, चमरोत्पातः, सनत्कुमारागमः, नन्दीमहिमा गो-पशिक्षा, माषाभिप्रहः, सनत्कुमा-रमाहेन्द्रागमः, वादिशिरश्छेदः, च-म्पाचतुर्मासी, यक्षसेवा स्वातिदत्त-प्रभाः, नाट्यज्ञानोत्पत्तिकथने, चमरागमः, कैवल्यं तपःसंख्या २२८ ॥ इति वीरजिनादिवक्तव्यता ॥ ॥ अथ समवसरणवक्तव्यता ॥ ५३९-५४२ महसेने द्वितीयं समवसरणं, सो-मिलयज्ञः, देवमहिमा । ११५×५४३ ज्ञानोत्पादमहिमा समवसरणे	विधिः, सामायिकविधानरूपप्रभो-त्तरश्रोतपरिणामवृत्तिदानदेवमाल्या-नयानि २३० ५४४-५९०, ११६*११९× अवृत्तपूर्वे म-हर्द्धिकागमे वा समवसरणरचना, प्राकारादिविधिः, आद्यान्तपौरुष्यो-र्देशना, कमलनवकं, प्रतिमाः, आग्नेय्यां गणिः, रूपातिशयः, पर्वदां निवेशः, द्वितीये तिर्यञ्चः, तृतीये यानानि, सामायिककथा, तद्विधिश्च, द्वादश-योजन्या आगमः, गणधरादिको रूपक्रमः, प्रशस्तसंहननादिः, अनु-मोदना, युगपदुत्तराणि, स्वस्वगीः प-रिणामः, कीटीदासी, चक्रयादेः प्री-	उपोद्घाते श्रीवीरसम- वसरण गणधरसा- माचार्यादि ॥ १३९ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> तिदानं भक्त्यादि फलं, बलितन्दुल- च्छटनवासप्रवेशभागविधिः, गणि- देशनायां गुणा विधिः, तज्ज्ञानं च । २३९ ॥ इति समवसरणव० ॥ ॥ अथ गणधरवक्तव्यता ॥ ५९१-६४१ देवघोषः, गणधरा(११)ऽऽगमः, जीव-कर्म-तज्जीव-भूत-तादृश-बन्ध- देव-नारक-पुण्य-परलोक-निर्वाणसं- शयाः, परिवारः, अमर्षः, वेदपदार्थः, दीक्षा २५४ ६४२-६५९ गणीनां ग्रामनक्षत्रमातापितृगो- त्रागारच्छद्व्यस्यकेवलिपर्यायायुरागम- मोक्षनिर्वाणतपांसि २५४ ॥ इति गणधराः ॥ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ॥ दशधासामाचारी ॥ ६६०-६६५ कालनिक्षेपाः (११)द्रव्ये स्थितिः (४) अद्धायां समयाद्याः, यथायुष्के निर्वर्त्तितानुभवः, उपक्रमे त्रिविधा सामाचारी ओघाद्या (३) २५७ ६६६-६६७ इच्छामिथ्यायुद्देशः २५८ ६६८ अभ्यर्थनायां कारणजाते चेच्छा- कारः २५९ ६६८-६७६ अनिगूहितबलवीर्येऽज्ञे व्या- घृते, विनाशे तत्कुर्वति, ज्ञानवैया- वृत्त्यादिकारणान्तरे इच्छाकारः । ६७७-६७९ अश्ववद्विनीते आज्ञाबलाभि- योगौ । २६० ६८० प्रार्थनायां ब्राह्मणवानरौ, स्वयंकरणे वणिजौ २६२ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ६८१ असंपादनेऽसीच्छाकारे लाभः २६३ ६८२-६८७ वितथे मिथ्या, अकरणं, भू- योऽकारः, करणे माया, मिथ्यादु- ष्कृताक्षरार्थः । ६८८-६९० तथाकारस्य योग्यो विषयः, इ- च्छादेः फलं च २६४ ६९१-६९४ आवश्यिकीनैषिधिक्योर्भेदे प्रभः, अर्थैक्यं, गुप्तस्येयादिमतः गमने आवश्यिकी । २६५ ६९५-६९७, १२०-१२३× शय्यादौ नैषे- धिकी निषिद्धात्मत्वान् । आपृच्छा द्याः (४) २६७ ६९८-७२३ ज्ञानदर्शनचारित्र्योपसम्पदः त्रिद्विभेदाः, संदिष्टादिचतुर्भङ्गी, </td></tr></table>	तिदानं भक्त्यादि फलं, बलितन्दुल- च्छटनवासप्रवेशभागविधिः, गणि- देशनायां गुणा विधिः, तज्ज्ञानं च । २३९ ॥ इति समवसरणव० ॥ ॥ अथ गणधरवक्तव्यता ॥ ५९१-६४१ देवघोषः, गणधरा(११)ऽऽगमः, जीव-कर्म-तज्जीव-भूत-तादृश-बन्ध- देव-नारक-पुण्य-परलोक-निर्वाणसं- शयाः, परिवारः, अमर्षः, वेदपदार्थः, दीक्षा २५४ ६४२-६५९ गणीनां ग्रामनक्षत्रमातापितृगो- त्रागारच्छद्व्यस्यकेवलिपर्यायायुरागम- मोक्षनिर्वाणतपांसि २५४ ॥ इति गणधराः ॥	॥ दशधासामाचारी ॥ ६६०-६६५ कालनिक्षेपाः (११)द्रव्ये स्थितिः (४) अद्धायां समयाद्याः, यथायुष्के निर्वर्त्तितानुभवः, उपक्रमे त्रिविधा सामाचारी ओघाद्या (३) २५७ ६६६-६६७ इच्छामिथ्यायुद्देशः २५८ ६६८ अभ्यर्थनायां कारणजाते चेच्छा- कारः २५९ ६६८-६७६ अनिगूहितबलवीर्येऽज्ञे व्या- घृते, विनाशे तत्कुर्वति, ज्ञानवैया- वृत्त्यादिकारणान्तरे इच्छाकारः । ६७७-६७९ अश्ववद्विनीते आज्ञाबलाभि- योगौ । २६० ६८० प्रार्थनायां ब्राह्मणवानरौ, स्वयंकरणे वणिजौ २६२	६८१ असंपादनेऽसीच्छाकारे लाभः २६३ ६८२-६८७ वितथे मिथ्या, अकरणं, भू- योऽकारः, करणे माया, मिथ्यादु- ष्कृताक्षरार्थः । ६८८-६९० तथाकारस्य योग्यो विषयः, इ- च्छादेः फलं च २६४ ६९१-६९४ आवश्यिकीनैषिधिक्योर्भेदे प्रभः, अर्थैक्यं, गुप्तस्येयादिमतः गमने आवश्यिकी । २६५ ६९५-६९७, १२०-१२३× शय्यादौ नैषे- धिकी निषिद्धात्मत्वान् । आपृच्छा द्याः (४) २६७ ६९८-७२३ ज्ञानदर्शनचारित्र्योपसम्पदः त्रिद्विभेदाः, संदिष्टादिचतुर्भङ्गी,
तिदानं भक्त्यादि फलं, बलितन्दुल- च्छटनवासप्रवेशभागविधिः, गणि- देशनायां गुणा विधिः, तज्ज्ञानं च । २३९ ॥ इति समवसरणव० ॥ ॥ अथ गणधरवक्तव्यता ॥ ५९१-६४१ देवघोषः, गणधरा(११)ऽऽगमः, जीव-कर्म-तज्जीव-भूत-तादृश-बन्ध- देव-नारक-पुण्य-परलोक-निर्वाणसं- शयाः, परिवारः, अमर्षः, वेदपदार्थः, दीक्षा २५४ ६४२-६५९ गणीनां ग्रामनक्षत्रमातापितृगो- त्रागारच्छद्व्यस्यकेवलिपर्यायायुरागम- मोक्षनिर्वाणतपांसि २५४ ॥ इति गणधराः ॥	॥ दशधासामाचारी ॥ ६६०-६६५ कालनिक्षेपाः (११)द्रव्ये स्थितिः (४) अद्धायां समयाद्याः, यथायुष्के निर्वर्त्तितानुभवः, उपक्रमे त्रिविधा सामाचारी ओघाद्या (३) २५७ ६६६-६६७ इच्छामिथ्यायुद्देशः २५८ ६६८ अभ्यर्थनायां कारणजाते चेच्छा- कारः २५९ ६६८-६७६ अनिगूहितबलवीर्येऽज्ञे व्या- घृते, विनाशे तत्कुर्वति, ज्ञानवैया- वृत्त्यादिकारणान्तरे इच्छाकारः । ६७७-६७९ अश्ववद्विनीते आज्ञाबलाभि- योगौ । २६० ६८० प्रार्थनायां ब्राह्मणवानरौ, स्वयंकरणे वणिजौ २६२	६८१ असंपादनेऽसीच्छाकारे लाभः २६३ ६८२-६८७ वितथे मिथ्या, अकरणं, भू- योऽकारः, करणे माया, मिथ्यादु- ष्कृताक्षरार्थः । ६८८-६९० तथाकारस्य योग्यो विषयः, इ- च्छादेः फलं च २६४ ६९१-६९४ आवश्यिकीनैषिधिक्योर्भेदे प्रभः, अर्थैक्यं, गुप्तस्येयादिमतः गमने आवश्यिकी । २६५ ६९५-६९७, १२०-१२३× शय्यादौ नैषे- धिकी निषिद्धात्मत्वान् । आपृच्छा द्याः (४) २६७ ६९८-७२३ ज्ञानदर्शनचारित्र्योपसम्पदः त्रिद्विभेदाः, संदिष्टादिचतुर्भङ्गी,		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४० ॥ वर्तनासन्धनाग्रहणस्वरूपं, प्रमार्ज- ननिषद्यादिविधिः, श्रवणविधिस्त- त्फलं, चिन्तकस्य लघोरपि वन्दन- सिद्धिः, इत्वरिकादि वैयावृत्त्ये, वि- कृष्टाविकृष्टतपस्युपसंपत्, गणपृच्छया, समाप्तौ स्मारणा विसर्गो वा, अव- ग्रह्याच्चा, उपसंहारः फलं च २७० ॥ इति सामाचारीवक्तव्यता ॥ ॥ अथोपक्रमादि ॥ ७२४-७२६ आयुर्पक्रमाः (७) सदृष्टान्ताः, दण्डकशाद्या हेतवः २७२ ७२७-७३५ प्रशस्ताप्रशस्तदेशकालौ, दिव- सरात्री प्रमाणकालौ, वर्णकालः, भावस्थितिः (४), प्रमाणकालेन प्र- धमपौरुष्याऽधिकारः, भावे भगवत्क्षा- यिकगणिक्षयोपशमिकाभ्याम् २७४ ७३६ पुरुषनिक्षेपाः (८) २७७ ७३७-७४८ कारणनिक्षेपाः (४) तदन्यद्रव्ये निमित्तनैमित्तिनौ समवाय्यसमवा- यिनौ, कर्त्रादि (६) द्रव्ये, भावेऽज्ञा- नज्ञानादि, प्रकृते प्राकृततीयमनु- ष्यभवबद्धजिननाम, गणितो ज्ञाना- द्यव्यावाधान्तम् २७७ ७४९-७५० प्रत्ययनिक्षेपाः (४) द्रव्ये तत्त- माषादिः, भावेऽवध्यादिः । २८० ७५१-७५३ लक्षणनिक्षेपाः (१२), भावे श्रद्धानादि (४) २८२ ७५४-७६१ नयसप्तकं, तल्लक्षणभेदाः, त्रिभिः श्रोत्रपेक्षयाऽधिकारः २८२ ७६२-७६४ आर्यवज्रात्परतोऽसमवतारः, व- ज्रस्तुतिः (तच्चरित्रम्) २८५ ७६५-७७२ द्विर्गुल्लकनिमज्जगा, वाचकत्वे देवमहः, रुक्मिणीप्रतिबोधनं, आ- काशगामिनी, तद्विषयः, परानर्पणं, माहेश्वरीगमनम् । २९० ७७३-७७६ पृथक्त्वकृत आर्यरक्षिताः, मा- त्राद्याचार्यादि (आर्यरक्षितचरि- त्रम्) २९६ १२४५ अनुबोगचतुष्क सूत्राणि ३०९ ७७७ महाकल्पच्छेदाः कालिके । ३०९ ॥ अथ निहववक्तव्यता ॥ ७७८-७८३ निहवमतानि, तदादिपुरुषभाम- कालाः ३११ उपक्रमो निहवाश्च- ॥ १४० ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १२५-१४८x निहवाधिकारः सविशेषः, स- पूर्वोत्तरपक्षः ३२४ ७८४-७८८ निहवदृष्ट्युपसंहारः, प्रत्येकदो- षास्तत्फलं च, तन्निमित्तान्नादिग्रहण- भजना, न बोदिके ३२५ ॥ इति निहववक्तव्यता ॥ ७८९ नैगमसंग्रहव्यवहारास्त्रिविधं, शब्दा- द्याः संयमं मन्वते । ३२६ ७९० आत्मा सामायिकम् १४९x नयविचारः ३२७ ७९१ व्रतविषयः सर्वजीवादिः ७९२-७९५ द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकयोर्द्रव्य- गुणसामायिकत्वे वादः ३२७ ७९६, १५०x सम्यक्त्वश्रुत (३) चारित्राणि (२) सामायिकम् ३२९ ७९७-८०३ सामायिकस्वरूपं, बहुशो देश- सामायिकम् ३२९ ८०४-८०६ क्षेत्रदिकालगतिभव्यसंयुच्छा- सदृष्ट्याहारपर्याप्तसुप्तजन्मस्थितिबेद- सञ्ज्ञाकषायायुर्ज्ञानयोगोपयोगशरी- रसंस्थानसंहननमानलेइयापरिणाम- वेदनासमुद्घातकर्मतन्निर्वेष्टनोद्वेष्टना- श्रवालङ्कारशयनासनस्थानचक्रमणैः सामायिकविचारः ३३० ८०७-८०८ सम्यक्त्वश्रुतयोस्त्रिषु, विरति- नैरे मिश्रं तिर्यक्ष्वपि, प्रतिपन्नास्त्रयाणां त्रिषु, चरणस्य द्वयोः, भजनोद्धे- लोके ३३१ ८०९-८११ दिमिक्षेपाः (१८) दिक्षु प्रतिप- न्नमानः, प्रतिपन्नोऽन्यतरस्याम् । ८१२-८२९ सम्यक्त्वश्रुते चतसृषु व्रतं नरे मिश्रं तिर्यक्षु भव्यश्चत्वारि संयुच्छा- सकौ च, दृष्टौ नयौ, आहारकः पर्याप्तकश्च, सम्यक्त्वश्रुतेऽनाहारका- पर्याप्तकावपि प्रतिपन्नौ, जागरोऽन्य- तरत्, अण्डपोतजयोस्त्रिकं जरायौ चतुष्कं, मध्यमस्थितौ उभयं, आयुष उत्कृष्टायामपि, वेदत्रयसञ्ज्ञाचतु- ष्कयोः प्रतिपत्तिः, अप्रथमे कषाये संख्यायुश्चत्वारितरः सम्यक्त्वश्रुते, चतुर्ज्ञानी त्रियोगी उपयोगद्विक औदारिकं चत्वारि वैक्रियं द्वे, सर्व- संस्थानसंहननमध्यममाने चत्वारि, षट्सु लेइयासु द्वे तिसृषु चारित्रं, पूर्व- प्रतिपन्नोऽन्यतरस्यां, वर्द्धमानावस्थितौ		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> नन्दादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४१ ॥ </td><td style="width: 30%; vertical-align: top; padding: 10px;"> द्विविधवेदनाऽसमवहत्तः, निर्वेष्टय- शुद्धतः निश्चावयन् चत्वारि ३४० ८३० सम्यक्त्वादिविषयः ८३१-८३५ मानुष्यार्यक्षेत्रादिदुर्लभत्वे चो- ल्लादिदृष्टान्ताः, युगदृष्टान्तो गा- थाभिः ३४१ ८३६-८४४ धर्मकरणे उपदेशः, आलस्याद्याः (१३) श्रुतिविघ्नाः, ज्ञानावरणादि- वद्, प्रतक्षान्त्यादि, दृष्टादौ कर्मक्षये शुभयोगे च बोधिः ३४५ ८४५-८४८ अनुकम्पाऽकामनिर्जराद्यैर्वैद्यमि- ण्डादीनां (११) सम्यक्त्वलाभः (वैद्यवानरदेवः) अभ्युत्थानविन- याद्यैश्च ३४७ ८४९-८६० सम्यक्त्वस्थितिः, प्रतिपत्प्रतिप- </td><td style="width: 30%; vertical-align: top; padding: 10px;"> अप्रतिपतितानामल्पबहुत्वं तत्संख्या, अन्तरमविरहविरहौ भवाकर्षौ क्षेत्र- स्पर्शना तत्स्पर्शना ३६१ ८६१-८६५ सम्यक्त्व(७) श्रुत(७) देश(६) सर्व (८) विरतिनिरुक्तयः, दमद- न्ताद्याः (८) दृष्टान्ताः ३६३ १५१+ दमदन्तवृत्तम् ३६५ ८६६-६८ मुनित्वस्वरूपम् ८६९-७० मेतार्यस्तुतिः ३६९ ८७१ कालिकाचार्यस्तुतिः ३७० ८७२-७५ चिलातीपुत्रस्तुतिः ३७१ ८७६-८७९ लक्ष्मलोकसङ्क्षेपः, धर्मरुचिरना- कुट्ट्याम्, इडापुत्रः परिज्ञायां, प्रत्या- ख्याने तेतलिः ३७२ ॥ इत्युपोद्घातनिर्युक्तिः ॥ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ॥ अथ सूत्रस्वरूपम् ॥ ८८०-८८६ सूत्रस्वरूपं, दोषाः (३२) गुणाः (८-६) ३७४ ॥ इति सूत्रस्वरूपम् ॥ ॥ अथ नमस्कारव्याख्या ॥ ८८७ नमस्कारे उत्पत्तिनिक्षेपपदपदार्थप्ररू- पणावस्थाक्षेपप्रसिद्धिक्रमप्रयोजनफ- लानि (११) ३७७ ८८८-८९० आदिनैगमेऽनुत्तमः, शेषाणां समुत्थानवाचनालब्धित उत्पन्नः, ऋजावनाद्ये, शेषा लब्धि मन्वते, निहवादि द्रव्ये (द्रमकदृष्टान्तः) नैपातिकात् द्रव्यभावसङ्कोचः ३७७ ८९१-९०२ किं कस्य केन कियच्चिरं कतिवि- </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> नयः प्रति- पन्नादिः नमस्कारः ॥ १४१ ॥ </td></tr> </table>				नन्दादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४१ ॥	द्विविधवेदनाऽसमवहत्तः, निर्वेष्टय- शुद्धतः निश्चावयन् चत्वारि ३४० ८३० सम्यक्त्वादिविषयः ८३१-८३५ मानुष्यार्यक्षेत्रादिदुर्लभत्वे चो- ल्लादिदृष्टान्ताः, युगदृष्टान्तो गा- थाभिः ३४१ ८३६-८४४ धर्मकरणे उपदेशः, आलस्याद्याः (१३) श्रुतिविघ्नाः, ज्ञानावरणादि- वद्, प्रतक्षान्त्यादि, दृष्टादौ कर्मक्षये शुभयोगे च बोधिः ३४५ ८४५-८४८ अनुकम्पाऽकामनिर्जराद्यैर्वैद्यमि- ण्डादीनां (११) सम्यक्त्वलाभः (वैद्यवानरदेवः) अभ्युत्थानविन- याद्यैश्च ३४७ ८४९-८६० सम्यक्त्वस्थितिः, प्रतिपत्प्रतिप-	अप्रतिपतितानामल्पबहुत्वं तत्संख्या, अन्तरमविरहविरहौ भवाकर्षौ क्षेत्र- स्पर्शना तत्स्पर्शना ३६१ ८६१-८६५ सम्यक्त्व(७) श्रुत(७) देश(६) सर्व (८) विरतिनिरुक्तयः, दमद- न्ताद्याः (८) दृष्टान्ताः ३६३ १५१+ दमदन्तवृत्तम् ३६५ ८६६-६८ मुनित्वस्वरूपम् ८६९-७० मेतार्यस्तुतिः ३६९ ८७१ कालिकाचार्यस्तुतिः ३७० ८७२-७५ चिलातीपुत्रस्तुतिः ३७१ ८७६-८७९ लक्ष्मलोकसङ्क्षेपः, धर्मरुचिरना- कुट्ट्याम्, इडापुत्रः परिज्ञायां, प्रत्या- ख्याने तेतलिः ३७२ ॥ इत्युपोद्घातनिर्युक्तिः ॥	॥ अथ सूत्रस्वरूपम् ॥ ८८०-८८६ सूत्रस्वरूपं, दोषाः (३२) गुणाः (८-६) ३७४ ॥ इति सूत्रस्वरूपम् ॥ ॥ अथ नमस्कारव्याख्या ॥ ८८७ नमस्कारे उत्पत्तिनिक्षेपपदपदार्थप्ररू- पणावस्थाक्षेपप्रसिद्धिक्रमप्रयोजनफ- लानि (११) ३७७ ८८८-८९० आदिनैगमेऽनुत्तमः, शेषाणां समुत्थानवाचनालब्धित उत्पन्नः, ऋजावनाद्ये, शेषा लब्धि मन्वते, निहवादि द्रव्ये (द्रमकदृष्टान्तः) नैपातिकात् द्रव्यभावसङ्कोचः ३७७ ८९१-९०२ किं कस्य केन कियच्चिरं कतिवि-	नयः प्रति- पन्नादिः नमस्कारः ॥ १४१ ॥
नन्दादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४१ ॥	द्विविधवेदनाऽसमवहत्तः, निर्वेष्टय- शुद्धतः निश्चावयन् चत्वारि ३४० ८३० सम्यक्त्वादिविषयः ८३१-८३५ मानुष्यार्यक्षेत्रादिदुर्लभत्वे चो- ल्लादिदृष्टान्ताः, युगदृष्टान्तो गा- थाभिः ३४१ ८३६-८४४ धर्मकरणे उपदेशः, आलस्याद्याः (१३) श्रुतिविघ्नाः, ज्ञानावरणादि- वद्, प्रतक्षान्त्यादि, दृष्टादौ कर्मक्षये शुभयोगे च बोधिः ३४५ ८४५-८४८ अनुकम्पाऽकामनिर्जराद्यैर्वैद्यमि- ण्डादीनां (११) सम्यक्त्वलाभः (वैद्यवानरदेवः) अभ्युत्थानविन- याद्यैश्च ३४७ ८४९-८६० सम्यक्त्वस्थितिः, प्रतिपत्प्रतिप-	अप्रतिपतितानामल्पबहुत्वं तत्संख्या, अन्तरमविरहविरहौ भवाकर्षौ क्षेत्र- स्पर्शना तत्स्पर्शना ३६१ ८६१-८६५ सम्यक्त्व(७) श्रुत(७) देश(६) सर्व (८) विरतिनिरुक्तयः, दमद- न्ताद्याः (८) दृष्टान्ताः ३६३ १५१+ दमदन्तवृत्तम् ३६५ ८६६-६८ मुनित्वस्वरूपम् ८६९-७० मेतार्यस्तुतिः ३६९ ८७१ कालिकाचार्यस्तुतिः ३७० ८७२-७५ चिलातीपुत्रस्तुतिः ३७१ ८७६-८७९ लक्ष्मलोकसङ्क्षेपः, धर्मरुचिरना- कुट्ट्याम्, इडापुत्रः परिज्ञायां, प्रत्या- ख्याने तेतलिः ३७२ ॥ इत्युपोद्घातनिर्युक्तिः ॥	॥ अथ सूत्रस्वरूपम् ॥ ८८०-८८६ सूत्रस्वरूपं, दोषाः (३२) गुणाः (८-६) ३७४ ॥ इति सूत्रस्वरूपम् ॥ ॥ अथ नमस्कारव्याख्या ॥ ८८७ नमस्कारे उत्पत्तिनिक्षेपपदपदार्थप्ररू- पणावस्थाक्षेपप्रसिद्धिक्रमप्रयोजनफ- लानि (११) ३७७ ८८८-८९० आदिनैगमेऽनुत्तमः, शेषाणां समुत्थानवाचनालब्धित उत्पन्नः, ऋजावनाद्ये, शेषा लब्धि मन्वते, निहवादि द्रव्ये (द्रमकदृष्टान्तः) नैपातिकात् द्रव्यभावसङ्कोचः ३७७ ८९१-९०२ किं कस्य केन कियच्चिरं कतिवि-	नयः प्रति- पन्नादिः नमस्कारः ॥ १४१ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> धमिति षट्पदा, सत्पदाद्यैर्गती- न्द्रियादिषु नवपदा, आरोपणाभ- जनापृच्छादापनानिर्यापनाभिः पञ्च- विधा प्ररूपणा ३७९ ९०३ मार्गाद्या नमस्कारहेतवः ३८३ ९०४-२६ महासार्थवाहत्वादि, दृष्टान्ताः सविशेषाः, रागद्वेषकषायेन्द्रियाणि (सदृष्टान्तानि) कषायनिक्षेपाः (८) (षण्णयमार्गेणा च) परीषहोपसर्गाः (श्लोका दृष्टान्तानि च) अर्हच्छब्द- निरुक्तिः, तन्मस्कारफलम् । ४०६ ९२७-३० कर्मशिल्पादिभिः (११) सिद्ध- निक्षेपाः, कर्मशिल्पयोर्भेदः, सद्य- गिरिसिद्धः, कोकासो वर्द्धकिश्च दृष्टा- न्तौ ४०८ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ९३१-९३३ विद्यामन्त्रयोर्विशेषः, आर्यख- पुटस्तम्भाकर्षकदृष्टान्तौ ४११ ९३४-९३६ योगे अर्थसमितः, आगमे गौतमः, अर्थे मम्मणः, यात्रायां श्रुतिः ४१२ ९३७-९५१ बुद्धिसिद्धलक्षणम्, औत्पत्ति- क्यादिभेदाः, लक्षणानि दृष्टान्ताश्च, भरतशिल्पापण्यवृक्षाद्याः (१६) भ- रतशिल्पमेवाद्याः (२६) निमित्तार्थ- शास्त्राद्याः (१४) सुवर्णकारकर्षका- द्याः (१२) अभयाद्याः (२२) दृ- ष्टान्ताः ४३७ ९५२ तपःसिद्धे दृढप्रहारी ४३८ ९५३-९५९ सिद्धस्य निरुक्तिः, समुद्घातः, </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> शैलेशी, अलाबुकादिवद्वृत्तिः, अ- लोके स्खलनेत्यादि ४३८ ९६०-९९२ सिद्धशिलावर्णनं, सिद्धावगाह- नादेशप्रदेशस्पर्शलक्षणसुख (म्लेच्छ- दृष्टान्तः) एकार्थिक (८) नमस्कार- फलानि ४४२ ९९३-९९९ आचार्यनिक्षेपाः (४) ४४८ १०००-१००७ उपाध्यायनिक्षेपाः (४) अ- क्षरार्थादि ४४९ १००८-१०१७ साधोर्निक्षेपाः, स्वरू- पादि ४४९ १०१८-१०२१ पञ्चविधत्वे क्रमे च शङ्का- समाधानम् ४५० १०२२-१०२४ प्रयोजनफले, कर्मक्षयादि, </td></tr></table>	धमिति षट्पदा, सत्पदाद्यैर्गती- न्द्रियादिषु नवपदा, आरोपणाभ- जनापृच्छादापनानिर्यापनाभिः पञ्च- विधा प्ररूपणा ३७९ ९०३ मार्गाद्या नमस्कारहेतवः ३८३ ९०४-२६ महासार्थवाहत्वादि, दृष्टान्ताः सविशेषाः, रागद्वेषकषायेन्द्रियाणि (सदृष्टान्तानि) कषायनिक्षेपाः (८) (षण्णयमार्गेणा च) परीषहोपसर्गाः (श्लोका दृष्टान्तानि च) अर्हच्छब्द- निरुक्तिः, तन्मस्कारफलम् । ४०६ ९२७-३० कर्मशिल्पादिभिः (११) सिद्ध- निक्षेपाः, कर्मशिल्पयोर्भेदः, सद्य- गिरिसिद्धः, कोकासो वर्द्धकिश्च दृष्टा- न्तौ ४०८	९३१-९३३ विद्यामन्त्रयोर्विशेषः, आर्यख- पुटस्तम्भाकर्षकदृष्टान्तौ ४११ ९३४-९३६ योगे अर्थसमितः, आगमे गौतमः, अर्थे मम्मणः, यात्रायां श्रुतिः ४१२ ९३७-९५१ बुद्धिसिद्धलक्षणम्, औत्पत्ति- क्यादिभेदाः, लक्षणानि दृष्टान्ताश्च, भरतशिल्पापण्यवृक्षाद्याः (१६) भ- रतशिल्पमेवाद्याः (२६) निमित्तार्थ- शास्त्राद्याः (१४) सुवर्णकारकर्षका- द्याः (१२) अभयाद्याः (२२) दृ- ष्टान्ताः ४३७ ९५२ तपःसिद्धे दृढप्रहारी ४३८ ९५३-९५९ सिद्धस्य निरुक्तिः, समुद्घातः,	शैलेशी, अलाबुकादिवद्वृत्तिः, अ- लोके स्खलनेत्यादि ४३८ ९६०-९९२ सिद्धशिलावर्णनं, सिद्धावगाह- नादेशप्रदेशस्पर्शलक्षणसुख (म्लेच्छ- दृष्टान्तः) एकार्थिक (८) नमस्कार- फलानि ४४२ ९९३-९९९ आचार्यनिक्षेपाः (४) ४४८ १०००-१००७ उपाध्यायनिक्षेपाः (४) अ- क्षरार्थादि ४४९ १००८-१०१७ साधोर्निक्षेपाः, स्वरू- पादि ४४९ १०१८-१०२१ पञ्चविधत्वे क्रमे च शङ्का- समाधानम् ४५० १०२२-१०२४ प्रयोजनफले, कर्मक्षयादि,
धमिति षट्पदा, सत्पदाद्यैर्गती- न्द्रियादिषु नवपदा, आरोपणाभ- जनापृच्छादापनानिर्यापनाभिः पञ्च- विधा प्ररूपणा ३७९ ९०३ मार्गाद्या नमस्कारहेतवः ३८३ ९०४-२६ महासार्थवाहत्वादि, दृष्टान्ताः सविशेषाः, रागद्वेषकषायेन्द्रियाणि (सदृष्टान्तानि) कषायनिक्षेपाः (८) (षण्णयमार्गेणा च) परीषहोपसर्गाः (श्लोका दृष्टान्तानि च) अर्हच्छब्द- निरुक्तिः, तन्मस्कारफलम् । ४०६ ९२७-३० कर्मशिल्पादिभिः (११) सिद्ध- निक्षेपाः, कर्मशिल्पयोर्भेदः, सद्य- गिरिसिद्धः, कोकासो वर्द्धकिश्च दृष्टा- न्तौ ४०८	९३१-९३३ विद्यामन्त्रयोर्विशेषः, आर्यख- पुटस्तम्भाकर्षकदृष्टान्तौ ४११ ९३४-९३६ योगे अर्थसमितः, आगमे गौतमः, अर्थे मम्मणः, यात्रायां श्रुतिः ४१२ ९३७-९५१ बुद्धिसिद्धलक्षणम्, औत्पत्ति- क्यादिभेदाः, लक्षणानि दृष्टान्ताश्च, भरतशिल्पापण्यवृक्षाद्याः (१६) भ- रतशिल्पमेवाद्याः (२६) निमित्तार्थ- शास्त्राद्याः (१४) सुवर्णकारकर्षका- द्याः (१२) अभयाद्याः (२२) दृ- ष्टान्ताः ४३७ ९५२ तपःसिद्धे दृढप्रहारी ४३८ ९५३-९५९ सिद्धस्य निरुक्तिः, समुद्घातः,	शैलेशी, अलाबुकादिवद्वृत्तिः, अ- लोके स्खलनेत्यादि ४३८ ९६०-९९२ सिद्धशिलावर्णनं, सिद्धावगाह- नादेशप्रदेशस्पर्शलक्षणसुख (म्लेच्छ- दृष्टान्तः) एकार्थिक (८) नमस्कार- फलानि ४४२ ९९३-९९९ आचार्यनिक्षेपाः (४) ४४८ १०००-१००७ उपाध्यायनिक्षेपाः (४) अ- क्षरार्थादि ४४९ १००८-१०१७ साधोर्निक्षेपाः, स्वरू- पादि ४४९ १०१८-१०२१ पञ्चविधत्वे क्रमे च शङ्का- समाधानम् ४५० १०२२-१०२४ प्रयोजनफले, कर्मक्षयादि,		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके आवश्यक ॥ १४२ ॥	अर्थकामादि (८) (त्रिदण्ड्यादि- दृष्टान्ताः ५) ४५१ ॥ इति नमस्कारव्याख्या ॥ १०२५-२६ नन्द्यनुयोगोपोद्घातान् ज्ञात्वा पञ्चमङ्गलं पठित्वा सूत्रारम्भः ४५४ ॥ अथ सामायिकव्याख्या ॥ १ सू० सामायिकसूत्रम् । १०२७-२८ सूत्रस्पर्शे करणभयान्तसामायि- कसर्ववर्ष्ययोगप्रत्याख्यानयावज्जीव- त्रिविधानां निरूपणम् ४५६ १५२-१७४× करणनिक्षेपाः (६), सञ्ज्ञायां कटकरणादि, नोसञ्ज्ञायां धर्मादेः करणादि, अभ्राण्वादिषु चाक्षुषाचा- क्षुषी संघातभेदोभयादि विश्रसाकरणे	अजीवप्रयोगे वर्णादि जीवस्य मूले शरीरपञ्चकमङ्गोपाङ्गादि, उत्तरे के- शरचनादि, सङ्घातशाटोभयानि विस्तरेण, पटादिषु सामान्येन ४६२ १०२९-१०३८ क्षेत्रकालकरणे, जीवभाव- करणे श्रुते बद्धाबद्धनिशीथानिशीथे (अनादेशाः, द्वैपायनाः) नोश्रुते गुणे तपःसंयमौ, योजनायां मनोवाक्कायाः (४-४-७) अधिकारश्च ४६२ १०३९ कृताकृतं केन केषु कदा नयः कति- विधं कथं द्वाराणि ४६७ १७५-१७७× कृताकृतादिद्वारविवेचनम् । १७८-१८२× आलोचनाविनयक्षेत्रदिकाल- क्षेत्रगुणामिव्याहाराः । ४६९	१८३× उद्देशवाचना(समुद्देशा)ऽनुज्ञा । ४७१ १०४०-४१ देशविधातिशुद्धौ ककारला- भः ४७२ १८४-१८५× भयसर्वौ । १०४२-४४ साम्न एकार्थिकानि (सामसमस- म्ययिकाः) निक्षेपाश्च प्रत्येकस्य, द्रव्ये शर्करातुलायोगचितयः, भावे दुःखाकरणं माध्यस्थ्यं ज्ञानादि तत्प्रोतनं च ४७४ १०४५ सामायिकैकार्थिकानि ४७४ १०४६-४८ कर्त्ताऽऽत्मा, कर्म सामायिकं, करणमात्मा १०४९ सर्वनिक्षेपाः (७) ४७६ १८६-१८९× द्रव्ये सर्वासर्वद्रव्यदेशैर्भङ्गाः, सर्वधत्तनिरूपणं, भावसर्वं च ४७६	सामायि- काधिकाराः ॥ १४२ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"><tr><td>१०५०-५१ क्रोधादयो वर्ज्यः, सम्यक्त्वादिः शस्तो योगः ४७८ १०५२-५३ प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६), द्रव्ये-निह्वादि, क्षेत्रे निर्विषयादि, भावे श्रुते पूर्वापूर्वे नोश्रुते मूलोत्तरे । १०५४-१०५५, १९०× यावज्जीवार्थः, जीव-निक्षेपाः, ओषे आयुः, भवे नार-काद्यायुः, भोगे चक्र्यादि, अधि-कारश्च ४८० १०५६ सूत्रस्पर्शे सप्तचत्वारिंशं शतं भङ्गा-नाम् ४८१ १०५७ करणप्रत्याख्यानप्रतिक्रमणानां वर्त्त-मानतादि ४८३ १०५८ त्रिविधेनेत्यस्य विवरणं, विकल्पगुण-भावना ४८४</td><td>१०५९-१०६३ द्रव्यप्रतिक्रमणे चेष्टकः, भावे मृगावती, द्रव्यनिन्दायां चि-न्नकरसुता, द्रव्यगर्हायां ब्राह्मणः, द्रव्यव्युत्सर्गे प्रसन्नचन्द्रः, अनुगम-समाप्तिः ४८४ १०६४-१०६६ ज्ञानक्रियानयौ, उपसंहारः, चरणगुणस्थितस्य साधुता ४९० ॥ इति सामायिकव्याख्या ॥ भाग २ ॥ ॥ अथ चतुर्विंशतिस्तवः ॥ १०६७, १९१-१९२× चतुर्विंशतिस्तवे चतु-र्विंशतेः (६) स्तवस्य च (४) निक्षेपाः, द्रव्यस्तवे पुष्पादि, भावे स्तुतिः ४९१ १९३-१९५× भावस्तवाद्रव्यस्तवो बहुगुणो</td><td>न, संयमवतः पुष्पाद्यर्चो न ४९२ १९६× श्राद्धस्य द्रव्यस्तवः संसारप्रतनु-करणः ४९३ १* अर्हत्कीर्त्तनप्रतिष्ठा । १०६८ लोकनिक्षेपाः (८) ४९४ १९७-२०५× द्रव्ये जीवाजीवौ रूप्यरूपिणौ सप्रदेशाप्रदेशौ नित्यानित्यौ, गति-सिद्धभव्याभव्याः पुद्गलानागतातीत-धर्माद्याः स्थितिचतुष्टये, क्षेत्रे ऊर्ध्वा-धस्तिर्यग्लोकाः, काले समयावलि-काद्याः, औदयिकाद्या उत्कटरागादि-मांश्च भावे, वर्णाद्यगुरुलघुतीव्रदुः-स्वपरिणामाः पथवे ४९५ १०६९ लोकैकार्थिकानि (४) ४९६</td></tr></table>	१०५०-५१ क्रोधादयो वर्ज्यः, सम्यक्त्वादिः शस्तो योगः ४७८ १०५२-५३ प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६), द्रव्ये-निह्वादि, क्षेत्रे निर्विषयादि, भावे श्रुते पूर्वापूर्वे नोश्रुते मूलोत्तरे । १०५४-१०५५, १९०× यावज्जीवार्थः, जीव-निक्षेपाः, ओषे आयुः, भवे नार-काद्यायुः, भोगे चक्र्यादि, अधि-कारश्च ४८० १०५६ सूत्रस्पर्शे सप्तचत्वारिंशं शतं भङ्गा-नाम् ४८१ १०५७ करणप्रत्याख्यानप्रतिक्रमणानां वर्त्त-मानतादि ४८३ १०५८ त्रिविधेनेत्यस्य विवरणं, विकल्पगुण-भावना ४८४	१०५९-१०६३ द्रव्यप्रतिक्रमणे चेष्टकः, भावे मृगावती, द्रव्यनिन्दायां चि-न्नकरसुता, द्रव्यगर्हायां ब्राह्मणः, द्रव्यव्युत्सर्गे प्रसन्नचन्द्रः, अनुगम-समाप्तिः ४८४ १०६४-१०६६ ज्ञानक्रियानयौ, उपसंहारः, चरणगुणस्थितस्य साधुता ४९० ॥ इति सामायिकव्याख्या ॥ भाग २ ॥ ॥ अथ चतुर्विंशतिस्तवः ॥ १०६७, १९१-१९२× चतुर्विंशतिस्तवे चतु-र्विंशतेः (६) स्तवस्य च (४) निक्षेपाः, द्रव्यस्तवे पुष्पादि, भावे स्तुतिः ४९१ १९३-१९५× भावस्तवाद्रव्यस्तवो बहुगुणो	न, संयमवतः पुष्पाद्यर्चो न ४९२ १९६× श्राद्धस्य द्रव्यस्तवः संसारप्रतनु-करणः ४९३ १* अर्हत्कीर्त्तनप्रतिष्ठा । १०६८ लोकनिक्षेपाः (८) ४९४ १९७-२०५× द्रव्ये जीवाजीवौ रूप्यरूपिणौ सप्रदेशाप्रदेशौ नित्यानित्यौ, गति-सिद्धभव्याभव्याः पुद्गलानागतातीत-धर्माद्याः स्थितिचतुष्टये, क्षेत्रे ऊर्ध्वा-धस्तिर्यग्लोकाः, काले समयावलि-काद्याः, औदयिकाद्या उत्कटरागादि-मांश्च भावे, वर्णाद्यगुरुलघुतीव्रदुः-स्वपरिणामाः पथवे ४९५ १०६९ लोकैकार्थिकानि (४) ४९६
१०५०-५१ क्रोधादयो वर्ज्यः, सम्यक्त्वादिः शस्तो योगः ४७८ १०५२-५३ प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६), द्रव्ये-निह्वादि, क्षेत्रे निर्विषयादि, भावे श्रुते पूर्वापूर्वे नोश्रुते मूलोत्तरे । १०५४-१०५५, १९०× यावज्जीवार्थः, जीव-निक्षेपाः, ओषे आयुः, भवे नार-काद्यायुः, भोगे चक्र्यादि, अधि-कारश्च ४८० १०५६ सूत्रस्पर्शे सप्तचत्वारिंशं शतं भङ्गा-नाम् ४८१ १०५७ करणप्रत्याख्यानप्रतिक्रमणानां वर्त्त-मानतादि ४८३ १०५८ त्रिविधेनेत्यस्य विवरणं, विकल्पगुण-भावना ४८४	१०५९-१०६३ द्रव्यप्रतिक्रमणे चेष्टकः, भावे मृगावती, द्रव्यनिन्दायां चि-न्नकरसुता, द्रव्यगर्हायां ब्राह्मणः, द्रव्यव्युत्सर्गे प्रसन्नचन्द्रः, अनुगम-समाप्तिः ४८४ १०६४-१०६६ ज्ञानक्रियानयौ, उपसंहारः, चरणगुणस्थितस्य साधुता ४९० ॥ इति सामायिकव्याख्या ॥ भाग २ ॥ ॥ अथ चतुर्विंशतिस्तवः ॥ १०६७, १९१-१९२× चतुर्विंशतिस्तवे चतु-र्विंशतेः (६) स्तवस्य च (४) निक्षेपाः, द्रव्यस्तवे पुष्पादि, भावे स्तुतिः ४९१ १९३-१९५× भावस्तवाद्रव्यस्तवो बहुगुणो	न, संयमवतः पुष्पाद्यर्चो न ४९२ १९६× श्राद्धस्य द्रव्यस्तवः संसारप्रतनु-करणः ४९३ १* अर्हत्कीर्त्तनप्रतिष्ठा । १०६८ लोकनिक्षेपाः (८) ४९४ १९७-२०५× द्रव्ये जीवाजीवौ रूप्यरूपिणौ सप्रदेशाप्रदेशौ नित्यानित्यौ, गति-सिद्धभव्याभव्याः पुद्गलानागतातीत-धर्माद्याः स्थितिचतुष्टये, क्षेत्रे ऊर्ध्वा-धस्तिर्यग्लोकाः, काले समयावलि-काद्याः, औदयिकाद्या उत्कटरागादि-मांश्च भावे, वर्णाद्यगुरुलघुतीव्रदुः-स्वपरिणामाः पथवे ४९५ १०६९ लोकैकार्थिकानि (४) ४९६		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> नन्द्यादि-सप्तके आवश्यक ॥ १४३ ॥ </td> <td style="width: 30%; vertical-align: top;"> १०७०-१०७३ द्रव्योद्द्योतेऽध्यादि, भावे ज्ञानं, लोकालोकयोजिना भावोद्द्यो- तकराः ४९६ १०७४-१०७५ द्रव्यधर्मे गम्यादि कुलिङ्गश्च, भावे श्रुतचरणम् ४९७ १०७६-१०८० तीर्थनिक्षेपाः (४), द्रव्ये दाहो- पशमादियुतं, भावे क्रोधाद्यष्टविध- कर्मच्छेदि दर्शनादियुतम् ४९८ १०८१-१०८६ करनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गोम- हिष्यादेः (१८), भावेऽप्रशस्तः कल- हादिकरः, शस्तेऽर्थहितादिकरः ४९९ १०८७-१०९० जिनत्वाहर्त्स्वे, दर्शनादि, देश- नाकीर्तिः, अपिशब्दादन्यजिनाः, केवलित्वं च ५०० २-४* चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः ५०१ </td> <td style="width: 30%; vertical-align: top;"> १०९१-११०२ जिनानां सामान्यविशेष- नामहेतवः ५०२ ५-६* जिनप्रसादप्रार्थना, आरोग्यबोधि- समाधिप्रार्थना च ५०७ ११०३ नतिकीर्त्ये कार्थिकानि (४-४) ५०८ ११०४ मिथ्यात्वाज्ञानाव्रततमोभयो मुक्ता उत्तमाः ५०८ ११०५-१११२ प्रार्थनाया अनिदानता, भक्त्या व्यवहारभाषा, उपदेशदास्ते, भक्त्या कर्मक्षयः, तत आरोग्यादि- लाभः, निर्भक्तिकोऽनायतिः, चैत्यादेः संयमः श्रेयः । ७* सिद्धिप्रार्थना ५१० १११३ केवलेन लोकालोकप्रकाशः ५१० ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवः ॥ </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> ॥ अथ वन्दनाध्ययनम् ॥ १११४-१५ वन्दनैकार्थिकानि (४) कस्येत्या- दीनि (९) द्वाराणि च ५११ १११६ वन्दनचित्यादिषु शीतलक्षुलकादि- दृष्टान्ताः ५१२ १११७-१९ वन्दनीयावन्दनीये मालादृष्टान्तः, ज्ञानादितीर्थाद्यधिकार सूचा ५१६ (१ प्र.) पार्श्वस्थादिभेदाः ५१७ ११२०-३३ पार्श्वस्थादेर्वन्दने दोषाः, तस्य च दुर्लभा बोधिः चारित्रनाशः, चम्पक- माला-शकुनीपारग-वैदूर्यदृष्टान्ताः (असत्सङ्गदोषाः) ५१९ २०६x११३४-५१ लिङ्गाप्रामाण्यचर्चा, अ- पूर्वदृष्टे लिङ्गावशेषे च पर्यायादिमति </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> चतुर्विंश- तिस्तवा० वन्दनाध्य. ॥ १४३ ॥ </td> </tr> </table>				नन्द्यादि-सप्तके आवश्यक ॥ १४३ ॥	१०७०-१०७३ द्रव्योद्द्योतेऽध्यादि, भावे ज्ञानं, लोकालोकयोजिना भावोद्द्यो- तकराः ४९६ १०७४-१०७५ द्रव्यधर्मे गम्यादि कुलिङ्गश्च, भावे श्रुतचरणम् ४९७ १०७६-१०८० तीर्थनिक्षेपाः (४), द्रव्ये दाहो- पशमादियुतं, भावे क्रोधाद्यष्टविध- कर्मच्छेदि दर्शनादियुतम् ४९८ १०८१-१०८६ करनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गोम- हिष्यादेः (१८), भावेऽप्रशस्तः कल- हादिकरः, शस्तेऽर्थहितादिकरः ४९९ १०८७-१०९० जिनत्वाहर्त्स्वे, दर्शनादि, देश- नाकीर्तिः, अपिशब्दादन्यजिनाः, केवलित्वं च ५०० २-४* चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः ५०१	१०९१-११०२ जिनानां सामान्यविशेष- नामहेतवः ५०२ ५-६* जिनप्रसादप्रार्थना, आरोग्यबोधि- समाधिप्रार्थना च ५०७ ११०३ नतिकीर्त्ये कार्थिकानि (४-४) ५०८ ११०४ मिथ्यात्वाज्ञानाव्रततमोभयो मुक्ता उत्तमाः ५०८ ११०५-१११२ प्रार्थनाया अनिदानता, भक्त्या व्यवहारभाषा, उपदेशदास्ते, भक्त्या कर्मक्षयः, तत आरोग्यादि- लाभः, निर्भक्तिकोऽनायतिः, चैत्यादेः संयमः श्रेयः । ७* सिद्धिप्रार्थना ५१० १११३ केवलेन लोकालोकप्रकाशः ५१० ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवः ॥	॥ अथ वन्दनाध्ययनम् ॥ १११४-१५ वन्दनैकार्थिकानि (४) कस्येत्या- दीनि (९) द्वाराणि च ५११ १११६ वन्दनचित्यादिषु शीतलक्षुलकादि- दृष्टान्ताः ५१२ १११७-१९ वन्दनीयावन्दनीये मालादृष्टान्तः, ज्ञानादितीर्थाद्यधिकार सूचा ५१६ (१ प्र.) पार्श्वस्थादिभेदाः ५१७ ११२०-३३ पार्श्वस्थादेर्वन्दने दोषाः, तस्य च दुर्लभा बोधिः चारित्रनाशः, चम्पक- माला-शकुनीपारग-वैदूर्यदृष्टान्ताः (असत्सङ्गदोषाः) ५१९ २०६x११३४-५१ लिङ्गाप्रामाण्यचर्चा, अ- पूर्वदृष्टे लिङ्गावशेषे च पर्यायादिमति	चतुर्विंश- तिस्तवा० वन्दनाध्य. ॥ १४३ ॥
नन्द्यादि-सप्तके आवश्यक ॥ १४३ ॥	१०७०-१०७३ द्रव्योद्द्योतेऽध्यादि, भावे ज्ञानं, लोकालोकयोजिना भावोद्द्यो- तकराः ४९६ १०७४-१०७५ द्रव्यधर्मे गम्यादि कुलिङ्गश्च, भावे श्रुतचरणम् ४९७ १०७६-१०८० तीर्थनिक्षेपाः (४), द्रव्ये दाहो- पशमादियुतं, भावे क्रोधाद्यष्टविध- कर्मच्छेदि दर्शनादियुतम् ४९८ १०८१-१०८६ करनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गोम- हिष्यादेः (१८), भावेऽप्रशस्तः कल- हादिकरः, शस्तेऽर्थहितादिकरः ४९९ १०८७-१०९० जिनत्वाहर्त्स्वे, दर्शनादि, देश- नाकीर्तिः, अपिशब्दादन्यजिनाः, केवलित्वं च ५०० २-४* चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः ५०१	१०९१-११०२ जिनानां सामान्यविशेष- नामहेतवः ५०२ ५-६* जिनप्रसादप्रार्थना, आरोग्यबोधि- समाधिप्रार्थना च ५०७ ११०३ नतिकीर्त्ये कार्थिकानि (४-४) ५०८ ११०४ मिथ्यात्वाज्ञानाव्रततमोभयो मुक्ता उत्तमाः ५०८ ११०५-१११२ प्रार्थनाया अनिदानता, भक्त्या व्यवहारभाषा, उपदेशदास्ते, भक्त्या कर्मक्षयः, तत आरोग्यादि- लाभः, निर्भक्तिकोऽनायतिः, चैत्यादेः संयमः श्रेयः । ७* सिद्धिप्रार्थना ५१० १११३ केवलेन लोकालोकप्रकाशः ५१० ॥ इति चतुर्विंशतिस्तवः ॥	॥ अथ वन्दनाध्ययनम् ॥ १११४-१५ वन्दनैकार्थिकानि (४) कस्येत्या- दीनि (९) द्वाराणि च ५११ १११६ वन्दनचित्यादिषु शीतलक्षुलकादि- दृष्टान्ताः ५१२ १११७-१९ वन्दनीयावन्दनीये मालादृष्टान्तः, ज्ञानादितीर्थाद्यधिकार सूचा ५१६ (१ प्र.) पार्श्वस्थादिभेदाः ५१७ ११२०-३३ पार्श्वस्थादेर्वन्दने दोषाः, तस्य च दुर्लभा बोधिः चारित्रनाशः, चम्पक- माला-शकुनीपारग-वैदूर्यदृष्टान्ताः (असत्सङ्गदोषाः) ५१९ २०६x११३४-५१ लिङ्गाप्रामाण्यचर्चा, अ- पूर्वदृष्टे लिङ्गावशेषे च पर्यायादिमति	चतुर्विंश- तिस्तवा० वन्दनाध्य. ॥ १४३ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	विधिः, प्रतिमामिषं, रूप्यटङ्कचतु- र्भङ्गी ५२२ ११५२-६४ ज्ञानतीर्थवादः, आलयादिना सुविहितज्ञानं, प्रत्येकबुद्धालम्बनानां चारित्रनाशः, उन्मार्गदेशका अद्र- ष्टव्याः ५२७ ११६५-८२(१-३प्र.) दर्शनतीर्थवादः चारि- त्राच्छ्रेयो दर्शनं, अविरतश्रेणिकादयो नरकगतिकाः, चारित्रपुष्टिः, उद्यमे गुणाः ५३० ११८३-८६ सालंबनसेवा, भग्नानां तदेव प्रधानम् ५३४ ११८७-९९ नित्यवासे चैत्यभक्ताचार्यालाभे विकृतिप्रतिबन्धे च सङ्गमाचार्याः	वज्रस्वामिन उदायनर्षयः आलम्ब- नानि, तद्वादिनिराकरणम् ५३५ १२००-२ मन्दस्य सर्वोऽपि लोक आलम्बनम्, तीव्रस्य सचारित्राः ५३८ १२०३-६ ये शासनयशोघातिनस्तद्वन्दने दोषाः, ये यशःकारिणस्तद्वन्दने गुणाः ५३९ १२०७ आचार्यादेः (स्वरूपं)कृतिकर्म ५४० १२०८-११ अमात्रादिसाधुर्वन्दकः, अन्या- क्षिमादौ उपशान्तादीन् वन्देत १२१२-१३ प्रतिक्रमणादौ (८) ध्रुवाध्रुवाणि वन्दनानि ५४१ १२१४-१८ पञ्चविंशतिरावश्यकानि तत्फ- लम् ५४२	१२१९-२६ वन्दनदोषाः (३२) ५४३ १२२७-२९ वन्दनाफलं (विनयादितोऽक्रि- यान्तं) विनयश्रेष्ठता च ५४५ २ सू. वन्दनकसूत्रम् । ५४६ १२३०-३३ इच्छादीनि (६), इच्छाऽनुज्ञा- ऽवग्रहाणां निक्षेपाः (६-६-६) ५४८ १२३४-३५ अनुज्ञाप्य प्रवेशः, शिरःस्पर्शः, यात्रायापणे क्षामणा ५४९ १२३६-३७ आचार्यवचनानि, वन्दनप्रती- च्छाविधिश्च १२३८-४२ क्रियानैक्यपरिहारः द्वितीयव- न्दनशङ्कापरिहारः, वन्दनफलं च ५५० ॥ इति वन्दनाध्ययनम् ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ३-४ ध्यानस्थितिः, चिन्ताध्यानान्तरे, ध्यानसन्तानः । १५ ध्यानभेदास्तत्फलं च ५८४ १६-१८ आर्त्तध्यानभेदाः, संसारवर्द्धनं, न मुनेः शस्तालम्बनस्य, संसारबीजता तस्य, लेश्यानिमित्तानि स्वामिनश्च । १९-२७ रौद्रस्य भेदाः, स्वामिनो, लेश्या लिङ्गानि च ५८८ १२८-६४ धर्मध्यानस्य भावनादेशकालासनाल- म्बनक्रमध्याव्यतध्यात्रनुप्रेक्षालेश्या- लिङ्गफलानि, ज्ञानदर्शनचारित्रवैरा- ग्यभावनाः, स्थानकालासनानि, वाच- नादीन्यालम्बनानि, आज्ञाया विशेष- स्वरूपं, क्रमभङ्गाः, गहने श्रद्धास्थितिः, रागादिदोषध्यानं, कर्मप्रदेशादिध्यानं, लक्षणसंस्थानादि लोकक्षित्यादि जीव- लक्षणादि संसारसमुद्रत्रतपोतध्यानं, क्षीणोपशान्ता धर्मस्य स्वामिनः, पूर्व- धरकेवलिनः शुक्लस्य, ध्यानोपर- मेऽनिलताद्याः, लेश्याः पीताद्याः, श्रद्धादि लिङ्गम् । ६०२ १६५-९२ शुक्लस्य क्षान्त्याद्यालम्बनानि, विषभा- रतोयापनयनवद् योगरोधः, नानानय- पूर्वगतेन ध्यानं, केवलिनोऽन्यौ भेदौ, आश्रवद्वाराद्यनुप्रेक्षा, शुद्धा लेश्या, अवधादीनि लिङ्गानि । ६०९ १९३-१०५ धर्मशुक्लफलानि, उपसंहारश्च । ६०९ ॥ इति ध्यानशतकम् ॥ १३ पडि० पंचहिं किरियाहिं (२५ भेदाः) ६११ १४ पडि० पंचहिं काम० । (ईर्यासमि- त्यादिषु दृष्टान्ताः) ६१५ ॥ अथ पारिष्ठापनिकानिर्युक्तिः ॥ १२८६-८९ प्रतिज्ञा एकेन्द्रिये तज्जाताजात- भेदौ आभोगानाभोगजात्मपरग्रह- णानि । ६१९ २०७४ तज्जातस्याकरादौ, अतज्जावस्य कर्ष- रादौ । ६२२ १२९०-९२ नोएकेन्द्रियत्रसेषु तज्जातात- ज्जाते ६२३ १२९३-१३१५ सचित्तसंयतमनुष्यपञ्चेन्द्रि- यस्याशिवादौ कारणेऽनाभोगेन		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके आवश्यक ॥ १४५ ॥	वा दीक्षितस्य कटिपट्टकादियतना, व्यवहारः, गुणयुक्तसूत्रानध्यापनं, व्युत्सर्जनं, जड्मे मम्मणे च विधिः। ६२८ १३१६-५२ अचित्तसंयते गीतार्थेन परिष्ठापने प्रतिलेखनादीनि द्वाराणि (१६), महास्यण्डिलप्रत्युपेक्षा (१ प्र.) दिक् तत्फलं च; अनन्तककाष्ठयोर्ग्रहणं, अविषादः, अधिष्ठाने विधिः, पुत्तलकविधिः, आचमनं, तत्पथाऽनिवर्त्तनं, समा शय्या, ककारतकारकरणं, अभिप्रासं शीर्षं, चिह्नं, उत्थाने त्यागः, २०८ प्रवेशे योगवृद्धिः, नामग्रहणे विधिः, अप्रदक्षिणत्वं कायोत्सर्गे विधिः क्षपणा-	ऽस्वाध्यायौ, शकुनाः, गतिः, अशिवे- ऽपवादः। ६३७ १३५३-७० असंयते बाले, अचित्तवनीपकादौ, नोमनुजसचित्ताचित्ते जलचरादौ, नोत्रसे आहारादौ, आधाकर्मादौ त्रिःस्थानं श्रावणं, आचार्याद्यर्थेऽजातं, नोआहारोपकरणे, वस्त्रे रेखा पात्रे चीवरं (१प्र.) मूलोत्तरशुद्ध्यै एकं द्वे त्रीणि, उच्चारदौ छायादिगद्वयं, अनुकूलेभ्यो दानम्। ६३९ ॥ इति पारिष्ठापनिकानिर्युक्तिः ॥ १५ पडि० छद्दिं जीव० ५१ लेख्यासु जम्बूखादकग्रामघातकट्टान्तौ, भयानि मदाश्च। ६४४	×२ नव ब्रह्मगुप्तयः। ×३ दशधा यतिधर्मः। ×४ (११) श्रावकप्रतिमाः। ×५ (१२) साधुप्रतिमाः। ×६ (१३) क्रियास्थानानि। १६ चोदसहिं भूमगामेहिं। ६४९ ×७ (१४) भूतप्रायाः। ×८-९ (१४) गुणस्थानानि। ×१०-११ (१५) परमाधार्मिकाः। ×१२-१३ (१६) समयादीन्यध्ययनानि। ×१४ सप्तदशविधः संयमः। ×१५ (१८) अब्रह्माणि। ×१६-१७ (१९) ज्ञाताध्ययनानि। ×१८-२० (२०) असमाधिस्थानानि।	ध्यानश- तकं पारि- ष्ठापनि- कानि, ॥ १४५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १७ एकवीसाए सबलेहिं । ६५५ ×२१-३० एकविंशतिः शबलाः । ×३१-३३ त एव प्रकारान्तरेण । ×३४-३५ (२२) परीषदाः । ×३६ (२३) पुण्डरीकादीनि अध्ययनानि ×३७ (२४) देवाः । ×३८-४२ पञ्चविंशतिर्भावनाः । +४३ (२६) उद्देशानां कालाः ×४४-४५ (२७) अनगारगुणाः ×४६-४८ (२८) आचारप्रकल्पाः । ×४९-५० (२९) पापश्रुतानि । ×५१-६५ (३०) मोहनीयस्थानानि । ×६६ (३१) सिद्धगुणाः । ×६७ त एव प्रकारान्तरेण । ॥ अथ योगसङ्ग्रहाः ॥ १३७१-७५ आलोचनानिरपलापतादयो यो- गसंग्रहाः (३२) ६६३ १३७६ आलोचनायामट्टनः दृष्टान्तः ६६४ १३७७ निरपलापतायां दृढमित्रः । ६६६ १३७८ द्रव्यापदि धर्मघोषः । ६६७ १३७९ भावापदि दण्डः । १३८० अनिश्रितोपधाने महागिरिः । ६६८ १३८१ शिक्षायां स्थूलभद्रः, (क्षितिप्रति- ष्ठितचनकपुरकषभपुरकुशाग्रपुरराज- गृहचम्पापाटलिपुत्राणि नन्दशक- टालादयश्च) ६९८ १३८२ निष्प्रतिकर्मत्वे नागदत्तः १३८३-१३८४ अज्ञातत्वे धर्मवसुशिष्यौ, पालकसुतराष्ट्रवर्धनसुतावन्तीसेनम- णिप्रभौ । ६९९ १३८५-१३८९ अलोभे क्षुल्लकः । यशोभद्रा- राज्ञ्यादीनां 'सुदु वाइय'मिति गीति- कायां दानं, तितिक्षायां सुरेन्द्र- दत्तः । ७०२ १३९० आर्जवेऽङ्गर्षिः । ७०४ १३९१-१३९३ शौचे यज्ञयशःपुत्रयज्ञदत्तपुत्र- नारदः (सीमन्धराद्या जिनाः) ७०५ १३९४ सम्यक्त्वे विमलप्रभाकरौ ७०६ १३९५ समाधौ सुव्रतर्षिः । ७०७ १३९६ आचारे ज्वलनदहनौ । १३९७ विनये निम्बकः । ७०८ १३९८ धृतिमयोर्मतिसुमयौ ।		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके आवश्यक ॥ १४६ ॥	१३९९-१४०० संवेगे वारत्रकर्षिः । ७०९ १४०१ द्रव्यप्रणिधौ गुग्गुलः, भावप्रणिधौ भदन्तमित्रकुणालौ । ७१२ १४०२-३ सुविधौ वैतरणिः । ७१३ १४०४ संवरे नन्दश्रीः । १४०५ आत्मदोषोपसंहारे जिनदेवः । ७१४ १४०६ विरक्तत्वे देवलासुतः । १४०७-०८ मूलगुणप्रत्याख्याने शत्रुञ्जयः, उत्तरगुणप्रत्याख्याने धर्मघोषधर्म- यशसौ । ७१५ २०९-२१६× व्युत्सर्गे प्रत्येकबुद्धाः (४), वृषभेन्द्रध्वजवलयचूतवृक्षस्वरूपम् । ७१६ १४०९-१० ऋजुवक्रयोर्गुणदोषाः । ७२१	१४११-१२ अप्रमादे मगधसुन्दरी, 'पत्ते वसंतमासे' गीतिका । १४१३ लवालवे विजयः । ७२१ १४१४ ध्याने पुष्पभूतिः । ७२२ १४१५ मारणान्तिके धर्मरुचिः ७२३ १४१६ स्नेहत्यागे जिनदेवः । १४१७ प्रायश्चित्ते धनगुप्तः, आराधनायां मरुदेवी । ७२४ ॥ इति योगसङ्ग्रहाः ॥ १८ तेत्तीसाए आसायणार्हि । ७२५ ×६८-७१ त्रयस्त्रिंशदाशातनाः, अर्हदाशा- तनादिकाः सूत्रोक्ता वा ७२७ १९ अर्हदाशातनाः (१९) ७२८ २१७-२१९× सप्तद्वीपोद्धिः प्रजापतिकृतः	प्रकृतिपुरुषरूपो वा लोक इत्यस्य खण्डनम् । ७३० २० व्याविद्धादिकाः (१४) श्रुताशा- तनाः । ७३१ ॥ अथ अस्वाध्यायनिर्युक्तिः ॥ १४१८-२३ अस्वाध्यायनिर्युक्तिप्रतिज्ञा संय- मघातौपपातिकसादिव्यव्युद्गृह्णा- रीरैः परसमुत्थं पञ्चधा । (स्लेच्छ- राजदृष्टान्तः सोपनयः) ३१७ १४२४-२६ महिकाभिन्नवर्षसच्चित्तरजांसि द्रव्यक्षेत्रकालभावैः त्याज्यानि, सो- पनयपञ्चपुरुषीदृष्टान्तः ७३२ २२०-२२१× महिकादिस्वरूपम् । ७३३ १४२७ संयमौपघातिके यतना । ७३४	योगसंग्रहाः अस्वाध्या- यनि. ॥ १४६ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १४२८-३० पांशुमांसादिवर्षेऽहोरात्रं, पां- श्चादिस्वरूपं, स्वाभाविके चैत्रीयका- योत्सर्गे स्वाध्यायः । १४३१-४० गन्धर्वनगरादि सादिव्यं, ग्रहणे आचीर्णानाचीर्णादि, महासहाः (४), अकालस्वाध्याये दोषाः ७३५ १४४१-४५ दण्डिकादिव्युद्गहे अहते मृतके विकीर्णे च विधिः । ७३८ १४४६-५०, २२२×जलस्थलखचराणां शोणि- तादौ विधिः, अन्तर्बहिर्धौतपक्वयो- र्महाकाये च विधिः । ७४१ १४५१, २२३-२२५× अण्डभेदे विधिः, अस्वाध्यायिकप्रमाणं, जरायोः पौ- रुषीत्रयं, रुधिरस्पर्शेऽस्वाध्यायः । १४५२-९९, २२६-२३१× मानुष्यरुधिरादौ, जन्मनि सप्ताष्ट दिनाः, ऋतौ त्रयं, दन्ते त्यागः, अस्मिन् द्वादश वर्षाणि, अस्थिशोधने मृतकनयने च विधिः । कालप्रतिलेखनायां भूमि (२७) प्रति- लेखना, श्राद्धादिकथाऽभावे सर्वे कायोत्सर्गस्थाः, प्रतिक्रमणं, कालप्र- हणविधिः, गण्डकदृष्टान्तः, काल- ग्राहिगुणाः, १-२ प्र(सिद्ध). व्याघाताः, सर्वैः प्रस्थापनं, शङ्काविधिः, उत्क्रादिविधिः, तारा- दर्शनं कालग्रहणकालप्रमाणं, प्रोषि- तपतिविधिः, हते नववेला ग्रहणं, व्याघातिमे न गण्डकमरुकदृष्टान्तौ । ७५४ १५००-१४ आत्मसमुत्थेऽस्वाध्याये व्रण- विधिः, श्रमण्या इतरस्मिन् सप्त बन्धाः, अस्वाध्याये श्रुताभक्ष्यादि, उपसंहारश्च । (चतुस्त्रिंशतः शतं यावत्स्थानानि) ७५७ ॥ इति अस्वाध्यायनिर्युक्तिः ॥ २१ जिननमस्कारः । ७६० २२ प्रवचनवर्णनम् । २३ श्रद्धानादिस्वरूपं, असंयमादित्यागः । ७६१ २४ अस्मृतप्रतिक्रमणम् । ७६२ २५ मुनिवन्दनम् । (१८००० शीलाङ्गानि) ८-९* सर्वजीवक्षामणानि ७६३ ॥ इति प्रतिक्रमणाध्ययनम् । भाग ३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	नन्द्यादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४७ ॥	॥ अथ कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥ १५१५ प्रायश्चित्तभेदाः (१०) १५१६-२४ तदुद्भवागन्तुकव्रणदृष्टान्तः सो- पनयः । ७६४ १५२५ कायोत्सर्गे निक्षेपैकार्थिकादीनि (११) द्वाराणि । ७६६ २३२-२३५x कायस्योत्सर्गस्य च निक्षेपाः (१२-६) (१प्र.) १५२६-४३ गतिकायसौजसकर्मणं, निकायकायो जीविकायः, द्रव्यका- यचर्चा, पर्यायकायः समूहः, भार- कायः कापोती, कायैकार्थिकानि (१३) १५४४-४९ उत्सर्गस्य निक्षेपाः (६)	(१प्र.) एकार्थिकानि (११) च, मिश्राचर्यायां चेष्टा, उपसर्गेऽभिभवः । ७७१ १५५०-५५ सांवत्सरिकोऽभिभवः, योद्धृ- ष्टान्तश्च । ७७१ १५५६-५८ उच्छ्रितोच्छ्रितादिभेदाः (९) ७७२ १५५९-७५ कायोत्सर्गगुणाः, ध्यानलक्षण- फले, ध्यानस्थानं, न केवलं मनः- परिणामो ध्यानं, भङ्गिकश्रुते त्रिविधं ध्यानम् । ७७३ १५७६-९३ उच्छ्रितोच्छ्रितादि (९) स्वरूपं, ध्यानचित्तयोर्भेदः । ७७६ २६ इच्छामि ठाडुं काउत्सर्गं । ७७८ २७ तत्स उत्तरीकरणेन० अन्नत्थ० ७७९ (१-२प्र.) १५९४ एकमनसोऽतिचारज्ञानं ततः शुद्धिश्च । ७८०	१५९५ दिवसातिचाराः । १५९६-९७ मुखवस्त्रिकादितोऽतिचारचिन्तनं ध्यानं च । ७८१ १५९८-१६०१ दैवसिकादौ गमत्रयं, तच्छङ्का- समाधाने । १६०२-३ मिथ्यादुष्कृताक्षरार्थः । १६०४-६ उत्तरप्रायश्चित्तादिव्याख्या ७८२ १६०७-१३ उच्छ्वासाद्यनिरुम्भणं, वातनिस- र्गादौ यतना, अग्न्याद्याकाराः । ७८३ १६१४-२० ससूर्ये भूमिं प्रेक्ष्य काले कायो- त्सर्गः, गुरोर्द्विगुणं दैवसिकं, प्रति- क्रमणविधिः । ७८४ २८ सव्वलोए अरिहंत० ७८६ २९, १०-१३* पुक्खरवरदीवङ्गे ७८८	कायोत्स- र्गाध्य. <

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"><tr><td>३०, १४-१८* सिद्धाणं बुद्धाणं । ७८९ १६२१ वर्द्धमानस्तुतित्रयम् । ७९० १६२२-२४ दैवसिकरात्रिकयोः कायोत्सर्ग- व्यत्ययः, षण्मासीतपश्चितनम् । ७९१ १६२५ क्षामणेषु गुरुवाक्यानि । ३१ क्षामणासूत्रम् । ७९२ ३२-३५ पाक्षिकक्षामणासूत्राणि । ७९३ २३६-२३७x चातुर्मासिकादौ देवताकायो- त्सर्गादि । ७९४ १६२६-२९ दैवसिकादिकायोत्सर्गमानम् । ७९५ १६३०-३५, २३८x गमनागमनादौ मुक्तादौ विहारे उद्देशादौ च कायोत्सर्गः (प्र.१-१.) दुःस्वप्ने नावुत्तारादौ च कायो- त्सर्गः । ७९७</td><td>१६३६ पादसमा उच्छ्वासाः । ७९७ १६३७-४०, २३९-२४० (१ प्र.) निर्माय- मुत्सर्गः । १६४१-४४ कायोत्सर्गे विधिः, दोषाश्च (१९) ७९८ १६४५-४७ वासीचन्दनकल्पस्योपसर्गसहस्य शुद्धः, सुभद्राया दृष्टान्ताः (४) फलं च । ७९९ २४१x क्रकचवत्कर्मनाशः । ८०१ १६४८-५१ कायोत्सर्गे भावना । ॥ इति कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥ ॥ अथ प्रत्याख्यानध्ययनम् ॥ १६५२ प्रत्याख्यानप्रत्याख्यावृत्प्रत्याख्येयानि</td><td>पर्वत् कथनविधिः फलं च द्वा- राणि ८०३ २४२-२४७x (१प्र) प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६) द्रव्ये राजसुतादृष्टान्तः, भावे नोद्भूते मूले सर्वदेशे इत्वरयाव- त्कथिके, मूलगुणाः (५) ८०५ १६५३-५८ श्रावकभेदाः (३२) (१४७ भङ्गाः) ८०७ (१.१-४प्र.)अणुव्रतभङ्गा । (१६८०८)८०७ ३६ सम्यक्त्वालापकः सातिचारः । (अभियोगेषु कार्तिक-वरुणश्रा- वक-भिक्षुपासकसौराष्ट्रदृष्टान्ताः) अ- तिचारेषु पेयाअन्धापहृतनृपचौरदुर्ग- न्धिकादृष्टान्ताः) (३६३ पाख- ण्डिनः) ८११</td></tr></table>	३०, १४-१८* सिद्धाणं बुद्धाणं । ७८९ १६२१ वर्द्धमानस्तुतित्रयम् । ७९० १६२२-२४ दैवसिकरात्रिकयोः कायोत्सर्ग- व्यत्ययः, षण्मासीतपश्चितनम् । ७९१ १६२५ क्षामणेषु गुरुवाक्यानि । ३१ क्षामणासूत्रम् । ७९२ ३२-३५ पाक्षिकक्षामणासूत्राणि । ७९३ २३६-२३७x चातुर्मासिकादौ देवताकायो- त्सर्गादि । ७९४ १६२६-२९ दैवसिकादिकायोत्सर्गमानम् । ७९५ १६३०-३५, २३८x गमनागमनादौ मुक्तादौ विहारे उद्देशादौ च कायोत्सर्गः (प्र.१-१.) दुःस्वप्ने नावुत्तारादौ च कायो- त्सर्गः । ७९७	१६३६ पादसमा उच्छ्वासाः । ७९७ १६३७-४०, २३९-२४० (१ प्र.) निर्माय- मुत्सर्गः । १६४१-४४ कायोत्सर्गे विधिः, दोषाश्च (१९) ७९८ १६४५-४७ वासीचन्दनकल्पस्योपसर्गसहस्य शुद्धः, सुभद्राया दृष्टान्ताः (४) फलं च । ७९९ २४१x क्रकचवत्कर्मनाशः । ८०१ १६४८-५१ कायोत्सर्गे भावना । ॥ इति कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥ ॥ अथ प्रत्याख्यानध्ययनम् ॥ १६५२ प्रत्याख्यानप्रत्याख्यावृत्प्रत्याख्येयानि	पर्वत् कथनविधिः फलं च द्वा- राणि ८०३ २४२-२४७x (१प्र) प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६) द्रव्ये राजसुतादृष्टान्तः, भावे नोद्भूते मूले सर्वदेशे इत्वरयाव- त्कथिके, मूलगुणाः (५) ८०५ १६५३-५८ श्रावकभेदाः (३२) (१४७ भङ्गाः) ८०७ (१.१-४प्र.)अणुव्रतभङ्गा । (१६८०८)८०७ ३६ सम्यक्त्वालापकः सातिचारः । (अभियोगेषु कार्तिक-वरुणश्रा- वक-भिक्षुपासकसौराष्ट्रदृष्टान्ताः) अ- तिचारेषु पेयाअन्धापहृतनृपचौरदुर्ग- न्धिकादृष्टान्ताः) (३६३ पाख- ण्डिनः) ८११
३०, १४-१८* सिद्धाणं बुद्धाणं । ७८९ १६२१ वर्द्धमानस्तुतित्रयम् । ७९० १६२२-२४ दैवसिकरात्रिकयोः कायोत्सर्ग- व्यत्ययः, षण्मासीतपश्चितनम् । ७९१ १६२५ क्षामणेषु गुरुवाक्यानि । ३१ क्षामणासूत्रम् । ७९२ ३२-३५ पाक्षिकक्षामणासूत्राणि । ७९३ २३६-२३७x चातुर्मासिकादौ देवताकायो- त्सर्गादि । ७९४ १६२६-२९ दैवसिकादिकायोत्सर्गमानम् । ७९५ १६३०-३५, २३८x गमनागमनादौ मुक्तादौ विहारे उद्देशादौ च कायोत्सर्गः (प्र.१-१.) दुःस्वप्ने नावुत्तारादौ च कायो- त्सर्गः । ७९७	१६३६ पादसमा उच्छ्वासाः । ७९७ १६३७-४०, २३९-२४० (१ प्र.) निर्माय- मुत्सर्गः । १६४१-४४ कायोत्सर्गे विधिः, दोषाश्च (१९) ७९८ १६४५-४७ वासीचन्दनकल्पस्योपसर्गसहस्य शुद्धः, सुभद्राया दृष्टान्ताः (४) फलं च । ७९९ २४१x क्रकचवत्कर्मनाशः । ८०१ १६४८-५१ कायोत्सर्गे भावना । ॥ इति कायोत्सर्गाध्ययनम् ॥ ॥ अथ प्रत्याख्यानध्ययनम् ॥ १६५२ प्रत्याख्यानप्रत्याख्यावृत्प्रत्याख्येयानि	पर्वत् कथनविधिः फलं च द्वा- राणि ८०३ २४२-२४७x (१प्र) प्रत्याख्याननिक्षेपाः (६) द्रव्ये राजसुतादृष्टान्तः, भावे नोद्भूते मूले सर्वदेशे इत्वरयाव- त्कथिके, मूलगुणाः (५) ८०५ १६५३-५८ श्रावकभेदाः (३२) (१४७ भङ्गाः) ८०७ (१.१-४प्र.)अणुव्रतभङ्गा । (१६८०८)८०७ ३६ सम्यक्त्वालापकः सातिचारः । (अभियोगेषु कार्तिक-वरुणश्रा- वक-भिक्षुपासकसौराष्ट्रदृष्टान्ताः) अ- तिचारेषु पेयाअन्धापहृतनृपचौरदुर्ग- न्धिकादृष्टान्ताः) (३६३ पाख- ण्डिनः) ८११		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'						
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)						
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके आवश्यकै ॥ १४८ ॥	<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top; padding-right: 10px;"> ३७ स्थूलप्राणातिपातप्रत्याख्यानं व्रतमाद्यं सातिचारम् । कोङ्कणकसाप्तपदिकक्षेम- दृष्टान्ताः, व्रतविधिश्च) ८१८ ३८ सातिचारं द्वितीयम्, (कोङ्कणकमथु- रावणिक्परिब्राह्मणान्ताः) ८२० ३९ तृतीयं सातिचारम् । (गोष्ठीश्रा- वकः) ८२२ ४० चतुर्थं सातिचारम् । (मात्रादिग- मने दृष्टान्ताः, कच्छकुलपुत्रकश्च) ८२३ ४१ पञ्चमं सातिचारम् । (लोभ- नन्दिः) ८२५ ४२ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८२७ ४३ उपभोगादिपरिमाणं सातिचारम् । ८२८ </td><td style="width: 50%; vertical-align: top; padding-left: 10px;"> ४४ कर्मादानानि । ८२९ ४५ अनर्थदण्डः सातिचारः । ८३० ४६, १९-२१* सामायिके स्वरूपं शिक्षादि भे- दाः सर्वपदाभगनमतिचाराश्च । ८३१ ४७ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८३४ ४८ पौषधोपवासः सातिचारः । ८३५ ४९ अतिथिसंविभागः । ८३७ ५० अणुव्रतादीनां कालः, सम्यक्त्वभेदाः, प्रतिमाद्याः, संलेखनाऽतिचाराः । ८३८ १६५९-६१ उत्तरगुणे अनागतातिक्रान्तादि- (१०) प्रत्याख्यानभेदाः । ८४० १६६२-६३ अनागतं पर्युषणादितपः । ८४१ १६६४-६९ अतिक्रान्तं कोटिसहितं निय- ञ्जितं (प्रथमसंहनने) ८४२ </td></tr> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top; padding-right: 10px;"> १६७० साकारप्रत्याख्यानं । ८४३ १६७१ निराकारम् । ८४४ १६७२ दत्त्यादिभिः कृतपरिमाणम् । १६७३ निरवशेषम् । १६७४-७५ अङ्गुष्ठमुष्ट्यादि सकेतं पौरुष्या- द्यद्वाप्रत्याख्यानं च । ८४५ १६७६-८१ एकविधमेकविधेनैतानि ८४६ १६८२, २४८-२४९* श्रद्धाकुलानां दर्शनं दानं च, शुद्धिषट्कप्रतिज्ञा, श्रद्धानज्ञानविन- यानुभाषणानुपालनाभावाः । ८४७ २५०-२५७* श्रद्धानादिस्वरूपम् । ५१ नमस्कारसहितम् ८४९ १६८३-८४ आहारभेदव्युत्पत्ती । ८५० १६८५-८७ सुखेन श्रद्धार्यं भेदाः । </td><td style="width: 50%; vertical-align: top; padding-left: 10px;"> ॥ १४८ ॥ </td></tr> </table>		३७ स्थूलप्राणातिपातप्रत्याख्यानं व्रतमाद्यं सातिचारम् । कोङ्कणकसाप्तपदिकक्षेम- दृष्टान्ताः, व्रतविधिश्च) ८१८ ३८ सातिचारं द्वितीयम्, (कोङ्कणकमथु- रावणिक्परिब्राह्मणान्ताः) ८२० ३९ तृतीयं सातिचारम् । (गोष्ठीश्रा- वकः) ८२२ ४० चतुर्थं सातिचारम् । (मात्रादिग- मने दृष्टान्ताः, कच्छकुलपुत्रकश्च) ८२३ ४१ पञ्चमं सातिचारम् । (लोभ- नन्दिः) ८२५ ४२ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८२७ ४३ उपभोगादिपरिमाणं सातिचारम् । ८२८	४४ कर्मादानानि । ८२९ ४५ अनर्थदण्डः सातिचारः । ८३० ४६, १९-२१* सामायिके स्वरूपं शिक्षादि भे- दाः सर्वपदाभगनमतिचाराश्च । ८३१ ४७ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८३४ ४८ पौषधोपवासः सातिचारः । ८३५ ४९ अतिथिसंविभागः । ८३७ ५० अणुव्रतादीनां कालः, सम्यक्त्वभेदाः, प्रतिमाद्याः, संलेखनाऽतिचाराः । ८३८ १६५९-६१ उत्तरगुणे अनागतातिक्रान्तादि- (१०) प्रत्याख्यानभेदाः । ८४० १६६२-६३ अनागतं पर्युषणादितपः । ८४१ १६६४-६९ अतिक्रान्तं कोटिसहितं निय- ञ्जितं (प्रथमसंहनने) ८४२	१६७० साकारप्रत्याख्यानं । ८४३ १६७१ निराकारम् । ८४४ १६७२ दत्त्यादिभिः कृतपरिमाणम् । १६७३ निरवशेषम् । १६७४-७५ अङ्गुष्ठमुष्ट्यादि सकेतं पौरुष्या- द्यद्वाप्रत्याख्यानं च । ८४५ १६७६-८१ एकविधमेकविधेनैतानि ८४६ १६८२, २४८-२४९* श्रद्धाकुलानां दर्शनं दानं च, शुद्धिषट्कप्रतिज्ञा, श्रद्धानज्ञानविन- यानुभाषणानुपालनाभावाः । ८४७ २५०-२५७* श्रद्धानादिस्वरूपम् । ५१ नमस्कारसहितम् ८४९ १६८३-८४ आहारभेदव्युत्पत्ती । ८५० १६८५-८७ सुखेन श्रद्धार्यं भेदाः ।	॥ १४८ ॥
३७ स्थूलप्राणातिपातप्रत्याख्यानं व्रतमाद्यं सातिचारम् । कोङ्कणकसाप्तपदिकक्षेम- दृष्टान्ताः, व्रतविधिश्च) ८१८ ३८ सातिचारं द्वितीयम्, (कोङ्कणकमथु- रावणिक्परिब्राह्मणान्ताः) ८२० ३९ तृतीयं सातिचारम् । (गोष्ठीश्रा- वकः) ८२२ ४० चतुर्थं सातिचारम् । (मात्रादिग- मने दृष्टान्ताः, कच्छकुलपुत्रकश्च) ८२३ ४१ पञ्चमं सातिचारम् । (लोभ- नन्दिः) ८२५ ४२ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८२७ ४३ उपभोगादिपरिमाणं सातिचारम् । ८२८	४४ कर्मादानानि । ८२९ ४५ अनर्थदण्डः सातिचारः । ८३० ४६, १९-२१* सामायिके स्वरूपं शिक्षादि भे- दाः सर्वपदाभगनमतिचाराश्च । ८३१ ४७ दिग्ब्रतं सातिचारम् । ८३४ ४८ पौषधोपवासः सातिचारः । ८३५ ४९ अतिथिसंविभागः । ८३७ ५० अणुव्रतादीनां कालः, सम्यक्त्वभेदाः, प्रतिमाद्याः, संलेखनाऽतिचाराः । ८३८ १६५९-६१ उत्तरगुणे अनागतातिक्रान्तादि- (१०) प्रत्याख्यानभेदाः । ८४० १६६२-६३ अनागतं पर्युषणादितपः । ८४१ १६६४-६९ अतिक्रान्तं कोटिसहितं निय- ञ्जितं (प्रथमसंहनने) ८४२						
१६७० साकारप्रत्याख्यानं । ८४३ १६७१ निराकारम् । ८४४ १६७२ दत्त्यादिभिः कृतपरिमाणम् । १६७३ निरवशेषम् । १६७४-७५ अङ्गुष्ठमुष्ट्यादि सकेतं पौरुष्या- द्यद्वाप्रत्याख्यानं च । ८४५ १६७६-८१ एकविधमेकविधेनैतानि ८४६ १६८२, २४८-२४९* श्रद्धाकुलानां दर्शनं दानं च, शुद्धिषट्कप्रतिज्ञा, श्रद्धानज्ञानविन- यानुभाषणानुपालनाभावाः । ८४७ २५०-२५७* श्रद्धानादिस्वरूपम् । ५१ नमस्कारसहितम् ८४९ १६८३-८४ आहारभेदव्युत्पत्ती । ८५० १६८५-८७ सुखेन श्रद्धार्यं भेदाः ।	॥ १४८ ॥						
	प्रत्याख्या- नाध्य.						

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४०] मूलसूत्र-१ 'आवश्यक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १६८८ शब्दाङ्कावः प्रमाणम् । ८५१ १६८९ स्पृष्टपालितशोभिततीरितकीर्तितारा- द्वपदानामर्थः । ८५१ १६९०-९२ आश्रवद्वारपिधानादि मोक्षा- न्तं फलम् । १६९३-९७ प्रत्याख्याने आकाराः । ८५२ ५२ पौरुषीप्रत्याख्यानम् । ५३ एकाशनप्रत्याख्यानम् । (विकृतौ अभिग्रहे च भेदाः) ८५३ १६९८ विकृतौ अष्टनवाकारस्थानम् । ८५४ ५४ निर्विकृतिकप्रत्याख्यानम् । १६९९-१७०१ आचामाम्लभेदाः कुडङ्ग- पञ्चकं च । १७०२-५ विकृतिकनिर्विकृतिकविचारः । ८५७ १७०६ पारिष्ठापनिकाविचारः । ८५८ १७०७-८ पारिष्ठापनिकाविधिः । ८५९ १७०९-१२ ज्ञेतरयोश्चतुर्भङ्गी, प्रत्याख्यात- प्रत्याख्यायकस्वरूपम् । ८६० १७१३ द्रव्येऽशनादि भावेऽज्ञानादि प्रत्या- ख्येयम् । ८६१ १७१४ उपस्थितविनीताव्याक्षिप्तोपयुक्ताः पर्वदः । ८६२ १७१५ आज्ञयाऽऽज्ञाग्राह्यो दृष्टान्तादितरो वाच्यः । १७१६ प्रत्याख्यानस्य फले धम्मिल्लदामन्नकौ दृष्टान्तौ । १७१७ प्रत्याख्यानान्मोक्षः । ८६४ १७१८-१७१९ ज्ञानक्रियानये स्थितपक्षश्च, चरणगुणस्थितः साधुरिति । ८६४ ॥ इति प्रत्याख्यानाध्ययनम् ॥ ॥ इत्यावश्यकं बृहद्विषयानुक्रमः ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- सप्तके ४ ओघनि- र्युक्तौ ॥ १४९ ॥ ॥ ओघनिर्युक्तिवृद्धविषयानुक्रमः ॥ सामाचार्युपक्रमेणाऽऽवश्यके सम्बन्धयोजनारूप उपोद्धातः ॥ १ १-२ अर्हदादिनमस्कारः, चरणानुयोगा- दल्पाक्षरादिनिर्युक्तिप्रतिज्ञा । २ १× ओघैकार्थिकानि (४), निर्युक्तिश- ब्दार्थः । ५ २× चरणसप्ततिः । ६ ३× करणसप्ततिः । ४× अन्यानुरयोगसत्त्वात्पञ्चमी । ७ ५× चरणधर्मगणितद्रव्येषु यथाक्रमं महर्द्धिकता । ८ ६-७× शेषाणां चरणार्थत्वाच्चरणं महत् । ८-१०× वज्रकनकरजतलोहाकरदृष्टान्तः । ९ ११-१२+ अल्पाक्षरमहार्थचतुर्भङ्गी, ओघ- ज्ञातदृष्टिवादकर्पासादिदृष्टान्ताः । १० १३-१४× प्रथमालिकावमभक्तदृष्टान्तेनौघ- निर्युक्तिः । ११ ॥ अथ प्रतिलेखना ॥ ३ प्रतिलेखनापिण्डोपधिप्रमाणानायतन- वर्जनप्रतिसेवाऽऽलोचनाविशुद्धयो द्वाराणि (७) । ११ ४ प्रतिलेखनैकार्थिकानि (१०) । १२ ५ प्रतिलेखकप्रतिलेखनाप्रतिलेखित- व्यानि कुम्भवत् । १३ ६-७ एकोऽनेके, निष्कारणिका इतरे च, कारणिकैकत्वकथनम् । ८ अशिवदुर्भिक्षादीनि (१०) कार- णानि । १३ १५-१६+ अतिशयाद्यैरर्वाङ् द्वादशवर्ग्या नि- र्गमः । १४ १७-१८+ अशिवकारिणीस्वरूपं तत्र वर्ग्या- णि च । १९-२२× ग्लाने उद्वर्त्तनादिविधिः, अभि- प्रवृद्धिः, सांभोगिके निक्षेपः, वृन्द- घाते भिन्नता, एकीभवने आलोच- प्रयोजनं क्षेत्रप्रति- लेखना. ॥ १४९ ॥		
	[आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नादि, सोममुख्यादावनन्तरविशेष- स्थानादि । १५ २३-२७+ अवमे गोदृष्टान्तो भेदे निर्विषय- भक्तनिषेधोपकरणजीवहरेषु, अन्त्य- योर्भेदः, अभिमरादिशङ्कया राजद्वेषः, मालवक्षोभः, यादेन राजद्वेषः । १८ २८+ निर्यापणाय सूत्रार्थपृच्छायै प्रतिच- रितुं वा भेदः । २० २९-३०+ स्फटिते मन्दगतिः औषधायः शैक्षो वा देवतादेशश्चेति भेदकारणानि । ३१-३२+ चरमायां संदेशः, आभिप्रहिका- भावे गणामन्त्रणं, पृच्छाविधिः, कृतिकर्म । २१ ९-१३ पौरुषीकरणकरणे, द्विरपृच्छायां दोषाः, जागरणविधिः, प्रभातं या- वत्सहायः, ग्रामासन्नोपयोगः, हि- मस्तेनादिभयं, स्नेहपयोवर्जनं, स्था- पनाकुलाङ्गिका, अपरिणते गव्यू- तम् । २२ १४ अस्थण्डिलसंक्रमणविधिः । (चल- व्याक्षिप्तानुपयुक्तभङ्गाः (८) २३ १५ पृच्छा(३)यतन(३-३-३-३)यो- र्विधिः । २४ १६-२२ पुरुषस्त्रीनपुंसकानि स्थविरमध्यमत- रुणाः, स्वान्यधार्मिकौ, आत्मवृत्तीयः। उत्सर्गापवादौ, पार्श्वस्थितोऽनुज्ञाप्यः, पृच्छायां पुरुषादिसंयोगाः । २९ २३-२४ पृथिवीकाये सचित्तादि (३) कृ- ष्णादि (५) शुष्कार्द्रगमनविधिः, ३३× मधुसिन्धुपिण्डकचिक्खिलस्वरूपम् । २५-२६ व्यालादिस्तेनादिप्रत्यपायाः, आका- न्तानाक्रान्तसप्रत्यपायेतरे विधिः। ३० २७-२८॥ पादलेखनिकास्वरूपम् । २९-३४ अन्तरिक्षापूर्वाये विधिः, भौमेऽने- काङ्गादि (५) पद्भङ्गाः (६४), संडे- वके चलादि (३) भङ्गाः (८), पाषाण- मधुसिन्धुवालुकाकर्दमभेदैर्जलम् । ३४+ संघट्टलेपोपरिभेदास्तीरे उत्सर्गश्च । ३२ ३५-३९ संघट्टादिजलोत्तरणविधिः । ४०-४३ तेजोवायुवनस्पतित्रसद्वाराणि । ३३ ४४-४६ परस्परसंयोगे यतना । ३५ ४७-६१ संयमादात्मनो रक्षा, न लोकेन		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके ४ ओघनि- र्युक्तौ। ॥ १५० ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) समानता, भवभोक्षयोस्तुल्या हेतवः, यतायतयोर्निर्वाणभवौ, दलिकं प्राप्य विधिनिषेधौ, अतिचारशुद्ध्योरेक-हेतुता, न परप्रत्ययो बन्धः, शुद्ध्यर्थं यतना, हिंसापरिणामो न शुद्धिलिङ्गं, त्यागपरिणामस्य मुक्तिः ३८ ६२ ग्लानसञ्ज्ञिसाधर्मिकवसतिस्थितिद्वाराणि प्रवेशे । ६३ प्रवेशे ऐहिकपारत्रिकगुणाः, साम्भोगिकासाम्भोगिकैकानेकसाधर्मिकादिषु द्रव्यादियतना । ३९ ६४ प्रवृत्तिः दर्शनं सङ्गडिश्राद्धा इहलोके, ग्लानचैत्यवादिप्रत्यनीकाः परलोके । ६५-६७ स्वपक्षेण पृच्छा । ६८-७२ चैत्यसाधुग्लानवैद्यानयनविधिः। ४० ७३-७६ एकाकिग्लाने विधिः । ४२ ७७-८१ संयतीविधिः । ८२-८४ श्रावकनिमज्जणे ग्लानयोग्यस्य ग्रहणाग्रहणे, पार्श्वस्थादीनां यतनया । ४४ ३५-४१+ ग्लानप्रतिजागरकादिग्रहणाग्रहणे विधिः, प्रासुकेन पञ्चानां, देवकुलिकानां खरण्टनम्, अविशेषे निह्वानां करणम् । ४६ ४२-४६+ जिनाचार्याऽऽज्ञयोः प्राबल्यं, भोजिकदण्डिकदृष्टान्तौ । ४७ ४७-४९+ प्रथमालिकार्थं बहिर्गमनं यावद् ग्लानवैयावृत्त्यं तदावश्यकता । ४७ ८५-९५ ब्रजिकग्रामसंखडिदानश्राद्धभद्रविधयः ५०-६४+ ब्रजग्रामयोः क्षीरग्रहणे विधातः, संखड्यां स्त्रीस्पर्शप्रभूतभक्षणादि, दानश्राद्धे घृतपुरुषादि, भद्रे लङ्कादि, महानिनादे स्निग्धादिदोषाः, पारिहृष्टिकक्षीरादिना परितलितादिना व्याघातो ग्लानत्वादि च, तक्रौदनयोर्ग्रहणं, दूरोत्थितक्षुल्लकादौ प्रवेशः, कारणे दीर्घा भिक्षा, विधिनाऽऽपृच्छ्य दोषवर्जनेन प्रवेशः, उद्गमादिप्ररूपणा, बहिःस्थाने दोषाः, प्रवेशे विधिः, दोषशुद्धिः, बालकाभावे विधिः, शून्यगृहे विधिः, सागारिके विधिः, विश्रामणा वैद्यबोधः, स्थण्डिलान्यग्रामयोर्भिक्षा, न द्विगव्यूतातिक्रमः । ५४		मार्गे ग्लाने ग्रामप्रवेशे च विधिः ॥ १५० ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १६-११६, ६५-६६+ साधर्मिके ज्ञाताज्ञात- दृष्टादृष्टश्रुताश्रुतप्रशस्ताप्रशस्तविधिः, साधूनां बाह्याभ्यन्तरप्रत्युपेक्षणा, संविप्रसङ्गिभद्रकशून्येषु वसतिः, अमनोज्ञे निवेद्य भिन्ना वसतिः, मनोज्ञापरिभुक्तेऽपाक्षिकस्वाध्यायाग- तसंयतीवर्जिते पार्श्वस्थादिवसतौ स्थानविधिः, अशिबादौ स्थाने स्थितिः, वर्षासु गमने दोषाः, स्थाने दण्डका- चार्यसामाचार्यौ, एकाकिन उपसं- हारः । ६० ११७-१२३, ६७+ सागरमीनवत्त्याजिताः, चक्रस्तूपाद्यर्थमनुपदिष्टाऽगीतार्थाः, गीतार्थतन्निश्चाविहारौ, अन्यस्य वि- राधना ६० १२४-१४३, ६८-७२×यतमानविहरदवधाव- नाहिण्डकाः, प्रत्येकबुद्धाद्या निर्गताः, आचार्याद्या गच्छे, लिङ्गविहाराभ्या- मवधावनता, गच्छगतविहरणविधिः, क्षेत्राप्रत्युपेक्षणेऽनाप्रच्छने क्षेत्रे मार्गे च दोषाः, शिष्यप्रतीच्छकतरुण- वृद्धपृच्छाविधिः, बालवृद्धागीतार्थ- योगिवृषभप्रेषणे दोषाः, कारणे विधिः । ६६ १४४-१७५, ७३-७८×गमने उच्चारभूस्यादि- प्रत्युपेक्षणं, सूत्रार्थकरणं, क्षेत्रत्रिभा- गादिविधिः, गुर्वार्थं स्निग्धादि, स्थ- ण्डिलादिप्रत्युपेक्षणा, शय्यातरानुज्ञा, वृषभकल्पनया वसतिः, - द्रव्या- चनुज्ञापना, साधुमानकालाकथनं, संकीर्णे प्राचूर्णके आगते विधिः, अन्यपथे नागमनं, गुरोरालोचनं, कथनविधिः, मतप्रहणं, आचार्य- प्रामाण्यं, दुष्टाश्ववन्मध्यबलाः सा- धवः, तरुणाश्चतुर्थे, स्थविराद्या अनु- कूले, पञ्चकैर्बलं, शय्यातराऽऽपृच्छा, अपृच्छायां नियमकथने च दोषाः, ज्ञापनविधिः, ७३ १७६-२१०, ७९-९४× विण्टिका, प्रशस्त- तिष्ठयादौ मध्याह्ने प्राग् वृषभप्रेषणं, शकुनाः, शय्यातरालापनं, उपकर- णवहनविधिः, अफकाययन्नाद्यधि- करणं, पश्चान्मुक्तेन सङ्केतः, स्वपना- २६ नंया०		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- सप्तके श्रीओघनि- युक्ता. ॥ १५१ ॥ द्युपघातः, गच्छगमनविधिः, स्थण्डि- लदर्शनम्, उद्वसितादिना स्थानं वर्त्मार्थं रेखा, अभ्यासे गमनागमनं, वसतिग्रहणे प्रवेशः, व्याघाते मार्गणा प्रवेशविधिः, भुक्त्वा प्रवेशे दोषाः, विकाले प्रवेशे मार्गणे संस्तारे उच्चारदौ च दोषाः, अपवा- दश्च, रात्रौ प्रवेशविधिः, संस्तारक- विधिः, निर्गमनविधिः, वसतिप्र- वेशः, अप्रावृत्ते विधिः । ८४ २११-२१६, ९५-१०३x विहृताविहृतौ ग्रा- मयोः, अवसने पञ्चदश, संविग्राह- नुज्ञा, पृथग्वसतौ विधिः, अविहृते साधुरहिते विधिः, लाभे निवेदनवि- धिः, साधर्मिकविधिः, आलोचनापूर्व मण्डली, दिनत्रयं प्राघूर्णकाः । ८८ २१७-२३६ संकीर्णविस्तीर्णवसत्योरावश्यक्या- धिकरणादिका दोषाः, प्रमाणयुतायां संस्तारकविधिः, निर्गमनविधिः, क्षु- ल्लिकायां यतना विस्तीर्णायां च । ९२ २३७-२३९ क्षेत्रप्राप्तानां यतना, उद्याने स्थानं, १०४-१३२x प्रविशतां शकुनाः, स्पर्द्धकेन प्रवेशः, उत्तिष्ठति धर्मकथी, शय्या- तरालापः, अन्यथा दोषाः, आचार्य- धर्मकथा, संस्तारकविभागः, उच्चार- भूम्यादिकथनं, अभक्ते नामङ्गलं, स्थापनाकुलदर्शनं, भिक्षाचैत्यविधिः, गृहचैत्यवन्दनायाचार्यगमनं, त्रिस्था- न्यां दानकुलकथनं, स्थापनादि- कुलानि, तत्कथनविधिः, गीतार्थ- प्रवेशः, अन्यथा कदर्यनद्रव्यक्षयो- द्रमाशुद्धिः, कार्यनाशाचार्यादिहान्यौ जड्वादिदृष्टान्तेन । ९७ २४०-१३३-१४५x वैय्यावृत्त्यकरलक्षण- मनलसादि, श्राद्धकुले द्रव्यप्रमाणा- विज्ञानं, अनेकप्रवेशे पञ्चदश, बहि- र्हिण्डनेऽगारी दृष्टान्तः, कुब्जबदरी- दृष्टान्तः प्राघूर्णकदाने । १०० २४१-२५६, १४६-१५०x आपृच्छयान्यत- दन्यप्राप्तगमनं, अन्यथा स्ते- नादेशादिदोषाः, चैत्यार्थं गते सूरौ विहार- विधिः भिक्षावि- धिश्च. ॥ १५१ ॥				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) तन्नियुक्तः पूर्वनियुक्तो वा पृच्छयः, विस्मृतौ कायिक्युच्चारद्रवादिनिर्गतः शय्यातरादिना वा संदिशेत्, दूरोत्थि- तादिदोषपरिहारः, स्थिताः प्रान्तप्रायं भुज्जते, चिरे प्रतिचरणं, एकः पथा द्वावुन्मार्गं, शब्दं कुर्वन्तश्चिह्नं कृत्वा, वार्त्तालंभे बोलः, एवमुद्गमादिपरि- हारः, पुरुषाद्यपेक्ष्याचार्यवैयावृत्ये विशेषः, प्रथमालिका भक्तपानप्रह- विधिः, प्रथमालिकाविधिः, पुनर- हिण्डनमपि । १०५ २५७-२६३ संसक्ते केवलिनः, संसक्तासं- कयोश्छद्मस्थानां, समुद्घातोऽपि भा- वप्रतिलेखना, आरक्षकदृष्टान्तेन द्रव्याप्रत्युपेक्षणायां दण्डः, किं कय- मित्यादि भावप्रत्युपेक्षणा । १०६ २६४-२८१, १५१-१७३× प्रत्युपेक्षणीये त्रिधास्थानं, उच्चारदि कृत्वा कायो- त्सर्गः, न सूरिपार्थ्वीप्रपृष्ठादौ भारा- दिदोषात्, संडासादि प्रमृज्य निष- दनं, विनाऽध्वादि न दिवाशयनं, नि- रीक्ष्य प्रमृज्य चोपकरणादानं, मुख- वस्त्रिकादिप्रतिलेखनाविधिः, वस्त्रो- ध्वादि अनर्त्तितादि, अनारभटादि, ऊनरिक्तविपर्यासभङ्गाः, अरुणोदया- द्यनादेशाः, पुरुषोपध्वोरविपर्यासः, कथादौ षट्कायविराधना, अन्यो- ऽन्याबाधयाऽसपत्नो योगः, मुक्ता- श्रानन्ता अतः, अप्रतिलेखनायां न सर्वाऽऽराधना, जितेन्द्रियो गुप्तस्तपो- नियमसंयमवानाराधकः, जितेन्द्रि- यत्वादीनां विवरणं, प्रेक्षोत्प्रेक्षापरि- छापनसंयमाः, स्वाध्यायः । ११४ २८२-२९६, १७४-१७७+ निश्चयव्यवहा- राभ्यां पौरुषी, तद्वृद्धिहानी, अव- मरात्राः, प्रतिलेखनाकालः, पात्र- प्रत्युपेक्षणविधिः, मूषकोत्केरादि- विधिः, पात्रस्थापना, वर्षास्वबद्धं, ऋतुबद्धेऽवन्धने दोषाः । ११९ २९७-३०९ आपातसंलोकभङ्गाः, स्वपक्ष- परपक्षसंयतसंयतीसंविम्रासंविम्र- मनोज्ञामनोज्ञतत्पाक्षिकान्यपाक्षिक-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- सप्तके श्रीओघनि- र्युक्तौ, ॥ १५२ ॥ मनुष्यतिर्यक्पुंस्त्रीनपुंसकदण्डिकौ- दुम्बिकप्राकृतिकशौचाशौचदृष्टा- दृष्टजघन्यसभ्यमोत्कृष्टजुगुप्सिताजु- गुप्सितविचारः, अधिकरणं, शैक्षा- न्यथाभावः, परिभवसङ्केतौ, अल्प- द्रवादि, आहननादिदोषाः, तथा सं- लोके, अनापातासंलोकः शुद्धः ॥ १२१ ३१०-३२२, १७८-१८५+ तृतीयायां का- लसञ्ज्ञा, आपृच्छापानकादि, पात्र- धरणगमनङ्गलमहणानि, अनापाता- संलोकादि (१०) भङ्गाः (१०२४), आत्मप्रवचनसंयमोपघाताः, स- माऽचिरकालकृतविस्तीर्णासन्नाबिल- व्याख्यानं, दिक्पवनसूर्यच्छायादि- विधिः, अवग्रहयाचना, उपकरणस्था- पनस्थानं, अमनोज्ञादिष्वपवादः । १२६ ३२३-३२५, १८६-१८७+ हृष्टस्य नावष्टम्भः, कुण्ठवादिविराधना, यूकादिमर्दनं कल्पते ग्लानस्य । १२६ ३२६-३३०, १८८-१९१× युगदृष्ट्या गमनं नोर्ध्वमुखादित्वेन, संयमात्मविराधने पात्रभेदे उद्धाहादि, प्रतिलेखनावि- ध्युपसंहारः । १२८ ॥ इति प्रतिलेखनाद्वाराणि ॥ ॥ अथ पिण्डद्वारम् ॥ ३३१-३७१ पिण्डगवेषणमहणप्रासैषणकथन- प्रतिज्ञा, पिण्डनिक्षेपाः (४-६) द्रव्येऽचित्तः (१०) सचित्तमिश्रौ (१-९) पृथिव्यप्कायाद्याः (१०) निश्चयव्यवहारसचित्तौ, क्षीरदुमा- देरध एकादिपौरुषी मिश्रः, शीतोष्णा- दिनाऽचित्तः, लूतादौ स्थानादौ च प्रयोजनं, अण्काये घनोदध्यादयो निक्षयेन, कूपादौ व्यवहारेण, बुद्धु- दाद्यादेशान् मुक्त्वाऽबहुप्रसन्नमनु- दृत्तं पतितमात्रं च, शीतोष्णादिनाऽ- चित्तं, परिषेकपानादि प्रयोजनं, ऋतु- बद्धे धावने दोषाः, वर्षास्वधावनं, वस्त्रधावनविधिः, नीम्रोदकमहण- विधिः, धावने गुर्वादिक्रमः, आ- च्छोटनादिवर्जनं छायातपयोः शो- प्रतिलेखना पिंडश्च. ॥ १५२ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) षणं, कल्याणकप्रायश्चित्तं, अग्नि- काये इष्टापाकादौ निश्चयेन, अङ्गा- रादौ व्यवहारेण सचित्तः, मुर्मु- रादौ मिश्रः, ओदनव्यञ्जनाद्यचित्तेन प्रयोजनं, वायुकाये घनवातादौ निश्च- येन, प्राच्यादौ व्यवहारेण सचित्तः, आक्रान्तादिकोऽचित्तः, अचित्तस्य सचिचीभवने क्षेत्रकालमानं, अचि- त्तेन ग्लानादेः प्रयोजनम्, वनस्प- तिकायेऽनन्तकायो निश्चयेन, शेषो व्यवहारेण, प्रम्लानफलादिर्मिश्रः, संस्तारकपात्राद्यचित्तेन प्रयोजनं, अ- क्षशङ्खादि-उद्देहिादि-मक्षिकापुरीषा- दिना विकलेन्द्रियप्रयोजनं, चर्मा- स्थ्यादिना तिरश्चि, प्रव्राजनादिना मनुष्ये, क्षपकादिकादिना देवे प्रयोजनम् । १३५ ३७२-४१०, १९२-२११+ लेपे नवानवसं- योगः, नार्वाकालिको लेपः, लेपे आत्मादिविराधना, न यतनायां, अलेपे ताः, लवणे पाने रोह्तादौ संयमस्य, पात्रदेशनालेपोऽपि दिष्टः, गत्वा लेपः, हस्ते शोषः, शय्यातर- लेपः, प्रमुष्टच्छा, लेपघ्राणं, षट्काय- यतनेति पूर्वपक्षः, सर्वेषां परिहारः, जीर्णानां दर्शयित्वा लेपः, पूर्वाह्ने कृत्वेच्छाकारं ग्रहणविधिः, न श- य्यातरपिण्डः, न नृपतेः पृच्छा, हरितप्रतिष्ठितादौ न ग्रहणं, वत्स- श्वादौ न, आगम्या लोचनं, लेपविधिः- वैयावृत्त्यविधिः, लिप्ते तापनधाव, नादिविधिः, अकार्ये लेपादित्यागः, शिशिरप्रीप्पयोः स्थापनकालः, अभी- क्षणमुपयोगः, लेपसङ्ख्या, लेपव- न्धप्रकाराः, पिण्डैकार्थिकानि (१२), भावेऽप्रशस्ते द्विविधादि, प्रशस्ते त्रिविधः । १४७ ४११-४५८, २१२+२३९+ एषणानिक्षेपाः (४) गवेषणायां प्रमाणकालाव- श्यकसंघाटकोपकरणमात्रककायोत्स- र्गस्ययोगाः सप्रतिपक्षाः, कालवारे, काले प्रथमपौरुष्यर्द्धात् प्राग् भ-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- सप्तके श्रीओघनि- र्युक्तौ. ॥ १५३ ॥	द्रप्रान्तादिदोषाः, स्फिटिते उद्गमाद्याः, आवश्याकाशुद्धौ उद्गाहः, स्फेट-नादि, एकाकिनः स्त्रीश्वप्रत्यनीक-भिक्षाऽविशुद्धिमहाव्रतदोषाः, गर्वित-कथित्वादीन्येकाकित्वकारणानि, ज-घन्यत आचारभाण्डकं मात्रकं च गृहीत्वा गमनं, आपृच्छादीनि (४), आचार्याद्यर्थमनेकशो भिक्षा, समनो-ज्ञादिस्थाने व्युत्सर्जनं, गर्वितादौ प्रज्ञापना, प्रियधर्मण्यनुज्ञा, रुयादि-दोषे यतना, उपकरणादिष्वपवादः, मात्रकप्रहणे दोषाः, त्वरितादाव-प्रहणं, कायोत्सर्गाकरणेऽनाभा-व्यं, स्वग्रामे स्मृतिकाले, परग्रामे पूर्ववत्पृच्छा, देशकाले पात्रप्रमार्जे-	नादि, सुविहितालये गमनं, अवसन्ने छोभः, ग्लानस्थापनाकुलयोः पृच्छा, बाह्यादिना दर्शनेऽन्यादिदोषाः, प्रतिकुष्ठचिह्नानि, स्थापनाकुलेष्व-प्रवेशः, जुगुप्सितपिण्डादौ दुर्लभा बोधिः, प्रव्राजनवसतिभक्तपानेषु प्रतिकुष्ठाः, प्रवचनानपेक्षस्यानन्तः संसारः, एषणाऽनेषणयोरज्ञाने जि-नमताज्ञता, गच्छेऽपि पार्श्वस्थता, द्रव्यभावगवेषणे कनकपुष्टमृगाहस्ति-दृष्टान्तौ, भावे च धर्मरुचिवञ्जस्वा-मिनौ । १६० ४५९-५०९, २४०-२६१+ द्रव्यप्रहणैषणे वानरयूथदृष्टान्तः, भावप्रहणैषणे	आत्मप्रवचनसंयमोपघातपरिहारः, गवादिभिरात्मनि, पृथिव्यादिसंघट्ट-नादिभिः संयमे, उच्चारस्थानादिभिः प्रवचने, अव्यक्ताप्रभुस्थविरपण्ड-कमत्तक्षिप्तचित्तदृष्टयक्षाविष्टत्वगुदो-षगुर्विणीबालवत्साकण्डयन्तीपिष-न्तीभर्जयन्तीकर्त्तयन्तीपिञ्जयन्ती-भ्यो न ग्राह्या, ग्रहणे दोषाश्च, अ-व्यक्ते भद्रिका, केषुचिद्ग्रहणविधिश्च, दायकस्य गमने विधिः, नीचद्वारा-दावप्रहणं, स्थविरा अदृष्टावप्युपयो-गेन गृह्यन्ती, उपयोगविधिः, आग-मनविधिः, दातृपात्रावेक्षणे वणि-गृजायागोवत्सकदृष्टान्तः, सस्नि-	लेपः ए- षणा च. ॥ १५३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) गधादिपात्रवर्जनं, पतितपिण्डनिरूपणं, अन्यथा विराधना, गुरुद्रव्यपिधान- चतुर्भङ्गी, महास्थाल्यादिनाऽप्रहणं, ग्रीष्महेमन्तवर्षास्त्रीपुंनपुंसकतरुणम- ध्यस्थविराणामुदकाद्रादौ शोषभागाः, प्रशस्ताप्रशस्तभावयोर्भ्रातृजायाह- ष्टान्तौ, लोकोत्तरे वर्णाद्यर्थमप्रशस्तः, आचार्यार्थं प्रशस्तः, समुदान- शुद्धिः, ग्रामकालभाजनपर्याप्तौ निवृ- त्तिः, भूमित्रिकेक्षणे चरमावगाहे जघन्योत्कृष्टौ कालौ । १७४ ५१०-५३९, २६२-२७४+ पादप्रमार्जनं नैषेधिकीत्रयं वाग्नमस्कारः, प्रमृज्य यष्टिभाजनवस्त्रस्थापना, कायोत्सर्ग- विधिः, प्रतिसेवनाऽऽलोचनाविकट- नाचतुर्भङ्गी, व्याक्षिप्तपराङ्मुखादे- र्नालोचनं, नृत्यद्वलच्चलादिवर्जनं, ओघालोचना, सप्रतिग्रहशीर्षप्रमार्ज- ना भक्तदर्शनविधिः, दूरालोचनका- योत्सर्गः, स्वाध्यायप्रस्थापना, मण्ड- ल्युपजीवीतरे, प्राघूर्णकादिनिमग्नं, अग्रहणेऽपि निर्जरा, एकस्य निन्दा- पूजयोः सर्वेषां ते, वैद्यावृत्त्यस्याप्रति- पातित्वं, भरतादिदृष्टान्तेन बहु- लाभः । १८० ५४०-६२६, २७५-३०८+ द्रव्यप्रासैषणायां मत्स्यदृष्टान्तः, भावेऽनुशास्तिः, आ- गढयोगिनिर्युद्धाऽऽत्मार्थिकप्राघूर्णक- शैक्षकसंप्रायश्चित्तबालवृद्धकुष्ठाद्याः पृथग्भोजिनः, द्रव्ये आलोको दी- पादिः, भावे स्थानादिः (७), मण्ड- लीनिष्क्रमणप्रवेशसागारिकस्थानानि वर्जयित्वा, गुरोरीशानाम्नेयकोणयोः प्रकाशे प्रकाशमुखभाजने कुक्कुट्य- ण्डकमात्रकवलेन गुरुदृष्टौ ज्ञानाद्यर्थं मुक्ते, मण्डलीकारणानि, वसतिपा- लकार्यं, अच्छद्रवग्रहणं, गालनं, आचाराद्यर्थं सुखाचमनाय, अच्छद्र- वपात्रमानं, द्रवसत्त्वविधिः, प्रतीक्षा, असहिष्णौ विधिः, मण्डलीस्थविर- स्वरूपं, पूर्वोक्तानि स्थानादीनि, रत्ना- धिकः पूर्वमुखः, क्षपकादीनां सागा-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्द्यादि- सप्तके श्रीओघनि- र्युक्तौ. ॥ १५४ ॥	रिक्करक्षा, मल्लकप्रहणभोजनविधिः, यथाकृतानि पूर्व, स्निग्धमधुराणि, कटकप्रतरच्छेदौ, सिंहखादितं, धू- माङ्गारवर्जनं, सुरसुरादिवर्जनं, भो- जनं, सारासारता, सैन्यनिर्जरे, ससा- रोपवेशनोत्थाने, पात्रकभ्रमणविधिः, धूमाङ्गारस्वरूपं, यात्रामात्रार्थमा- हारः, हिताद्याहाराः अरोगिणः, वेदनादीन्याहारकारणानि, आतङ्का- दीन्यनाहारकारणानि, आहारस्याप- वादता, पात्रसंलेखनविधिः, उद्धृत- भोजनविधिः, परिष्ठापनविधिः, जाताजाते, एकान्तानापातादौ एक- पुञ्जेन, लोभे पुञ्जद्वयेन, विद्याम-	आद्यभियोगे, छाराक्रमेण परिष्ठापनं, योगविद्यामन्त्रेषु दृष्टान्ताः, आचा- र्याद्यर्थमधिकप्रहणं, तरुणाद्याचार्यो- मण्डलीभोजी, सूत्रार्थस्थिरीकरणादि, द्रव्याद्यैराचार्ययोग्यं, ग्लानाद्यर्थं बहु- भिर्याचनं, अजातायां पुञ्जत्रयं, पुञ्जकरणकारणं, अनापातादिस्थ- ण्डिलचतुष्कं, अशक्तस्य साक्षादौ, तत्र न्यायश्च । १८९ इतिपिण्डः ६२७-६३२ चरमपौरुष्यां स्वाध्यायः, भक्ता- भक्तार्थिनो मुखानन्तकसकायगुर्वेन- शनग्लानशैक्षोपधिप्रतिलेखना, अभ- क्तार्थिनश्चरमः पट्टः परस्य पट्टकमात्र- कादि, पुनः स्वाध्यायादि । १९९	६३३-६३५ उच्चारदि (२४) काल (३)- भूमिप्रतिलेखना । ६३६-६३८ निर्व्याघाते सर्वे, आद्यादिकथा- व्याघाते गुरुं विना, सूत्रार्थस्मरणाय कायोत्सर्गं कुर्वते, बालादिरुपविष्टः । २०० ६३९-६६६ त्रिस्तुत्यनन्तरं कालप्रहणं, घड्घ- शालायां कथायां वा व्याघातः, तृती- याय निवेदनं, कालप्रहणविधिः, तद्व्याघाताः, गण्डकोपमाः, काल- सन्ध्ययोः समता, कालप्राहिगुणाः, शङ्कायां विधिः, स्वाध्याये मरुकदृष्टा- न्तः, स्वगणे त्रयाणां शङ्किते घातः, आदोषिके समकं स्वाध्यायः, कनक- तारकोल्का व्याघातः, वृषभादीनां श- यनयामाः, ऋतौ चतुर्षु चतस्रो दिशः,	मंडली- संख्या- विधिः. ॥ १५४ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	अदृष्टेऽपि तारके प्राभातिकः, स्थिते- नापि कालग्रहणं, कालग्रहणदिक् जागरणशयनविधेरतिदेशः । २०७ ॥ इति कालग्रहणविधिः ॥ ॥ अथोपधिनिरूपणम् ॥ ६६७ उपधेयकार्यिकानि (८) २०७ ६६८ औचिकौपग्रहिकौ, गणनातः प्रमाण- तश्च । २०८ ६६९-६७२ स्थविरकल्पिकानां चतुर्दश, जि- नकल्पिकानां द्वादश, आर्याणां पञ्च- विंशतिः, ऊर्ध्वमौपग्रहिकः । ६७३ जिनकल्पिकानां जघन्यमध्यमोत्कृष्ट उपधिः । ६७४ स्थविरकल्पिकानां मध्यमः । (जघ- न्योत्कृष्टावपि)	६७५-६७९, ३१३-३२०+ आर्यिकाणां प- ञ्चविंशतिरूपकरणानि, तत्स्वरूपं, उ- त्कृष्टः ८ मध्यमः १३ जघन्यः ४ ६८० जिनकल्पिनामेकं पात्रं, स्थविराणां मात्रकद्वितीयम् । २१० ६८१-६८४ पात्रकप्रमाणम् । ३२१+ वैयावृत्त्यकरस्य २१० ६८५ नन्दीभाजनं, तत्प्रयोजनं च । ६८६-६९१ पात्रलक्षणापलक्षणानि । २११ ६९२-६९३ पात्रप्रयोजनं षट्पायरक्षादि ग्ला- नादि च । ६९४-६९७ पात्रबन्धकस्थापनकगोच्छकप्रत्यु- पेक्षणिकानां प्रमाणानि प्रयोजनं च । २१२ ६९८-७०३ पटलानां स्वरूपं, कालविशेषेण	संख्या, प्रमाणं प्रयोजनं च । २१३ ७०४-७०५ रजस्त्राणप्रमाणप्रयोजने । ७०६-७०७ कल्पानां प्रमाणप्रयोजने । २१३ ७०८-७११, ३२२+ रजोहरणस्य स्वरूपं प्रमाणं किमयत्वं प्रयोजनं च । २१४ ७१२-७१३ मुखवस्त्रिकायाः प्रमाणं प्रयोजनं च । २१४ ७१४-७२१ मात्रकस्य द्विधा प्रमाणं प्रयोजनं, अनुज्ञाहेतुः, तत्र ग्रहणे विधिः । २१६ ७२२-७२३ चोलपट्टकस्य प्रमाणं प्रयोजनं च । ७२४-७२५ संस्कारकोत्तरपट्टयोः प्रमाणं प्रयो- जनं च । २१७ ७२६ रजोहरणाभ्यन्तरनिषद्याप्रमाणम् । ७२७ वर्षासु वर्षाकल्पादिर्दिगुणः । ७२८ यथाकृते न सन्धनाच्छेदौ ।

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/१] मूलसूत्र-२/१ 'ओघनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- सप्तके श्रीओघनि- र्युक्तौ। ॥ १५५ ॥ ७२९-७३० चर्मचर्मकोशकादीनि औपम- हिके गुरोः, प्रत्येकं दण्डयष्टौ। २१८ ७३१-७४१ यष्ट्यादिः (५), यष्ट्या लक्षणं, तत्फलं, प्रयोजनं च। २१९ ७४२-७४७ उपकारकमुपकरणं तद्वारणरीतिः। ७४८-७५४ प्रयोगेनानवद्यस्य न बन्धः, ज्ञान्य- ज्ञानिप्रमत्तानां हिंसासु विशेषः। २२० ७५५ आत्मैव हिंसाहिंसे, अप्रमत्तोऽहिं- सकः, पर इतरः। २२१ ७५६-७५९ परिणामविशेषात् हिंसाविशेषः, अन्यभावा मनोऽमनोरक्तादेः। ७६०-७६३ यतनायां विराधना निर्जराफला, निश्चये परिणामः प्रमाणं, बाह्यकरणा- लसाश्चरणघातकाः, विधिमानाय- तनम्। २२२ ॥ इत्युपधिनिरूपम् ॥ ॥ अथानायतनवर्जनम् ॥ ७६४-७८२ अनायतनस्यैकार्थिकानि (४) स्वरूपं, ततो हानिः, भावुकाभावु- कस्वरूपम्। २२४ ७८३-७८६ आयतने जिनगृहादि द्रव्ये, भावे ज्ञानादि, साधर्मिकादिस्थानमायतनं, तत्सेवाफलं च। २२४ ॥ इत्यनायतनवर्जनम् ॥ ॥ अथ प्रतिसेवनाद्वारम् ॥ ७८७-७८९ मूले (६) उत्तरे (३) च प्रति- सेवना, तदेकार्थिकानि (८) २२५ ॥ इति प्रतिसेवना ॥ ॥ अथालोचनाद्वारम् ॥ ७९०-७९२ दुःखक्षयार्थं विशुद्धिः, चतुष्क- र्णा, भिन्नवर्गेऽष्टकर्णा, सिद्धाव- सानाऽपि, तदेकार्थिकानि (८)। ॥ इत्यालोचना ॥ ॥ अथ विशुद्धिद्वारम् ॥ ७९३-८०९ वैद्यदृष्टान्तेन जानतोऽपि गुरु- पार्थे शुद्धिः, अज्ञानादिना प्रति- सेवा, बालवदालोचना, दुर्लभबो- ध्यनन्तसंसारित्वहेतुः शल्यं, निः- शल्यस्यासन्ना मुक्तिः। २२७ ॥ इति विशुद्धिद्वारम् ॥ ८१०-८१२ सामाचार्या उपसंहारः फलं मानं च। ॥ इत्योघनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः ॥ उपधिः आयतनं शुद्धिश्च। ॥ १५५ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'																																										
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																										
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	॥ अथ दशवैकालिकबृहद्विषयानुक्रमः ॥ <table border="1"> <tr> <td>१</td><td>मङ्गलोपोद्घातौ सिद्धनमस्कारेण मंगलं, निर्युक्तिप्रतिज्ञा च ।</td><td>११-१२ कालनिक्षेपाः (९) विकाले निर्यूढमिति दशकालिकम् ९</td><td>च, प्रथमाध्ययने द्वारचतुष्कं, धर्म-प्रशंसाऽधिकारः</td></tr> <tr> <td>२</td><td>मङ्गलत्रिकं मंगलनिक्षेपश्च । २</td><td>१३ येन यं यदादीनि (५) द्वाराणि १०</td><td>२७-३३ ओघेऽध्ययनानि नामाद्याः, भावे</td></tr> <tr> <td>३</td><td>श्रुतज्ञानेऽनुयोगः ३</td><td>१४ जिनप्रतिमादर्शनबुद्धशय्यंभवनम-स्कारः (शय्यंभवकथा) १२</td><td>अध्ययनाक्षीणायक्षपणाव्याख्या १६</td></tr> <tr> <td>४</td><td>(४) अपृथक्त्वे ४</td><td>१५ मणकायोजुतम्</td><td>३४-३६ द्रुमपुष्पयोर्निक्षेपाः (४) एकार्थि-कानि (६) च १७</td></tr> <tr> <td>५</td><td>निक्षेपैकार्था (४) दीनि (११)</td><td>१६-१८ आत्मकर्मसत्यप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वे-भ्यो गणिपिटकाद्यङ्गाद्वेदद्वारः १३</td><td>३७ द्रुमपुष्पिकैकार्थिकानि (१४) १९ (रत्नवणिगृहप्रान्तः)</td></tr> <tr> <td>६</td><td>कल्पवर्णितगुणस्यानुयोगयोग्यता ६</td><td>१९-२३ दश अध्ययननामानि तदर्थ्याधिकाराः १५</td><td>१* देवनमनीयधर्मस्वरूपं, उद्देशादीनि, व्याख्यालक्षणं च २०</td></tr> <tr> <td>७</td><td>दशकालश्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशनि-क्षेपाः ७</td><td>२४ चूडाद्वयार्थाधिकारः</td><td>३८ पृच्छापृच्छयोः कथनम् २१</td></tr> <tr> <td>८</td><td>एककनिक्षेपाः ७</td><td>२५-२६ पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येककथनप्रतिज्ञा</td><td>३९-४३ धर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्येऽस्तिकायप्र-</td></tr> <tr> <td>९</td><td>दशकनिक्षेपाः (६)</td><td></td><td></td></tr> <tr> <td>१०</td><td>बाल्याद्या दश दशाः ८</td><td></td><td></td></tr> </table>			१	मङ्गलोपोद्घातौ सिद्धनमस्कारेण मंगलं, निर्युक्तिप्रतिज्ञा च ।	११-१२ कालनिक्षेपाः (९) विकाले निर्यूढमिति दशकालिकम् ९	च, प्रथमाध्ययने द्वारचतुष्कं, धर्म-प्रशंसाऽधिकारः	२	मङ्गलत्रिकं मंगलनिक्षेपश्च । २	१३ येन यं यदादीनि (५) द्वाराणि १०	२७-३३ ओघेऽध्ययनानि नामाद्याः, भावे	३	श्रुतज्ञानेऽनुयोगः ३	१४ जिनप्रतिमादर्शनबुद्धशय्यंभवनम-स्कारः (शय्यंभवकथा) १२	अध्ययनाक्षीणायक्षपणाव्याख्या १६	४	(४) अपृथक्त्वे ४	१५ मणकायोजुतम्	३४-३६ द्रुमपुष्पयोर्निक्षेपाः (४) एकार्थि-कानि (६) च १७	५	निक्षेपैकार्था (४) दीनि (११)	१६-१८ आत्मकर्मसत्यप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वे-भ्यो गणिपिटकाद्यङ्गाद्वेदद्वारः १३	३७ द्रुमपुष्पिकैकार्थिकानि (१४) १९ (रत्नवणिगृहप्रान्तः)	६	कल्पवर्णितगुणस्यानुयोगयोग्यता ६	१९-२३ दश अध्ययननामानि तदर्थ्याधिकाराः १५	१* देवनमनीयधर्मस्वरूपं, उद्देशादीनि, व्याख्यालक्षणं च २०	७	दशकालश्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशनि-क्षेपाः ७	२४ चूडाद्वयार्थाधिकारः	३८ पृच्छापृच्छयोः कथनम् २१	८	एककनिक्षेपाः ७	२५-२६ पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येककथनप्रतिज्ञा	३९-४३ धर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्येऽस्तिकायप्र-	९	दशकनिक्षेपाः (६)			१०	बाल्याद्या दश दशाः ८		
१	मङ्गलोपोद्घातौ सिद्धनमस्कारेण मंगलं, निर्युक्तिप्रतिज्ञा च ।	११-१२ कालनिक्षेपाः (९) विकाले निर्यूढमिति दशकालिकम् ९	च, प्रथमाध्ययने द्वारचतुष्कं, धर्म-प्रशंसाऽधिकारः																																								
२	मङ्गलत्रिकं मंगलनिक्षेपश्च । २	१३ येन यं यदादीनि (५) द्वाराणि १०	२७-३३ ओघेऽध्ययनानि नामाद्याः, भावे																																								
३	श्रुतज्ञानेऽनुयोगः ३	१४ जिनप्रतिमादर्शनबुद्धशय्यंभवनम-स्कारः (शय्यंभवकथा) १२	अध्ययनाक्षीणायक्षपणाव्याख्या १६																																								
४	(४) अपृथक्त्वे ४	१५ मणकायोजुतम्	३४-३६ द्रुमपुष्पयोर्निक्षेपाः (४) एकार्थि-कानि (६) च १७																																								
५	निक्षेपैकार्था (४) दीनि (११)	१६-१८ आत्मकर्मसत्यप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वे-भ्यो गणिपिटकाद्यङ्गाद्वेदद्वारः १३	३७ द्रुमपुष्पिकैकार्थिकानि (१४) १९ (रत्नवणिगृहप्रान्तः)																																								
६	कल्पवर्णितगुणस्यानुयोगयोग्यता ६	१९-२३ दश अध्ययननामानि तदर्थ्याधिकाराः १५	१* देवनमनीयधर्मस्वरूपं, उद्देशादीनि, व्याख्यालक्षणं च २०																																								
७	दशकालश्रुतस्कन्धाध्ययनोद्देशनि-क्षेपाः ७	२४ चूडाद्वयार्थाधिकारः	३८ पृच्छापृच्छयोः कथनम् २१																																								
८	एककनिक्षेपाः ७	२५-२६ पिण्डार्थोपसंहारः प्रत्येककथनप्रतिज्ञा	३९-४३ धर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्येऽस्तिकायप्र-																																								
९	दशकनिक्षेपाः (६)																																										
१०	बाल्याद्या दश दशाः ८																																										
	[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'																																										

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)								
	<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> नन्दादि- सप्तके श्रीदशवै- कालिके. ॥ १५६ ॥ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> ४४ चारधर्माः, भावे पर्यवाः, गम्यपशु- देशराज्यादि (९), कुतीर्थिकः सा- वद्यः, लोकोत्तरे (२) २३ ४५ द्रव्यभावमङ्गले २४ ४६ अहिंसामङ्गलः (४) ४७ संयमभेदाः (१७) २५ ४८ पृथिव्यादिसंयमभेदाः (१७) २६ ४९ बाह्यं तपः (६) २९ ४८ अभ्यन्तरं तपः (६) ३२ ४९ जिनवचने श्रोत्रपेक्षया हेतुः धर्मे ३३ ५० पंचदशावयवे वाक्ये ३३ ५१ चरितकल्पितोदाहरणयोश्चातुर्विध्यं, हेतुश्च चतुर्थो ३३ ५२ दृष्टान्तैकार्थिकानि (५) ३४ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> ५३ चरितकल्पितयोः आहरणतद्देशत- होषोपन्यासाः ५४-५६ अपायोपायस्थापनाप्रत्युपपन्नविनाशाः, द्रव्यापाये भ्रातरौ क्षेत्रापाये दशार्ह- वर्गः काले द्वैपायनः भावे मण्डूकि- काक्षपकः ३९ ५७-५८ द्रव्याद्यपायानामुपयोगः क्रिया च ३९ ५९-६० द्रव्यानुयोगे जीवस्य नित्यानित्यत्वे ४० ६१-६२ उपायचातुर्विध्यं (अभयोक्ता वृद्ध- कुमारीकथा) ४२ ६३-६५ अप्रत्यक्षस्यात्मनः सुखादेर्माहता द्र- व्यकालभावसंक्रमैर्वा ४३ ६६ तैर्वा परिणामसाधनं च ६७-६८ स्थापनाकर्मणि उष्ट्रलिण्डकं हिंनु- </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> शिवो वा दृष्टान्तः, द्रव्यानुयोगे सव्यभिचारे विशेषणम् ४४ ६९-७२ प्रत्युत्पन्नविनाशे गान्धर्वोदाहरणं शि- व्यरागनिषेधः शून्यवादिबचनादस्ति- ता, जीवसिद्धौ जीवाभाववचनं ४६ ७३-८० तद्देशाहरणे अनुशास्तिः (३) सुभ- द्रा गुणोत्कीर्तने, आत्मनः कर्तृत्वं, उपालम्भे (मृगावती) नास्तीति कुवि- ज्ञानं, पृच्छायां (कोणिकः), नि- श्रयां गौतमस्वामी (कुविज्ञानपरो- क्षतायां च दानाद्यफलता) ५२ ८१-८२ तद्दोषाहरणे अधर्मयुक्ते (नलदाम) प्रतिलोमे (अभयगोविन्दवाचकौ) आत्मोपन्यासे (पिङ्गलः) दुरुपनीते (मिक्षुकः) ५३ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> दुमपुष्पि- कायां आहरणा- धिकारः. ॥ १५६ ॥ </td></tr> </table>				नन्दादि- सप्तके श्रीदशवै- कालिके. ॥ १५६ ॥	४४ चारधर्माः, भावे पर्यवाः, गम्यपशु- देशराज्यादि (९), कुतीर्थिकः सा- वद्यः, लोकोत्तरे (२) २३ ४५ द्रव्यभावमङ्गले २४ ४६ अहिंसामङ्गलः (४) ४७ संयमभेदाः (१७) २५ ४८ पृथिव्यादिसंयमभेदाः (१७) २६ ४९ बाह्यं तपः (६) २९ ४८ अभ्यन्तरं तपः (६) ३२ ४९ जिनवचने श्रोत्रपेक्षया हेतुः धर्मे ३३ ५० पंचदशावयवे वाक्ये ३३ ५१ चरितकल्पितोदाहरणयोश्चातुर्विध्यं, हेतुश्च चतुर्थो ३३ ५२ दृष्टान्तैकार्थिकानि (५) ३४	५३ चरितकल्पितयोः आहरणतद्देशत- होषोपन्यासाः ५४-५६ अपायोपायस्थापनाप्रत्युपपन्नविनाशाः, द्रव्यापाये भ्रातरौ क्षेत्रापाये दशार्ह- वर्गः काले द्वैपायनः भावे मण्डूकि- काक्षपकः ३९ ५७-५८ द्रव्याद्यपायानामुपयोगः क्रिया च ३९ ५९-६० द्रव्यानुयोगे जीवस्य नित्यानित्यत्वे ४० ६१-६२ उपायचातुर्विध्यं (अभयोक्ता वृद्ध- कुमारीकथा) ४२ ६३-६५ अप्रत्यक्षस्यात्मनः सुखादेर्माहता द्र- व्यकालभावसंक्रमैर्वा ४३ ६६ तैर्वा परिणामसाधनं च ६७-६८ स्थापनाकर्मणि उष्ट्रलिण्डकं हिंनु-	शिवो वा दृष्टान्तः, द्रव्यानुयोगे सव्यभिचारे विशेषणम् ४४ ६९-७२ प्रत्युत्पन्नविनाशे गान्धर्वोदाहरणं शि- व्यरागनिषेधः शून्यवादिबचनादस्ति- ता, जीवसिद्धौ जीवाभाववचनं ४६ ७३-८० तद्देशाहरणे अनुशास्तिः (३) सुभ- द्रा गुणोत्कीर्तने, आत्मनः कर्तृत्वं, उपालम्भे (मृगावती) नास्तीति कुवि- ज्ञानं, पृच्छायां (कोणिकः), नि- श्रयां गौतमस्वामी (कुविज्ञानपरो- क्षतायां च दानाद्यफलता) ५२ ८१-८२ तद्दोषाहरणे अधर्मयुक्ते (नलदाम) प्रतिलोमे (अभयगोविन्दवाचकौ) आत्मोपन्यासे (पिङ्गलः) दुरुपनीते (मिक्षुकः) ५३	दुमपुष्पि- कायां आहरणा- धिकारः. ॥ १५६ ॥
नन्दादि- सप्तके श्रीदशवै- कालिके. ॥ १५६ ॥	४४ चारधर्माः, भावे पर्यवाः, गम्यपशु- देशराज्यादि (९), कुतीर्थिकः सा- वद्यः, लोकोत्तरे (२) २३ ४५ द्रव्यभावमङ्गले २४ ४६ अहिंसामङ्गलः (४) ४७ संयमभेदाः (१७) २५ ४८ पृथिव्यादिसंयमभेदाः (१७) २६ ४९ बाह्यं तपः (६) २९ ४८ अभ्यन्तरं तपः (६) ३२ ४९ जिनवचने श्रोत्रपेक्षया हेतुः धर्मे ३३ ५० पंचदशावयवे वाक्ये ३३ ५१ चरितकल्पितोदाहरणयोश्चातुर्विध्यं, हेतुश्च चतुर्थो ३३ ५२ दृष्टान्तैकार्थिकानि (५) ३४	५३ चरितकल्पितयोः आहरणतद्देशत- होषोपन्यासाः ५४-५६ अपायोपायस्थापनाप्रत्युपपन्नविनाशाः, द्रव्यापाये भ्रातरौ क्षेत्रापाये दशार्ह- वर्गः काले द्वैपायनः भावे मण्डूकि- काक्षपकः ३९ ५७-५८ द्रव्याद्यपायानामुपयोगः क्रिया च ३९ ५९-६० द्रव्यानुयोगे जीवस्य नित्यानित्यत्वे ४० ६१-६२ उपायचातुर्विध्यं (अभयोक्ता वृद्ध- कुमारीकथा) ४२ ६३-६५ अप्रत्यक्षस्यात्मनः सुखादेर्माहता द्र- व्यकालभावसंक्रमैर्वा ४३ ६६ तैर्वा परिणामसाधनं च ६७-६८ स्थापनाकर्मणि उष्ट्रलिण्डकं हिंनु-	शिवो वा दृष्टान्तः, द्रव्यानुयोगे सव्यभिचारे विशेषणम् ४४ ६९-७२ प्रत्युत्पन्नविनाशे गान्धर्वोदाहरणं शि- व्यरागनिषेधः शून्यवादिबचनादस्ति- ता, जीवसिद्धौ जीवाभाववचनं ४६ ७३-८० तद्देशाहरणे अनुशास्तिः (३) सुभ- द्रा गुणोत्कीर्तने, आत्मनः कर्तृत्वं, उपालम्भे (मृगावती) नास्तीति कुवि- ज्ञानं, पृच्छायां (कोणिकः), नि- श्रयां गौतमस्वामी (कुविज्ञानपरो- क्षतायां च दानाद्यफलता) ५२ ८१-८२ तद्दोषाहरणे अधर्मयुक्ते (नलदाम) प्रतिलोमे (अभयगोविन्दवाचकौ) आत्मोपन्यासे (पिङ्गलः) दुरुपनीते (मिक्षुकः) ५३	दुमपुष्पि- कायां आहरणा- धिकारः. ॥ १५६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ८४-८६ उपन्यासाहारेण तद्वस्तुनि (अपूर्व-साधकः) तद्व्यवस्तुनि अम्यत्वे एकत्वे प्रतिनिभे (लक्षधारणं) हेतौ व्यवक्रयः) ५७ ८७-८९ हेतौ यापके (उष्ट्रलिङ्गानि) स्थापके (लोकमध्यं) व्यसके (शकटतित्तिरिः) लृषके (मोक्षकः) ६२ ९०-९२ प्रतिज्ञा हेतुद्वैष्टान्त उपनयो निगमनं च धर्मे ६३ ९३-९६ अत्रैव प्रतिज्ञातद्विशुद्धी हेतुतद्विशुद्धी १-४+ दृष्टान्ततद्विशुद्धी ६४ २* अमरवद् गोचरी ६४ ९७-९८ अमर आहरणदेशे, अनियतवृत्तिवा ६५ ९९-११७ अन्नग्रहणात् मुनेरारम्भः, वृणा-दिभ्यः वर्षादिवत्, आदित्यात् वृष्टिः, किं दुर्भिक्षनिर्घातौ? ऋतौ च, न अम- रैभ्यो हुमपुष्पनं, अमरयुक्तो हुमः न, कर्मणः, अमरमा अपि हुमा प्रकृत्या ऋतौ पुष्पनं, न अमरार्थं पाकः, का- न्तारादौ रात्रौ च पाकात्, अमरणा-हेतुतः, अमरणे पाकः प्रकृत्या, तत्र अमरानां एषणा नवकोट्यादिविशुद्धस्य सिद्धिरुपसंहारश्च ६८ ३* अंगवत् एषणारताः अमराः ११८-१२३ द्रव्ये विहङ्गमः कर्म, भावे गुणसंज्ञावन्तौ गुणसिद्ध्या लोको विहङ्गमः, अमरगत्या अस्तिकायाः कर्मगत्या सर्वे (अनाकाशाः) विहा-योगतिः (वक्राः) चलनगतिः (संसा-रिणः) संज्ञायां पक्षिणः ७१ ४-५* १२४-१२५ एषणात्रिकं अदत्तादान-त्यागश्च, उपसंहारशुद्धिः अनुपघातः यथाकृतग्रहणं अनिश्रितादानं नाना-पिण्डाः साधवः ७२ १२६-१३७ असंयताः अमराः न, देशोपम-त्वात् ७४ हुमवत् नागराः, अमर-वत् मुनयः, स्वभावसिद्धमन्वेष-यन्ति, अमरवत् अवधजीविनः, ईर्यादिषु यताः, उपनयनोपसंहार-विशुद्धी, दयादिगुणैः साधित-त्वात् धर्मे उत्कृष्टं मङ्गलं, तीर्था-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु.आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५७ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> नन्दीया अवुद्धयतनाः, उद्गमादिभो- जिनोऽगुप्ताः, योगेन्द्रियदमात् सा- धवः साधकाः १३८-१४९ दशावयवाः (प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा- विशुद्ध्यादयः प्रतिज्ञा तद्विषयविभागः हेतुः तद्विषयविभागः साध्यादिवि- पर्ययः तन्निषेधः दृष्टान्तस्तदाशङ्का- प्रतिषेधौ निश्चयः) ८० १५० ज्ञानक्रियानये ८० १५१-१५३ नायमीत्यावृत्त्या द्वयोः, सिद्धा- न्तपक्षः, उपसंहारः ८२ ॥ इति हुमपुष्पिकाध्य० १ ॥ ॥ अथ श्रामण्यपूर्विकाध्य० ॥ १५४ श्रमणनिक्षेपाः (४) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८३ </td> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> १५५-१५९-१ प्र. श्रमणस्वरूपं, उरगविषा- द्युपमाः ८४ १६०-१६१ श्रमणैकार्थिकानि (११) (२०) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८५ ६* काममग्नः संकल्पवशः १६२-१६७ कामनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदय- कराः, अप्रशस्तेच्छा, धर्मोत्कामक- त्वात् कामत्वं, कामानां रोगत्वं, भावे इच्छामदनौ ८६ १६८-१७९ पदनिक्षेपाः (४) द्रव्ये आकु- ट्टिकाद्याः (११) भावेऽपराधेत्तरे, अन्त्ये मातृकानोमातृके, अन्त्ये प्रथितप्रकीर्णके चतुरनेकप्रकारे, गद्यपद्यगेयचौर्णस्वरूपं, इन्द्रियादी- </td> </tr> </table>		नन्दीया अवुद्धयतनाः, उद्गमादिभो- जिनोऽगुप्ताः, योगेन्द्रियदमात् सा- धवः साधकाः १३८-१४९ दशावयवाः (प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा- विशुद्ध्यादयः प्रतिज्ञा तद्विषयविभागः हेतुः तद्विषयविभागः साध्यादिवि- पर्ययः तन्निषेधः दृष्टान्तस्तदाशङ्का- प्रतिषेधौ निश्चयः) ८० १५० ज्ञानक्रियानये ८० १५१-१५३ नायमीत्यावृत्त्या द्वयोः, सिद्धा- न्तपक्षः, उपसंहारः ८२ ॥ इति हुमपुष्पिकाध्य० १ ॥ ॥ अथ श्रामण्यपूर्विकाध्य० ॥ १५४ श्रमणनिक्षेपाः (४) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८३	१५५-१५९-१ प्र. श्रमणस्वरूपं, उरगविषा- द्युपमाः ८४ १६०-१६१ श्रमणैकार्थिकानि (११) (२०) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८५ ६* काममग्नः संकल्पवशः १६२-१६७ कामनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदय- कराः, अप्रशस्तेच्छा, धर्मोत्कामक- त्वात् कामत्वं, कामानां रोगत्वं, भावे इच्छामदनौ ८६ १६८-१७९ पदनिक्षेपाः (४) द्रव्ये आकु- ट्टिकाद्याः (११) भावेऽपराधेत्तरे, अन्त्ये मातृकानोमातृके, अन्त्ये प्रथितप्रकीर्णके चतुरनेकप्रकारे, गद्यपद्यगेयचौर्णस्वरूपं, इन्द्रियादी-	दशवै- कालिके. १-२-३ अध्ययने. ॥ १५७ ॥
नन्दीया अवुद्धयतनाः, उद्गमादिभो- जिनोऽगुप्ताः, योगेन्द्रियदमात् सा- धवः साधकाः १३८-१४९ दशावयवाः (प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा- विशुद्ध्यादयः प्रतिज्ञा तद्विषयविभागः हेतुः तद्विषयविभागः साध्यादिवि- पर्ययः तन्निषेधः दृष्टान्तस्तदाशङ्का- प्रतिषेधौ निश्चयः) ८० १५० ज्ञानक्रियानये ८० १५१-१५३ नायमीत्यावृत्त्या द्वयोः, सिद्धा- न्तपक्षः, उपसंहारः ८२ ॥ इति हुमपुष्पिकाध्य० १ ॥ ॥ अथ श्रामण्यपूर्विकाध्य० ॥ १५४ श्रमणनिक्षेपाः (४) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८३	१५५-१५९-१ प्र. श्रमणस्वरूपं, उरगविषा- द्युपमाः ८४ १६०-१६१ श्रमणैकार्थिकानि (११) (२०) पूर्वनिक्षेपाः (१३) ८५ ६* काममग्नः संकल्पवशः १६२-१६७ कामनिक्षेपाः (४) द्रव्ये उदय- कराः, अप्रशस्तेच्छा, धर्मोत्कामक- त्वात् कामत्वं, कामानां रोगत्वं, भावे इच्छामदनौ ८६ १६८-१७९ पदनिक्षेपाः (४) द्रव्ये आकु- ट्टिकाद्याः (११) भावेऽपराधेत्तरे, अन्त्ये मातृकानोमातृके, अन्त्ये प्रथितप्रकीर्णके चतुरनेकप्रकारे, गद्यपद्यगेयचौर्णस्वरूपं, इन्द्रियादी-					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) भावाचारे ज्ञानाचारादयः (सुलसा- श्रेणिक-वज्रस्वामि-आर्याषाढ-अका- लसूत्रपाठि-विद्याऽर्पकचण्डाल-आ- लापकशिव-अशकटपिता-नापितह- ष्टान्ताः) १०६ १९०-१९३ अर्थकामधर्ममिश्रकथाः, विद्या- शिल्पोपायानिर्वेदसंख्यदाक्ष्यसाम- दण्डभेदोपप्रदानान्यर्थकथा, (सार्थ- वाहसुतादिदृष्टान्तः) १०९ १९४ रूपवयोवेषदाक्ष्यविषयशिक्षादृष्ट्यु- तानुभूतसंस्तवाः कामकथा १९५-२०७ आचारव्यवहारप्रज्ञप्तिदृष्टिवादाः आक्षेपिण्यः, तद्रसः, स्वपरसमय- मिथ्यासम्यग्वादा विक्षेपिण्यः, आ- त्मपरशरीरेहपरलोकाः संवेजिन्यां, तद्रसः, इहपरलोकपापविपाकाः निर्वेदिन्याः, तद्रसः, संवेगनिर्वेदस्व- रूपं, कथापौर्वोपर्यं च ११४ २०८-२१७ लोकवेदसमयैः मिश्रा, स्त्रीभ- क्तराजचौरादि (९) विकथाः, प्रज्ञा- पकापेक्षयाऽकथाकथाविकथाः, तत्- स्वरूपं, श्रमणस्याकर्तव्यकर्तव्ये, कथाकरणघातरीत्यौ ११५ १७-२६* औद्देशिकादीन्यनाचीर्णानि (५२) ११८ २७-३१* आश्रववर्जनादि, आतापनादि, परी- षसहादि, दुष्करक्रियादि, कर्मक्षया- दियुताः सिद्धिगामिनः ११९ ॥ इति क्षुल्लिकाचारकथा ३ ॥ ॥ अथ षट्जीवनिकाध्य० ॥ ५+ षट्जीवनिकोद्देशः, संबन्धः १२० २१८-२२१ जीवाजीवाधिगमचारित्रधर्म (५)- यतनोपदेशधर्मफलानि प्रतिज्ञा, ए- ककनिक्षेपाः (७), षट्कनिक्षेपाः (६) २२२-२२३ निक्षेपप्ररूपणा लक्षणास्तित्वान्य- त्वामूर्तत्वनित्यत्वकर्तृत्वदेहव्यापित्व- शुणित्वोर्ध्वगतित्वनिर्मयत्वसाफल्यप- रिमाणैः जीवपरीक्षा १२१ २२४ जीवनिक्षेपाः (४) भावे ओषभवं- तद्भवाः ६-८+ अंगुणपर्यायो द्रव्ये, आयुष्मान् ओषे, चतुर्विधस्तद्भवे १२२ ९-१०+ सूक्ष्माः सर्वलोके, पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च, बादराः

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)								
	<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५८ ॥ </td><td style="width: 30%; vertical-align: top; padding: 10px;"> २२५-२२६, ११-१४+ लक्ष्मणकार्थिकानि (५) आदानपरिभोगयोगोपयोगक- षायलेश्याऽऽनप्राणप्राणेन्द्रियबन्धो- दयनिर्जराचितचेतनासंज्ञाज्ञानधार- णाबुद्धीहामतिवितर्काः लक्षणम् १२६ २५-३८+२२७ शब्दादस्तिता, न शून्य- सिद्धिः, जीवाभावे दानाद्यानर्थक्यं, नित्यो जीवः, पृथग्देहात्, अच्छेद्या- भेदः, सपुत्रीषः, आसीद् गजः, त्रिविधः संसारः, आदिमत्प्रतिनिय- ताकारात्, ज्ञानादेः ज्ञानसिद्धदर्शनात् आप्तवचनात् जीवसिद्धिः, अन्यत्वा- मूर्तत्वनित्यत्वानि १२८ ३९+४४ नेन्द्रियाण्युपलब्धिमन्ति, अमूर्त- नित्यत्वे १३० </td><td style="width: 30%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ४५-४७+कारणाविभागादि, नित्यत्वे कार- णाविभागविनाशाभावप्रत्ययाभावाः, विरुद्धाप्रादुर्भावाः १३० २२८-२२९, ४८-४९+ स्तनाभिलाषोपस्था- नादेर्नानित्यः, निर्मयः, उपसंहारः १३२ ५०-५७+ कर्तृत्वादीनि द्वाराणि १३४ २३०-२३१ कायनिक्षेपाः (१२) (कापोती- दृष्टान्तः,) निकायकायेन अधिकारः १३५ १ सू. षड्जीवनिकोद्देशपृच्छानिर्देशाः, षड्जीवनिकायस्वरूपं च १३८ २३२-२३३ शस्त्राग्निविषादीनि शस्त्राणि भा- ववाक्काया विरुद्धाभावे, स्वपरोभय- कायमयं द्रव्ये, असंयमो भावे १४० </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> २३४ मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृता १४० ५८-६०+ विध्वस्ताविध्वस्ते योन्यौ, अन्य- स्थापि व्युत्क्रमः मूलजीवकृतं प्रथमप- त्रकन्दादिवीजांतं, अध्ययनार्थाः पञ्च, सूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मबादरबादरसूक्ष्म- बादरबादरबादराः पुद्गलाः अणुस्क- न्धाद्याः, धर्माद्या नोपुद्गलाः १४३ २ षट्कायदण्डनिवृत्तिः ३ प्रथममहावते सूक्ष्मादिवधत्यागः (उप- स्थापनायां पटादिदृष्टान्ताः, पठितादौ) सूक्ष्मत्रसंस्थावरौ बादरत्रसंस्थावरौ च १४६ ४ सृषावादत्यागो द्वितीये, सद्भावप्रतिषे- धादिचतुर्भङ्गी च १४६ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 10px; text-align: right;"> दशवै- कालिके. ३-४ अ- ध्ययने. ॥ १५८ ॥ </td></tr> </table>				नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५८ ॥	२२५-२२६, ११-१४+ लक्ष्मणकार्थिकानि (५) आदानपरिभोगयोगोपयोगक- षायलेश्याऽऽनप्राणप्राणेन्द्रियबन्धो- दयनिर्जराचितचेतनासंज्ञाज्ञानधार- णाबुद्धीहामतिवितर्काः लक्षणम् १२६ २५-३८+२२७ शब्दादस्तिता, न शून्य- सिद्धिः, जीवाभावे दानाद्यानर्थक्यं, नित्यो जीवः, पृथग्देहात्, अच्छेद्या- भेदः, सपुत्रीषः, आसीद् गजः, त्रिविधः संसारः, आदिमत्प्रतिनिय- ताकारात्, ज्ञानादेः ज्ञानसिद्धदर्शनात् आप्तवचनात् जीवसिद्धिः, अन्यत्वा- मूर्तत्वनित्यत्वानि १२८ ३९+४४ नेन्द्रियाण्युपलब्धिमन्ति, अमूर्त- नित्यत्वे १३०	४५-४७+कारणाविभागादि, नित्यत्वे कार- णाविभागविनाशाभावप्रत्ययाभावाः, विरुद्धाप्रादुर्भावाः १३० २२८-२२९, ४८-४९+ स्तनाभिलाषोपस्था- नादेर्नानित्यः, निर्मयः, उपसंहारः १३२ ५०-५७+ कर्तृत्वादीनि द्वाराणि १३४ २३०-२३१ कायनिक्षेपाः (१२) (कापोती- दृष्टान्तः,) निकायकायेन अधिकारः १३५ १ सू. षड्जीवनिकोद्देशपृच्छानिर्देशाः, षड्जीवनिकायस्वरूपं च १३८ २३२-२३३ शस्त्राग्निविषादीनि शस्त्राणि भा- ववाक्काया विरुद्धाभावे, स्वपरोभय- कायमयं द्रव्ये, असंयमो भावे १४०	२३४ मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृता १४० ५८-६०+ विध्वस्ताविध्वस्ते योन्यौ, अन्य- स्थापि व्युत्क्रमः मूलजीवकृतं प्रथमप- त्रकन्दादिवीजांतं, अध्ययनार्थाः पञ्च, सूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मबादरबादरसूक्ष्म- बादरबादरबादराः पुद्गलाः अणुस्क- न्धाद्याः, धर्माद्या नोपुद्गलाः १४३ २ षट्कायदण्डनिवृत्तिः ३ प्रथममहावते सूक्ष्मादिवधत्यागः (उप- स्थापनायां पटादिदृष्टान्ताः, पठितादौ) सूक्ष्मत्रसंस्थावरौ बादरत्रसंस्थावरौ च १४६ ४ सृषावादत्यागो द्वितीये, सद्भावप्रतिषे- धादिचतुर्भङ्गी च १४६	दशवै- कालिके. ३-४ अ- ध्ययने. ॥ १५८ ॥
नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५८ ॥	२२५-२२६, ११-१४+ लक्ष्मणकार्थिकानि (५) आदानपरिभोगयोगोपयोगक- षायलेश्याऽऽनप्राणप्राणेन्द्रियबन्धो- दयनिर्जराचितचेतनासंज्ञाज्ञानधार- णाबुद्धीहामतिवितर्काः लक्षणम् १२६ २५-३८+२२७ शब्दादस्तिता, न शून्य- सिद्धिः, जीवाभावे दानाद्यानर्थक्यं, नित्यो जीवः, पृथग्देहात्, अच्छेद्या- भेदः, सपुत्रीषः, आसीद् गजः, त्रिविधः संसारः, आदिमत्प्रतिनिय- ताकारात्, ज्ञानादेः ज्ञानसिद्धदर्शनात् आप्तवचनात् जीवसिद्धिः, अन्यत्वा- मूर्तत्वनित्यत्वानि १२८ ३९+४४ नेन्द्रियाण्युपलब्धिमन्ति, अमूर्त- नित्यत्वे १३०	४५-४७+कारणाविभागादि, नित्यत्वे कार- णाविभागविनाशाभावप्रत्ययाभावाः, विरुद्धाप्रादुर्भावाः १३० २२८-२२९, ४८-४९+ स्तनाभिलाषोपस्था- नादेर्नानित्यः, निर्मयः, उपसंहारः १३२ ५०-५७+ कर्तृत्वादीनि द्वाराणि १३४ २३०-२३१ कायनिक्षेपाः (१२) (कापोती- दृष्टान्तः,) निकायकायेन अधिकारः १३५ १ सू. षड्जीवनिकोद्देशपृच्छानिर्देशाः, षड्जीवनिकायस्वरूपं च १३८ २३२-२३३ शस्त्राग्निविषादीनि शस्त्राणि भा- ववाक्काया विरुद्धाभावे, स्वपरोभय- कायमयं द्रव्ये, असंयमो भावे १४०	२३४ मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृता १४० ५८-६०+ विध्वस्ताविध्वस्ते योन्यौ, अन्य- स्थापि व्युत्क्रमः मूलजीवकृतं प्रथमप- त्रकन्दादिवीजांतं, अध्ययनार्थाः पञ्च, सूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मसूक्ष्मबादरबादरसूक्ष्म- बादरबादरबादराः पुद्गलाः अणुस्क- न्धाद्याः, धर्माद्या नोपुद्गलाः १४३ २ षट्कायदण्डनिवृत्तिः ३ प्रथममहावते सूक्ष्मादिवधत्यागः (उप- स्थापनायां पटादिदृष्टान्ताः, पठितादौ) सूक्ष्मत्रसंस्थावरौ बादरत्रसंस्थावरौ च १४६ ४ सृषावादत्यागो द्वितीये, सद्भावप्रतिषे- धादिचतुर्भङ्गी च १४६	दशवै- कालिके. ३-४ अ- ध्ययने. ॥ १५८ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ५ अदत्ताशनविरतिः तृतीये १४७ ६ मैथुनविरतिः चतुर्थे १४८ ७ परिग्रहविरतिः पञ्चमे १४९ ८-९ शत्रिभोजनविरतिः षष्ठे, चतुर्भङ्गी, सप्तम्ये (४७)भङ्गाः, प्रतिपत्तिश्च १५१ १० पृथिवीकायवधत्यागः ११ अप्कायवधत्यागः १५२ १२ अग्निकायवधत्यागः १५३ १३ वायुकायवधत्यागः १५४ १४ वनस्पतिकायवधत्यागः १५५ १५ व्रसकायवधत्यागः ३२-४७* अयतनायाः कटुकं फलं, यत्नया गमनादि, पापकर्मावन्धकस्थितिः १५७ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ४१-५६* १प्र. जीवाजीवज्ञस्य संयमः, ततः पारम्पर्येण क्रमशः सिद्धत्वं, सुगते-दुर्लभसुलभत्वे, प्रियतपआदेः पश्चादप्यमरभवनं १५९ ५७-५९* २३५ श्रामण्याविराधनोपदेशः उप-संहारश्च १६० ॥ इति षड्जीवनिर्वाहः ४ ॥ ॥ अथ पिण्डैषणाध्ययनम् ॥ ६१-६२+२३६-२४६ उपक्रमः पिण्डे एष-णायां च निक्षेपाः, द्रव्ये गुडौदनादि भावे क्रोधादिकाः, धात्वर्थः पिण्ड-शब्दार्थः, सचित्तादीनां द्रव्यैषणा, भावे प्रशस्ता ज्ञानादिना अप्रशस्ता क्रोधादिना, भावस्योपकारित्वं द्रव्यै- </td><td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> षणायाः, अधिकाराः, कोटिनवकं षट्सुहृमकोटिः, क्रीतत्रिके विशुद्धिः, विशुद्ध्यविशुद्धिकोट्यौ, नवाष्टदशादि-भेदाः १६३ ६०-६१* मिश्राकाले अव्याक्षिप्तेन चरणम् ६२-६७* महीं पश्यन् बीजहरितादि अव-पातविज्जलमादि संक्रमं अङ्गारादि वृ-ष्ट्यादि च वर्जयन् १६४ ६८-७०* वैश्यासामन्ते अनायतने अच-रणम् १६५ ७१-७७* श्वाद्यनुल्लंघनं अनुमतादि स्थानं द्रुतगमनादिवर्जनं आलोकाद्यध्यानं राजादिरक्ष्यवर्जनं प्रतिकुष्ठादिनि-षेधः कपाटानुद्घाटनं १६७ </td></tr> </table>	५ अदत्ताशनविरतिः तृतीये १४७ ६ मैथुनविरतिः चतुर्थे १४८ ७ परिग्रहविरतिः पञ्चमे १४९ ८-९ शत्रिभोजनविरतिः षष्ठे, चतुर्भङ्गी, सप्तम्ये (४७)भङ्गाः, प्रतिपत्तिश्च १५१ १० पृथिवीकायवधत्यागः ११ अप्कायवधत्यागः १५२ १२ अग्निकायवधत्यागः १५३ १३ वायुकायवधत्यागः १५४ १४ वनस्पतिकायवधत्यागः १५५ १५ व्रसकायवधत्यागः ३२-४७* अयतनायाः कटुकं फलं, यत्नया गमनादि, पापकर्मावन्धकस्थितिः १५७	४१-५६* १प्र. जीवाजीवज्ञस्य संयमः, ततः पारम्पर्येण क्रमशः सिद्धत्वं, सुगते-दुर्लभसुलभत्वे, प्रियतपआदेः पश्चादप्यमरभवनं १५९ ५७-५९* २३५ श्रामण्याविराधनोपदेशः उप-संहारश्च १६० ॥ इति षड्जीवनिर्वाहः ४ ॥ ॥ अथ पिण्डैषणाध्ययनम् ॥ ६१-६२+२३६-२४६ उपक्रमः पिण्डे एष-णायां च निक्षेपाः, द्रव्ये गुडौदनादि भावे क्रोधादिकाः, धात्वर्थः पिण्ड-शब्दार्थः, सचित्तादीनां द्रव्यैषणा, भावे प्रशस्ता ज्ञानादिना अप्रशस्ता क्रोधादिना, भावस्योपकारित्वं द्रव्यै-	षणायाः, अधिकाराः, कोटिनवकं षट्सुहृमकोटिः, क्रीतत्रिके विशुद्धिः, विशुद्ध्यविशुद्धिकोट्यौ, नवाष्टदशादि-भेदाः १६३ ६०-६१* मिश्राकाले अव्याक्षिप्तेन चरणम् ६२-६७* महीं पश्यन् बीजहरितादि अव-पातविज्जलमादि संक्रमं अङ्गारादि वृ-ष्ट्यादि च वर्जयन् १६४ ६८-७०* वैश्यासामन्ते अनायतने अच-रणम् १६५ ७१-७७* श्वाद्यनुल्लंघनं अनुमतादि स्थानं द्रुतगमनादिवर्जनं आलोकाद्यध्यानं राजादिरक्ष्यवर्जनं प्रतिकुष्ठादिनि-षेधः कपाटानुद्घाटनं १६७
५ अदत्ताशनविरतिः तृतीये १४७ ६ मैथुनविरतिः चतुर्थे १४८ ७ परिग्रहविरतिः पञ्चमे १४९ ८-९ शत्रिभोजनविरतिः षष्ठे, चतुर्भङ्गी, सप्तम्ये (४७)भङ्गाः, प्रतिपत्तिश्च १५१ १० पृथिवीकायवधत्यागः ११ अप्कायवधत्यागः १५२ १२ अग्निकायवधत्यागः १५३ १३ वायुकायवधत्यागः १५४ १४ वनस्पतिकायवधत्यागः १५५ १५ व्रसकायवधत्यागः ३२-४७* अयतनायाः कटुकं फलं, यत्नया गमनादि, पापकर्मावन्धकस्थितिः १५७	४१-५६* १प्र. जीवाजीवज्ञस्य संयमः, ततः पारम्पर्येण क्रमशः सिद्धत्वं, सुगते-दुर्लभसुलभत्वे, प्रियतपआदेः पश्चादप्यमरभवनं १५९ ५७-५९* २३५ श्रामण्याविराधनोपदेशः उप-संहारश्च १६० ॥ इति षड्जीवनिर्वाहः ४ ॥ ॥ अथ पिण्डैषणाध्ययनम् ॥ ६१-६२+२३६-२४६ उपक्रमः पिण्डे एष-णायां च निक्षेपाः, द्रव्ये गुडौदनादि भावे क्रोधादिकाः, धात्वर्थः पिण्ड-शब्दार्थः, सचित्तादीनां द्रव्यैषणा, भावे प्रशस्ता ज्ञानादिना अप्रशस्ता क्रोधादिना, भावस्योपकारित्वं द्रव्यै-	षणायाः, अधिकाराः, कोटिनवकं षट्सुहृमकोटिः, क्रीतत्रिके विशुद्धिः, विशुद्ध्यविशुद्धिकोट्यौ, नवाष्टदशादि-भेदाः १६३ ६०-६१* मिश्राकाले अव्याक्षिप्तेन चरणम् ६२-६७* महीं पश्यन् बीजहरितादि अव-पातविज्जलमादि संक्रमं अङ्गारादि वृ-ष्ट्यादि च वर्जयन् १६४ ६८-७०* वैश्यासामन्ते अनायतने अच-रणम् १६५ ७१-७७* श्वाद्यनुल्लंघनं अनुमतादि स्थानं द्रुतगमनादिवर्जनं आलोकाद्यध्यानं राजादिरक्ष्यवर्जनं प्रतिकुष्ठादिनि-षेधः कपाटानुद्घाटनं १६७		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५९ ॥ </td><td style="width: 66%; vertical-align: top;"><table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८० </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६ </td></tr></table></td></tr></table> दशवै- कालिके. ४-५-६ अध्ययने ॥ १५९ ॥	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५९ ॥	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८० </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६ </td></tr></table>	७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४	११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८०	१५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६
नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १५९ ॥	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८० </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६ </td></tr></table>	७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४	११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८०	१५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६		
७८* वचोमूत्रयोरधारणं ७९-८५* नीचद्वारादिपुष्पाकीर्णादिवर्जनम्, एलकाद्यनुलंघनं, असंसक्तं लोकनं, अतिभूमिवर्जनं, स्नानादिसंलोकवर्जनं, दकमृत्तिकादिवर्जनं १६८ ८६-८८* अकल्प्यं परिशादितं प्राणादिस- म्मर्दयुतं च वर्जयेत् १६९ ८९-९५* सचित्ते निक्षिप्तादिः, अवगाह्य, पु- रःकर्मणा, उदकाद्रादि, असंस्तुष्टेन वर्जनम् १७० ९६-१०३* अनिस्तुष्टस्य, गुर्विण्याः कालमासे, स्तन्यं दद्यात् न प्राह्या भिक्षा १७२ १०४-११३* दकवारादिपिहितं, दानपुण्यव- नीपकश्रमणार्थकमकल्पम् १७४	११४-१२३* औद्देशिकादि (७) वर्जनं निः- शंकितप्रहः पुष्पाद्युन्मिश्रं दकतेजोनि- क्षिप्तं दत्त्वष्कनादिना अकल्प्यम् १७५ १२४-१२८* संक्रमनिश्रेण्याद्यारोहेण व- र्जनं १७६ १२९-१३३* कंदादि, सक्तचूर्णादि, सरज- आदि, बह्वस्थिकादि, बहुवृक्षितकं च वर्ज्यं १७७ १३४-१४०* चिरधौतमजीवमास्वाद्यानल्य- स्त्वं गृहीयात्, विपरीतं परिष्ठा- पयेत् १७८ १४१-१४५* गोचरे भोजनविधिः १७८ १४६-१५५* आलोचनविधिः स्वाध्यायो वि- श्रामणा निमग्नं भोजनं च १८०	१५६-१५९* तिकादेरनिन्दा मुग्धायाजिजी- विनौ दुर्लभौ सुगतिकौ च (परित्रा- जकट्टान्तः) १८२ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ १६०-१६२* सर्वभोजनं, असंस्तरे पुनर्ग- वेषणं १६३-१७२* काले निष्क्रमादि, अकालचरणे गर्हा, अलाभे न शोचः, भक्तार्थ्यनु- लङ्घनं, कथात्यागः, अर्गलाद्यनवष्ट- म्भनं, श्रमणाद्यनतिक्रमणम् १८४ १७३-१८३* उत्पलादि संलुच्य संमर्द्य दत्तं न गृह्णीयात्, अनिर्वृतं शाल्कादि- प्रवालादि-तरुणिकादि-कोलतन्दुलक- पित्तफलमन्धवादिवर्जनम् १८६				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १८४-१८७* समुदानचरोऽदीनः, अदा- नेऽक्रोधः १८६ १८८-१८९* वन्दमानं न याचेत, नत्यनत्योः साम्यं १८६ १९०-१९४* अनिगूहनं, अमोक्षोऽन्यथा, विरसानयने पूजाद्यर्थं मायाशल्यादि च १८७ १९५-२००* सुरामेरकादिदोषाः १८८ २०१-२०४* तपस्विनोऽमद्यपस्य गुणाः २०५-२०८* तपोवयोरूपस्तेनदोषाः २०९* भिक्षेष्णाशोधिफलं १९० ॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥ ॥ इति पिण्डै- षणा० ५ ॥ ॥ अथ महाचारकथा ॥ २४७ आचारनिक्षेपाद्यतिदेशः १९१ २१०-२१४* राजादिकृतः गर्णिं प्रति धर्म- प्रभः, साध्वाचारयुतः दुश्चरं आचारं कथयेत् १९२ २४८-२५० अगार्यनगारधर्मौ, अनुव्रतादिकः (१२) क्षान्त्यादिकश्च (१०) १९२ २५१-२६० अर्थनिक्षेपाः (४) द्रव्ये (६) व्यतिरिक्ते धान्यानि (२४) रत्नानि (२४) स्थावरः (३) द्विपदः (२) चतुष्पदः (१०) कुप्यभेदः (६४) १९३ २६१-२६४ कामः सम्प्राप्तः दृष्टिसम्पातादिकः (१४) असम्प्राप्तः अभिलाषचिन्ता- दिकः (१०) १९४ २६५-२६८ धर्मार्थकामाः जिनवचनेऽविरो- धिनः, स्वच्छाशयप्रयोगात्, धर्म- फलमोक्षाभिप्रायात् जिनमते मोक्षः १९५ २१५-२१६* २६९-२७० सक्षुल्लकव्यक्तानां स्थानानि व्रतषट्कादीनि अष्टादश, अन्यतरसेवको न श्रवणः १९६ २१७-२३४* प्रथमे सर्वजीवाहिंसा प्रियजी- वितत्वात्, अविश्वासभूमिर्मुषा, त- न्नात्मपरार्थं ब्रूयात्, दन्तशोधनमा- त्रमपि नादत्तं गृहीयात्, घोरमधर्म- मूलं मैथुनं न सेवेत, बीडादिसन्नि- धिं न कुर्यात्, वस्त्रादि संयमार्थं, दे- हेऽपि न ममता, एकभक्तं, रात्रौ सूक्ष्म- प्राणादर्शनं, उदकाद्रादिवर्जनं २००		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६० ॥ २३५-२५४* तस्य तदाश्रितानां च वधात् पृथ्वीजलवनस्पतीनां, तीक्ष्णषड्दिक- त्रसानां, सर्वभूतशस्त्रत्वात् तेजसः, तालवृन्तादिना वस्त्रादिना वातस्य २०२ २५५-२५८* अकल्प्यपिण्डशय्यावस्त्रपात्र- त्यागः, नित्यक्रीतौद्देशिकाहृतत्यागः (शिक्षकाकल्पस्थापनाकल्पौ) २०२ २५९-२६१* शीतौदकारम्भात् पश्चात्पुरः- कर्मसम्भवात् कांस्यादिभाजनेषु न भोजनं २०३ २६२-२६४* दुष्प्रतिलेख्यत्वात् आसन्न्या- द्यभोगः २०४ २६५-२६८* ब्रह्मचर्यविपत्तेः वनीपकप्रति- घातात् प्रतिक्रोधादेश्च अवृद्धादेर्गृहे- ऽनिषदनं २६८ २६९-२७२* शुषिरादिषु प्राणसत्त्वात् खानं कल्कादिकं वा कोऽपि नाचरेत् २०६ २७३-२७५* उपरतमैथुनस्य विभूषावर्जनं २७६-२७७* कर्मक्षयानादाने आचारफलं ॥ इति महाचारकथा ६ ॥ ॥ अथ वाक्यशुद्ध्यध्ययनम् ॥ २७९-२८४ वाक्यनिक्षेपाः (४) द्रव्ये भाषा- द्रव्याणि, वचनैकार्थिकानि (१२) ग्रहणनिसर्गपराघातैर्द्रव्ये, श्रुतचारि- त्रैर्भावः, आराधना सत्या, विराधने सृष्टा, सत्या जनपदादिभेदेन दशधा, क्रोधमानादिभिरसत्या दशधा, उ- त्पन्नविगतादिभिर्मिश्रा दशधा, आ- मन्त्रण्यादिभिर्व्यवहारे द्वादशधा, प्र- दशवै- कालिके, ७-८ अध्या, ॥ १६० ॥			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) २८२-२८७* नेपथ्यस्थितं स्त्रीत्वेन भाषणे चैत्पापं तदाऽनृते किं न ? एष्यदादौ शंक्यतां न ब्रूयात् २१५ २८८-२९७* परुषादि कणादि होलादि आर्थिकादि हलादि न ब्रूयात् २१६ २९८-३०२* पुंस्त्रीति स्थूलादि दोष्हादि न ब्रूयात्, परिवृढादि युवगवित्यादि ब्रूयात् २१७ ३०३-३१२* प्रासादादि-पीठादि-आसनादि-योग्या इति न ब्रूयात्, जातिमन्त इत्यादि ब्रूयात्, पक्कफलेत्यादि न, असंस्तृता इत्यादि ब्रूयात् २१९ ३१३-३२३* पक्क ओषधिः इत्यादि न ब्रूयात् रुढा इत्यादि ब्रूयात्, संखड्यादौ वाग्विधिः, नद्यादौ आहारादौ उत्कृष्टमहार्घतादौ सन्देशे क्रयादौ अल्पार्घतादौ च वाग्विधिः २२१ ३२४-३३१* आख आयात इत्यादि नासंय- ताय लपेत्, असाधुं साधुं नालपेत्, ज्ञानादियुतं साधुमालपेत्, युद्धे जया- जयौ वातवृष्ट्यादि मेघादिकं देवादि- त्वेन सावधानुमोदकत्वेन न ब्रूयात्, अवधारणोपघातक्रोधादियुतं न ब्रू- यात् २२३ ३३२-३३४* अनुवीच्यभाषायां प्रशंसा, द्वितानुलोमतादि तत्फलं च २२४ ॥ इति वाक्यशुद्धाध्ययनम् ७ ॥ ॥ अथाचारप्रणिध्यध्य० ॥ २९५-३०० आचारेऽतिदेशः, द्रव्यभावाभ्यां प्रणिधिः, द्रव्ये निधानादि, भावे इ- न्द्रियनोऽन्द्रिययोः रागादित्यागः प्रशस्तः, अन्यथाऽप्रशस्तः, तुरगवत् इन्द्रियाणि २२५ ३०१-३१० क्रोधादिरोषे नोऽन्द्रियप्रणिधिः, कषायारोषे गजस्नानवत् इक्षुपुष्पवत् निष्फलं श्रामण्यं, शुद्धेः प्रशस्ताप्रश- स्तत्वं, तयोः फलं, अनायतनानि त्यक्त्वा संयमार्थं प्रणिधिः, प्रणिध्य- प्रणिधिफलं २२७ ३३५-३४६* आचारप्रणिधिप्रतिज्ञा, पृथ्व्या- दयो जीवाः तद्वधवर्जनं, तद्वधभे- दनिषदनादिवर्जनं, शीतोदकं उदका- द्रादिसेवासंलेखनादिवर्जनं, अग्निभा-

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)					
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६१ ॥ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> दिघट्टनादिवर्जनं, व्यजनवर्जनं कृणादि छेदादिवर्जनं त्रसर्हिंसावर्जनं २२९ ३४७-३५०* अष्ट सूक्ष्माणि ३५१-३६२* पात्रादिप्रतिलेखना उच्चार- दिपरिष्ठापना परागारे स्थानभाषा- यतना, दृष्टादेरनाख्येयत्वं, गृहियो- गासमाचारः, लाभालाभानिर्देशः, अ- प्रासुकक्रीताद्यभोजनं, सन्निधिवर्जनं, रूक्षवृत्तित्वादि, शब्देऽरागः, स्पर्श- सहनं, क्षुदादिसहनं, रात्रावभोजनं च २३२ ३६३-३७४* अतिन्तनादि परिभववर्जनादि संवरणादि जितेन्द्रियत्वादि अमोघ- वचनत्वादि भोगनिवृत्त्यादि, जरादि- </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> पीडाद्यभावे धर्मकृतिः क्रोधादेरवमने दोषाः घातोपायाः फलं च २३४ ३७५-३८४* रत्नाधिकविनयादि अल्पनि- द्रत्वादि श्रमणधर्मयोगादि बहुश्रुत- पर्युपासनादि आलीनगुप्तत्वादि पक्षा- दिष्वनिषदनं पृष्ठमांसादिवर्जनं अप्री- तिकवर्जनं दृष्टादिवादित्वं अनुपहासः २३६ ३८५-३९४* नक्षत्राद्यनाख्यानां उच्चारभूमि- युक्तशय्यादि नारीकथावर्जनादि चि- न्तस्थस्त्रियः अध्ययनं अकर्णनाशया अपि वर्जनं विभूषादेर्विषत्वं अंगाद्य- निरीक्षणं विषयेष्वप्रेम अतृष्णत्वादि २३८ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ३९५-३९८* निष्क्रमगश्रद्धापालनं तपः- स्वाध्यायादि स्वाध्यायध्यानादिफलं दुःखसहजितेन्द्रियादेर्मोक्षः २३९ ॥ इत्याचारप्रणिध्यध्ययनम् ८ ॥ ॥ अथ विनयसमाध्यध्य० ॥ ३९९-४०४ विनयसमाध्योर्निक्षेपाः (४-४) द्रव्ये तिनिशसुवर्णादीनि, भावे लो- कोपचारे अभ्युत्थानाञ्जल्यासनाति- थिदेवपूजाः (५) अर्थे कामे भये च अ- भ्यासवृत्तिऽछन्दोऽनुवर्तनावसरदान- दानाभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानादि, मोक्षे (५), दर्शने सद्भावश्रद्धानं ज्ञाने पठन- गुणनकृत्यानि चारित्र्ये कर्मापचयः तपसि स्वर्गमोक्षसाधनं, प्रतिरूपे </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> दशवै- कालिके. ८-९ अ. ॥ १६१ ॥ </td></tr></table>	नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६१ ॥	दिघट्टनादिवर्जनं, व्यजनवर्जनं कृणादि छेदादिवर्जनं त्रसर्हिंसावर्जनं २२९ ३४७-३५०* अष्ट सूक्ष्माणि ३५१-३६२* पात्रादिप्रतिलेखना उच्चार- दिपरिष्ठापना परागारे स्थानभाषा- यतना, दृष्टादेरनाख्येयत्वं, गृहियो- गासमाचारः, लाभालाभानिर्देशः, अ- प्रासुकक्रीताद्यभोजनं, सन्निधिवर्जनं, रूक्षवृत्तित्वादि, शब्देऽरागः, स्पर्श- सहनं, क्षुदादिसहनं, रात्रावभोजनं च २३२ ३६३-३७४* अतिन्तनादि परिभववर्जनादि संवरणादि जितेन्द्रियत्वादि अमोघ- वचनत्वादि भोगनिवृत्त्यादि, जरादि-	पीडाद्यभावे धर्मकृतिः क्रोधादेरवमने दोषाः घातोपायाः फलं च २३४ ३७५-३८४* रत्नाधिकविनयादि अल्पनि- द्रत्वादि श्रमणधर्मयोगादि बहुश्रुत- पर्युपासनादि आलीनगुप्तत्वादि पक्षा- दिष्वनिषदनं पृष्ठमांसादिवर्जनं अप्री- तिकवर्जनं दृष्टादिवादित्वं अनुपहासः २३६ ३८५-३९४* नक्षत्राद्यनाख्यानां उच्चारभूमि- युक्तशय्यादि नारीकथावर्जनादि चि- न्तस्थस्त्रियः अध्ययनं अकर्णनाशया अपि वर्जनं विभूषादेर्विषत्वं अंगाद्य- निरीक्षणं विषयेष्वप्रेम अतृष्णत्वादि २३८	३९५-३९८* निष्क्रमगश्रद्धापालनं तपः- स्वाध्यायादि स्वाध्यायध्यानादिफलं दुःखसहजितेन्द्रियादेर्मोक्षः २३९ ॥ इत्याचारप्रणिध्यध्ययनम् ८ ॥ ॥ अथ विनयसमाध्यध्य० ॥ ३९९-४०४ विनयसमाध्योर्निक्षेपाः (४-४) द्रव्ये तिनिशसुवर्णादीनि, भावे लो- कोपचारे अभ्युत्थानाञ्जल्यासनाति- थिदेवपूजाः (५) अर्थे कामे भये च अ- भ्यासवृत्तिऽछन्दोऽनुवर्तनावसरदान- दानाभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानादि, मोक्षे (५), दर्शने सद्भावश्रद्धानं ज्ञाने पठन- गुणनकृत्यानि चारित्र्ये कर्मापचयः तपसि स्वर्गमोक्षसाधनं, प्रतिरूपे	दशवै- कालिके. ८-९ अ. ॥ १६१ ॥
नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६१ ॥	दिघट्टनादिवर्जनं, व्यजनवर्जनं कृणादि छेदादिवर्जनं त्रसर्हिंसावर्जनं २२९ ३४७-३५०* अष्ट सूक्ष्माणि ३५१-३६२* पात्रादिप्रतिलेखना उच्चार- दिपरिष्ठापना परागारे स्थानभाषा- यतना, दृष्टादेरनाख्येयत्वं, गृहियो- गासमाचारः, लाभालाभानिर्देशः, अ- प्रासुकक्रीताद्यभोजनं, सन्निधिवर्जनं, रूक्षवृत्तित्वादि, शब्देऽरागः, स्पर्श- सहनं, क्षुदादिसहनं, रात्रावभोजनं च २३२ ३६३-३७४* अतिन्तनादि परिभववर्जनादि संवरणादि जितेन्द्रियत्वादि अमोघ- वचनत्वादि भोगनिवृत्त्यादि, जरादि-	पीडाद्यभावे धर्मकृतिः क्रोधादेरवमने दोषाः घातोपायाः फलं च २३४ ३७५-३८४* रत्नाधिकविनयादि अल्पनि- द्रत्वादि श्रमणधर्मयोगादि बहुश्रुत- पर्युपासनादि आलीनगुप्तत्वादि पक्षा- दिष्वनिषदनं पृष्ठमांसादिवर्जनं अप्री- तिकवर्जनं दृष्टादिवादित्वं अनुपहासः २३६ ३८५-३९४* नक्षत्राद्यनाख्यानां उच्चारभूमि- युक्तशय्यादि नारीकथावर्जनादि चि- न्तस्थस्त्रियः अध्ययनं अकर्णनाशया अपि वर्जनं विभूषादेर्विषत्वं अंगाद्य- निरीक्षणं विषयेष्वप्रेम अतृष्णत्वादि २३८	३९५-३९८* निष्क्रमगश्रद्धापालनं तपः- स्वाध्यायादि स्वाध्यायध्यानादिफलं दुःखसहजितेन्द्रियादेर्मोक्षः २३९ ॥ इत्याचारप्रणिध्यध्ययनम् ८ ॥ ॥ अथ विनयसमाध्यध्य० ॥ ३९९-४०४ विनयसमाध्योर्निक्षेपाः (४-४) द्रव्ये तिनिशसुवर्णादीनि, भावे लो- कोपचारे अभ्युत्थानाञ्जल्यासनाति- थिदेवपूजाः (५) अर्थे कामे भये च अ- भ्यासवृत्तिऽछन्दोऽनुवर्तनावसरदान- दानाभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानादि, मोक्षे (५), दर्शने सद्भावश्रद्धानं ज्ञाने पठन- गुणनकृत्यानि चारित्र्ये कर्मापचयः तपसि स्वर्गमोक्षसाधनं, प्रतिरूपे	दशवै- कालिके. ८-९ अ. ॥ १६१ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) काये अभ्युत्थानाञ्जल्यासनदानामि- प्रहृष्टिकर्मेशुश्रूषानुगमसंसाधनानि (८) वाचि हितमितापरुषानुवीच्य- भाषा (४) मनसि कुशलाकुशलो- दीरणरोधौ २४१ ३२५-३२८ परानुवृत्तिमये प्रतिरूपे तीर्थ- करसिद्धकुलगुणसङ्गक्रियाधर्मज्ञान- ज्ञान्याचारस्थविरोपाध्यायगणिनाम- नाशातनाभक्तिबहुमानकीर्तनैः (५२) केवलिनामप्रतिरूपः २४२ ३२९ द्रव्यसमाधौ त्रिफलादि, भावसमधौ दर्शनज्ञानचारित्रतपांसि ३९९-४०८* स्तम्भक्रोधमदप्रमादेभ्यो वि- नयाशिक्षणं, मन्दबालाल्पश्रुत इति गुरुनिन्दया मिथ्यात्वं, आशातिता गुरवः शिखीव नाम इव अनर्थाय अबोधये च, पावकाद्याक्रमणादिवत्, आशातना दुर्मोचा च, पर्वतादि- भेदादिवच्च, मोक्षाकांक्षी गुरुप्रसादे- प्सी २४५ ४०९-४१५* उपगतज्ञानोऽप्याचार्यमुपति- ष्ठेत्, धर्मपदशिक्षकं सत्कारयेत्, लज्जादयादिशिक्षकं पूजयेत्, श्रुत- शीलयुतः सूरिः सूर्यवत् इन्द्रवत् च- न्द्रवच्च धर्मकामिनां तोष्यः, आ- चार्याराधकस्य सिद्धिः । २४६ ॥ इति प्रथम उद्देशः ॥ ४१६-४१७* मूलात् स्कन्धादिवत् धर्मात् कीर्तिश्रुतादि, २४६ ४१८-४२४* अविनीतस्य काष्ठवत् वहनं, शिक्षायां कोपनः श्रीनिषेधकः, वि- नीताविनीतयोस्तथाविधहयगजवत् नरनारीवत् देवेशगुह्यकवत् सुख- दुःखे २४८ ४२५-४३८* आचार्यशुश्रूषया शिक्षावृद्धिः, शिल्पाद्यर्थं गृहिणोऽपि बन्धवधादि, गुरुपूजकाश्च, किं पुनः श्रुतग्रहे, मीचशय्यागतस्थानादि, अपराधक्षा- मणा, दुर्बुद्धिर्गलिगोवत् नोदनार्थी, कालादिकमवेक्ष्य कुर्यात्, विनया- विनयफलं ज्ञात्वा शिक्षेत, न च- ण्डादिकस्य मोक्षः, निर्देशवर्त्यादीनां सिद्धिः २५१ ॥ इति द्वितीय उद्देशः ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६२ ॥ ४३९-४५१* इति ज्ञात्वा आचार्यमारा- धयेत्, आचाराय विनयः, गुर्वना- शासनः पूज्यः, रात्रिकादिषु विनीतः, अज्ञातोच्छादि, अल्पेच्छादि, वाक्- टकसहः, दुरुक्तानि वैरानुबंधीनि, धर्माय वचनाभिघातसहनं, अवर्ण- वादप्रत्यनीकावधारणीवर्जकः, लोलु- पादिरहितः, समरागद्वेषः, अहेलकः, पूज्यपूजकादि, पञ्चव्रतादि, गुरु- प्रतिचरणात् मोक्षः २५५ ॥ इति तृतीय उद्देश ॥ १६-४५४* विनयश्रुततपआचारसमाध्यु- द्देशः, विनयादिपण्डिता आत्मा- रामाः २५६ १७-४५५* शुश्रूषाप्रतिपत्तिः आराधनाऽ- नुत्कर्षः विनये २५६ १८-४५६* ज्ञानैकाग्रचित्तस्वपरस्थापनानि श्रुते २५७ १९-४५७* इहलोकपरलोककीर्त्याद्यर्थं न, किंतु निर्जेरायै तपः २०-४५८-४६०* इहलोकपरलोककीर्त्याद्यैर्न किन्त्वार्हतेर्हेतुभिः उक्तसमाधिमान् स्वपक्षक्षेमकारी सिद्धो देवो वा स्यात् । २५८ ॥ इति चतुर्थ उद्देशः ॥ ॥ इति विन- याध्ययनम् ९ ॥ अथ समिक्षवध्यम् ॥ ३३०-३६० सकारनिक्षेपाः (४) द्रव्ये प्रक्ष- - सानिर्वैशास्तिभावेऽपि, एतत्सूत्रोक्त- करणीयो भिक्षुः अध्ययनगुणनि- युक्तश्च, भिक्षुनिक्षेपाः (४) निरुक्ते- कार्थिकलिङ्गानि, नागुणस्थितो भिक्षुः, पञ्चावयवाः, भेदकभेदनभेत्तव्यानि, अविरता याचका द्रव्यमिक्षाकाः, सदारम्भकाः गृहिणोऽपि, मिथ्याह- ष्टिर्हिंसकाब्रह्मचारिपरिग्रहृतसचित्त- पचदुर्दिष्टभोजिनः, करणयोगयो- गात्मादित्रिकत्रिकमन्तः स्त्रीपरिग्रह- वन्तः द्रव्ये मिश्रवः, भावे उपयुक्तो ज्ञाता गुणवांश्च, भेत्ता, ज्ञानी तपो भेदनं कर्म भेत्तव्यं, क्षुधो भेदात् भिक्षुः, यतनाद् यतिः संयमचरणात् दशवै- कालिके. ९-१० अ. ॥ १६२ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) २८ नं० चरकः, भवं क्षिपन् क्षपकः, भवान्तः, भिक्षणात् भिक्षुः ऋणक्षपणाद्वा, तपः-संयमाभ्यां तपस्वी, निर्मन्थैकार्थिकानि (२८) संवेगादीनि लिङ्गानि (१७) अध्ययनगुणो भिक्षुः, नान्यः अगुण-त्वात्, सुवर्णवत् न, विषघातनादयः (८) सुवर्णगुणाः, कषच्छेदाविशुद्धं विषघातादिगुणवत् सुवर्णं, न शेषं, न नामरूपाभ्यां भिक्षुः, युक्तिसुवर्णेऽपि न सुवर्णता, अध्ययनोक्ता भिक्षु-गुणाः, तद्रहितो भिक्षुको न भिक्षुः युक्तिसुवर्णवत्, वदितकृतभोजी षट्-कायमर्दनः गृहकर्त्ता जलजीवपायी कथं भिक्षुः?, अध्ययनोक्तगुणो भिक्षुः २६४ ४११-४८१* समाहितचित्तः रुच्यवशः अ-वान्तापानः पृथिव्यविराघकः शीतो-द्वापायी अग्रयज्वलनः अनलावी-जकः हरिताच्छेदी सचित्तपरिहारी त्रसानुकम्पो औद्देशिकादित्यागी अ-पचनपाचनः आत्मसमषट्कायः म-हाप्रतस्पर्शी आश्रवनिरोधी वान्तक-पायो ध्रुवयोगी रूप्यरजतादिरहितः गृहियोगवर्जी सम्यग्दृष्ट्यादिः असन्नि-धिकः निमज्जितसाधर्मिकः स्वाध्या-यरतः अव्युद्रहकथः अकोपनः नि-भृतेन्द्रियः प्रशान्तादिः आक्रोशादि-सहनः सममुखदुःखः प्रतिमाप्रतिपन्नः निर्भयः गुणतपोरतः व्युत्सृष्ट्यक्त- देहः अनिदानकुतूहलः परीषहादि-भाक् तपोरतः हस्तादिसंयतः अध्या-त्मरतः श्रुतार्थवित् अमूर्च्छः अज्ञा-तोऽलः क्रयविक्रयसन्निधिविरतः अ-सङ्गः रसागृहः ऋद्ध्यादिनिरीहः प-रिभवोत्कर्षरहितः आर्यपदवेदी अ-हासः भिक्षुः, मोक्षश्चास्य २६९ ॥ इति समिक्षवध्ययनम् ॥ ॥ अथ रतिवाक्यचूडा ॥ ३६१-३६३ चूलिकानिक्षेपाः (४) द्रव्ये सचि-त्तादिषु कुर्कुटचूडामणिमयूरादीनां, क्षेत्रे लोकनिष्कुटमन्दरचूडाकूटादयः, काले अधिकमाससंबन्धस्यै २७०

आगम
संबंधी
साहित्य

नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

[आगम-४२] मूलसूत्र-३ 'दशवैकालिक'

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

**प्रत
सूत्रांक**

यहां
देखीए

दीप

क्रमांक

के लिए

देखीए

'संवृत्तिक

आगम

सुत्ताणि'

नन्दादि-
अनु.आव.
ओष. दश.
पिण्ड. उत्त.

॥ १६३ ॥

३६४ रतिर्द्रव्ये नोकर्मणि शब्दद्रव्यादि
भावे तस्योदयः

३६५-३६७ रतिवाक्यान्वर्थः, आतुरस्य सी-
वनच्छेदनादिवत् कर्मरोगातुरस्य ध-
र्माधर्मयो रत्यरती

२१ स्वाध्यायादौ रतिमतोऽसंयमेऽरतिम-
तश्च सिद्धिः, ततः धर्माधर्मयो रत्यर-
तिकारकाणि स्थानान्यत्र, दुष्प्रमायां दु-
ष्प्रजीविता इत्वरः कामाः मायाब-
हुला मनुष्या न चिरं दुःखं अवमज-
नपुरस्कारः वान्तादानं अधो गतिः
गृहे दुर्लभो धर्मः आतङ्कसङ्कल्पौ
बधाय, सोपहेशबन्धसावद्येतरो गृह-
वासपर्यायौ, साधारणा भोगाः पृथ-

कर्माणः अनित्यं जीवितं बहुपापं,
त्राभेदयित्वा मोक्षः (१८) २७४

४८२-४९९* एतदर्थं गाथाः २१८

॥ इति रतिवाक्यचूडाध्य० ॥

॥ अथ विविक्तचर्याचूडा ॥

६३+ अधिकारातिदेशः २७८

५००-५०३* केवलिभाषिता धर्ममतिकारिका
चूला, प्रतिश्रोतो गन्तव्यं प्रतिश्रोत
उत्तारः चर्यागुणनियमाः २७९

५०४-५०८* अनिकेतवासः समुदानचर्या
अज्ञातोऽहं च प्रतिरिक्ताऽल्पोप-
पधिः कलहवर्जनं आकीर्णावमानव-
र्जनं दृष्टाहतात्रः संसृष्टकल्पः अम-
द्यमांसाशी निर्मत्सरः निर्विकृतिकः
कायोत्सर्गकारी स्वाध्यायरतः शय्या-

विदप्रतिज्ञः निर्ममः न गृहिवैयावृ-
त्त्यादिकः असंक्लिष्टसङ्गः २८०

३७०-३७१ संयतस्यावगृहीतादिचर्या अ-
निकेतादिस्वरूपा २८२

५०९-५१५* असज्जनेक विहारी अर्थाज्ञया
चर्या कृताकृतादिचिन्तनं स्वस्वलि-
तापेक्षी दुष्प्रयुक्तसंवरः प्रतिबुद्धजी-
वित्वं आत्मरक्षारक्षयोः फलं २८४

॥ इति विविक्तचर्या चूडा ॥

३७२-३७३ षण्मास्याऽधीत्य आराधक आर्य-
ममकः, यशोभद्राद्यैः स्थापितमिदं,
नयाश्च २८६

इति दशवैकालिकस्य सचूडा-
द्वयस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥

दशवै-
कालिक-
बृहद्विषया-
नुक्रमः.

॥ १६३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंडनिर्युक्ति'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ पिण्डनिर्युक्तिबृहद्विषयानुक्रमः ॥ —०— मङ्गलम् । दशवैकालिकपिण्डैषणाध्य- यननिर्युक्तिरेषा । ॥ अथ पिण्डनिरूपणम् ॥ १ पिण्डोद्गमोत्पादेषणासंयोजनाप्रमाणा- ङ्गारधूमकारणानि (८) पिण्डनिर्यु- क्त्याम् १ २ पिण्डैकार्थिकानि (१२) २ ३-४ पिण्डनिक्षेपाः (४-६) २ ५ कुलकचतुर्भागन्यायेन षट्चतुष्कम् ६, १-६+ गौणसमयोभयकृतानि नामानि, भेदत्रयस्वरूपं सिद्धिश्च ४ ७-७+ अक्षकाष्ठादौ सद्भावासङ्गाव- स्थापने ६ ८-९ द्रव्ये सचित्तः पिण्डः (९) निश्चय- व्यवहारौ १०-११ सचित्तः पृथिवीकायपिण्डः ७ १२ क्षीरदुग्धादेरधः पथ्यादौ च मिश्रः, आर्द्रं एकद्वित्रिपौरुषीः ८ १३-१५ शीतोष्णादिनाऽचित्तः, लूतास्फो- टादौ स्थानादौ च प्रयोजनम् ८ १६-३४ अप्काये निश्चयव्यवहारसचित्ता, अर्वाक् त्रिदण्डेभ्यः पतितमात्रे वर्षे अबहुप्रसन्ने तन्दुलोदके मिश्रः, अना- देशत्रिकं, तद्रूपणानि, शीतोष्णादिना- ऽचित्तः, परिषेकपानहस्तवस्वधाव- नादि प्रयोजनं ऋतुबद्धे दोषः, वर्षा- स्वधावने दोषः, अर्वाग् वर्षायाः सर्वोपवेः क्षालनं, जघन्यतः पात्रनि- योगस्य, आचार्यादीनां पुनः पुनः, पात्रनियोगाद्या अविश्रान्त्याः, विश्रा- मणाविधिः, नीत्रोदकग्रहणं, गुर्वनश- न्यादिक्रमः, पूर्वं यथाकृतानि, ना- च्छोटनादि, छायाऽऽतपयोः शो- षणं, कल्याणकं च १६ ३५-३७ तेजसि निश्चयव्यवहारसचित्ता, मुर्मुरादिर्मिश्रः, ओदनादिरचित्तः ।
	[आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंडनिर्युक्ति'

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६४ ॥ ३८-४२, १२-१५+ वायुकाये घनवातादौ निश्चयेन सचित्तः, प्राच्यादिव्यवहारेण, आक्रान्ताध्मातपीडनदेहानुगतनिश्चोदनेष्वचित्तः, दृष्ट्यादिवातस्याचित्तादित्वे क्षेत्रकालविचारः, गलानत्वेऽचित्तेन प्रयोजनम् १८ ४३-४६ वनस्पतिकायेऽनन्तकायो निश्चयेन, शेषो व्यवहारेण, मिश्रः प्रम्लानो लोष्टादिः, वृन्तम्लानौ अचित्तः, संस्तारकादिना प्रयोजनम् १९ ४७-४८॥ विकलेन्द्रिये पिण्डत्वं, अक्षानुद्देहि-कादिमक्षिकापुरीषादिना प्रयोजनम् २० ४९-५२ अनुपयोगिनो नारकाः, चरमास्थि- दन्तादिना तिर्यञ्चः, प्रव्राजनादिना मनुष्याः, क्षपकादिकालकार्यदिना देवा उपयोगिनः २१ ५३-५४ पिण्डनवकसंयोगाः (५०२) विधिश्च सौवीरतक्रादिषु २२ ५५-५८ क्षेत्रकालपिण्डौ, अमूर्तत्वेन शङ्का, आवेयस्थितिभ्यां प्ररूपणाहेतुत्वेन च समाधानम् २४ ५९-७२ भावे प्रशस्ते संयमादित एकादि-दशविधान्तः, अप्रशस्तेऽसंयमादि-रेकादिर्नवान्तः, बन्धहेतुरप्रशस्तः, मुक्तिहेतुः प्रशस्तः, ज्ञानदर्शनचारित्राणां पर्यायास्तत्तत्पिण्डः, अध्यवसायो वा पिण्डः, आहारादिः प्रश- स्तपिण्डस्योपकारी, तेन द्रव्यभावपिण्डाभ्यामधिकारः, निर्वाणकारणज्ञानादिकारणमाहारः, पटे पक्ष्मवत्, अनुपहतकारणात्कार्य, अविकलज्ञानादिर्मोक्षहेतुः २८ ॥ इति पिण्डनिरूपणम् ॥ ॥ अथोद्गमदोषाः ॥ ७३-७८ एषणैर्थिकानि (४) एषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये सचित्तादिः (द्विपदादि ३) भावे गवेषणैषणादिः (३) क्रमसिद्धिश्च ३० ७९-८४ गवेषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये कुरङ्गगजदृष्टान्तौ, भावे उद्गमोत्पादने ३२ ८५-९१ उद्गमैकार्थिकानि (३) निक्षेपाः (४) । पिण्डनि- र्युक्तिबृह- द्विषया- नुक्रमः ॥ १६४ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) द्रव्ये लङ्कुक्योतिस्तृणादि, भावे ज्ञानादि, लङ्कुकप्रियकथानकं, उद्गम-शुद्धेश्वरित्रिशुद्धिस्ततो मोक्षश्च ३४ ९२-९३ आधाकर्मादिका (१६) उद्गमदोषाः ९४ आधाकर्मादिके नामादीनि (८) द्वा-राणि ३६ ९५-९८, १६-२२+आधाकर्मादिकैकार्थिकानि (८) द्रव्याधायां धनुरादीनां प्रत्यक्षादि, भावाधायां यमाधाय त्रिपातनं, द्रव्ये-ऽधःकर्मणि जलादिष्ववतरणं, भावे संयमस्थानादिषु, संयमश्रेणिस्वरूपं, आधाकर्मप्राप्ती अधोऽवतीर्थ अधो-भवायुःघनीकरणादि कुरुते पतति चाधोगतौ, द्रव्यात्मन्ने निदाऽनिदा-भ्यां हिंसा, कायां द्रव्यात्मनि, वधा- वर्णात्मघातः, निश्चयेन ज्ञानदर्शन-बधोऽपि, द्रव्यात्मकर्मणि ममतावि-षयः, भावेऽशुभपरिणतिः, आधा-कर्मपरिणतः परकर्म आत्मकर्मा-कुरुते, सङ्क्रमशङ्का, कुटोपमया समाधिः केषाञ्चित्, अशुभभावानु-रूपां, ग्रहणात्प्रसङ्गः, प्रतिसेवादि-भिरात्मकर्मता, क्रमेण तेषां गुरु-लघुते, न परानीते दुष्टेति प्रतिसे-वना, सुलब्धोक्तौ प्रतिसेवना, तद्भो-गिप्रशंसाऽनुमोदना, स्तेनराजपुत्र-पल्लीवणिकप्रशंसाकारिणः प्रतिसेवा-दिषु दृष्टान्ताः, तद्वदाधार्मभोगि-नामपि ५० १२९-१३६ एकार्थिकचतुर्भङ्गी, भङ्गत्रयी-योजना ५२ १३७-१५९ साधर्मिकस्याधार्मिक, नामस्थाप-नाद्रव्यक्षेत्रकालप्रवचनलिङ्गदर्शन- (३) ज्ञान (५) चारित्रा (५-३) भि-ग्रह (४) भावना (१२) भिः साध-र्मिकस्वरूपं, प्रवचनादिषु चतुर्भ-ङ्ग्यश्च, तेषु कल्याकल्याता च ६२ १६०-१७६ अशनाद्याधार्मिक, कृतनिष्ठचतु-र्भङ्गी, अशनस्याधार्मिकत्वे दृष्टान्तः, पानखाद्यखाद्यानामाधार्मिकता, प्रासु-कीकरणं निष्ठिते, उपस्कृतं कृते, न छायावर्जनं न्याय्यम् ६७ १७७-१७८ स्वपरपक्षस्वरूपं, कल्याकल्याता च ।		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६५ ॥ १७९-१८२ अतिक्रमाद्याश्चत्वारः, नूपुरप- ण्डिताहस्तिदृष्टान्तेन अतिक्रमादिषु वृत्तिः, अतिक्रमादिस्वरूपम् ६८ १८३-१८८ आधाकर्मग्रहे आज्ञाऽनवस्थामि- थ्यात्वविराधनाः ७० १८९-२०५ आधाकर्म तत्पृष्ठं तद्भाजनस्थितं, परिहारश्च, वान्तादिवदभोव्यं, उग्र- तेजोदृष्टान्तः, अन्यसमयेषूप्रीक्षी- रादिवत्, अशुचिस्पृष्टवत्, अशुचि- भाजनस्थवच्च स्पृष्टस्तद्भाजनस्थितयोः परिहारः, अविधिपरिहारेऽगीतार्थ- दृष्टान्तः, विधिपरिहारे द्रव्यकुलदेश- भावापेक्षणम् ७४ २०६-२१७ परिणया बन्धाबन्धौ, वेषवि- डम्बकमियङ्करदृष्टान्तौ, उद्यान- दर्शिदृष्टान्तश्च, आधाकर्मभोगिनो बोद्धव्यमेव ७७ २१८-२४२ विभागौद्देशिके उद्दिष्टकृतकर्म- २३+ चतुष्ककेन द्वादश भेदाः, ओषौद्दे- शिकसंभवस्वरूपे, रेखादिनां त- ज्ज्ञानं, गोवत्सदृष्टान्तेन उपयुक्तता, विभागौद्देशिके संभवः, उद्देशसमु- द्देशादेशसमादेशभेदाः, तत्स्वरूपं, द्रव्यक्षेत्रकालभावैश्छिन्नाच्छिन्ने, उद्दिष्टे कल्याकल्यविधिः, संप्रदाने च, तत्परिज्ञानोपायः, कर्मौद्देशिके क- ल्याकल्यविधिः ८२ २४३-२७० द्रव्यपूतौ छगणधार्मिकदृष्टान्तः, पिण्डनि- र्युक्तिबृह- द्विषया- नुक्रमः. ॥ १६५ ॥			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) २८५-२९१, २६-२७+ बादरसूक्ष्मप्राध- तिके मङ्गलपुण्यार्थाय, तत्फलं च उत्त्वष्कनावष्वष्कनाभ्यां ९३ २९२-३०५ प्रादुष्करणसंभवे भिक्षुकत्रयदृ- ष्टान्तः, प्रकटकरणे चुड़यादेर्वहिरान- यनं, प्रकाशकरणे रत्नादिना छि- द्रादिना च, आत्मार्थीकृतं कल्पते, विशुद्धिकोटित्वम् । ९५ ३०६-३१५ क्रीते आत्मपरद्रव्यभावक्री- तानि, सचित्तादि परद्रव्ये, आत्म- द्रव्ये निर्माल्यादि, परभावे मङ्गल- दृष्टान्तः, आत्मभावे धर्मकथावादक्ष- पगादि (९) ९९ ३१६-३२२ प्रामित्ये लौकिके भगिनीदृ- ष्टान्तः, लोकोत्तरे वस्त्रादौ मलिन- तादिदोषाः, अपवादश्च १०० ३२३-३२८ परिवर्तिते लौकिकलोकोत्तरयो- स्तद्रव्यान्यद्रव्ये, लौकिके शाल्योदन- दृष्टान्तः, लोकोत्तरे ऊनाधिकव- स्त्रादौ दोषास्तदपवादश्च १०२ ३२९-३४६ अभ्याहृते आचीर्णानाचीर्णे नि- शीथानिशीथे स्वप्नामपरमामे जलपथ- स्थलपथौ, दोषाश्च, त्रिगृहाद् वाटका- देश्च परतः, परमामनिशीथे धनावह- दृष्टान्तः, हस्तशतादाचीर्णं, उत्कृष्टा- दिभेदाः १०५ ३४७-३५६ उद्भिन्ने पिहितकपाटौ प्रासुका- प्रासुके, षट्पाददोषाः, दानादिदोषाः, अकुञ्चितकपाटे आचीर्णम् १०७ ३५७-३६५ मालापहृते जपन्योत्कृष्टे, भिक्षु- दृष्टान्तः, दातृपतनादि, उत्कृष्टे का- पिलः, ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्भेदाः, अपवा- दश्च ११० ३६६-३७६ प्रभुस्वामिस्तेनाऽऽच्छिन्नानि, प्रभौ गोपः, दोषा अपवादश्च ११३ ३७७-३८७ सामान्यनिसृष्टे लोलुपभिक्षुदं- ष्टान्तः, भोजनानिसृष्टे, छिन्ने कल्प्यं, हस्तिनिसृष्टं दृष्टमप्यकल्प्यम् ११५ ३८८-३९१ यावदर्थिकस्वगृहसाधुमिश्रैरभ्यव- पूरकस्त्रिधा, मिश्राद्भेदः, कल्या- कल्प्यविधिः ११६ ३९२-४०३, २८-३०+ विशोध्यविशोधि- कोट्यौ, द्रव्यक्षेत्रकालभाववैवेकः,

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६६ ॥	शुष्कार्द्रचतुर्भङ्गी, कल्प्याकल्प- विधिः, उद्गमकोट्यां षट्, शेषा वि- शोधिः, नवाष्टादशादिकोऽष्ट्यः, गृह्य- द्वा उद्गमदोषाः १२० ॥ इत्युद्गमदोषाः ॥ ॥ अथोत्पादनादोषाः ॥ ४०४-४०९ द्रव्योत्पादनायां सचित्तादि, भावोत्पादनायां धात्र्यादयो दोषाः (१६) १२१ ४१०-४२७, ३१-३२+ क्षीरमज्जनमण्डन- क्रीडनाङ्गधात्रीत्वानि करणकारणाभ्यां, धात्रीशब्दव्युत्पत्तिः, धात्रीदोषगुणा- दितिरूपणं, दत्तदृष्टान्तोऽत्र १२६ ४२८-४३४ स्वप्नामपरमामप्रकटच्छन्नभेदा	दूती, लोकोत्तरे उभयपक्षे च, धन- दत्तदृष्टान्तः १२७ ४३५-४३६, ३३-३४+ लाभालाभादि षड्विधं निमित्तं, भोगिनीदृष्टान्तः १२८ ४३७-४४२ जातिकुलगणकर्मशिल्पैः सूचा- सूचाभ्यामाजीवः १३० ४४३-४५५ श्रमणमाह्नकपणातिथिश्चभिर्ब- नीपकः, निर्गन्थादयः श्रमणभेदाः, वनीपकत्वे दोषाः १३२ ४५६-४६० त्रिविधश्चिकित्सास्तदोषाश्च १३३ ४६१-४८३ घृतपूर्णसेवकिकामोदकसिंहके- शरदृष्टान्ताः क्रोधादिषु, क्रोधादिका- रण्यानि च १३९	४८४-४९३ संस्तवस्वरूपं सम्बन्धिवचनयोः पूर्वपश्चाद्भेदौ च १४१ ४९४-४९९ विद्यायां मन्त्रे च भिक्षुपासकः पादलिप्तश्च दृष्टान्तौ १४२ ५००-५१३, ३५-३७+ चूर्णे चाणाक्यक्षु- लकौ, पादलेपे समितसूरयः, क्षता- क्षतयोन्योर्विवादे च युवतीयुग्मं, गर्भे नृपपत्न्यौ १४६ ५१४-५१५ साधुसमुत्था उत्पादनादोषाः, एषाणायां शङ्कितभावापरिणतौ साधोः, शेषा गृहस्थात् १२२ ॥ इत्युत्पादनादोषाः ॥ ॥ अथ एषणादोषाः ॥ ५१६-५२० एषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये वानर-	पिण्डनि- र्युक्तिबृह- द्विषया- नुक्रमः. ॥ १६६ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"><tr><td> यूथदृष्टान्तः, भावे शङ्कितादि (१०) १४७ ५२१-५३० ग्रहणभोगयोश्चतुर्भङ्गी, उद्गम- (१६) अक्षितादि(९)षु शङ्का, उप- योगाच्छुद्धिः, श्रुतोपयोगगृहीतं केवल्यपि भुङ्क्ते, अन्यथा श्रुताप्रामा- ण्यादि, परिणामाशुद्धेः शङ्कासङ्गावे चानेषणीयम् १४८ ५३१-५३९ अक्षिते सचित्ते पृथिव्यव्वनस्प- तयः, अचित्ते गर्हिते तरे, हस्तमा- त्रयोश्चतुर्भङ्गी, संसक्तिमदकल्प्यम् १५० ५४०-५५७ निक्षिप्ते सचित्तमिश्रयोरनन्तरप- रम्परे, सचित्ते षोढा, स्वस्थानपर- </td><td> स्थानयोः, कल्याकल्पविधिः, सप्त- विधो विध्याताद्यमिः, यतना च, अनत्युष्णोदकमघटितकर्णं ग्राह्यं, पार्श्ववलिप्तानत्युष्णापरिशाटाघटन- भङ्गाः, भङ्गानयनरीतिः, अत्युष्णे दोषाः, वातहरितयोरनन्तरपरम्पर- भेदौ १५४ ५५८-५६२ सचित्ताचित्तमिश्रेषु पिहितेषु च- तुर्भङ्ग्यः, चरमे भजना १५५ ५६३-५७१ सचित्ताचित्तमिश्रसंहरणेषु च- तुर्भङ्ग्यः, तलक्षणं, अचित्ते आ- धारसंद्ध्यमाणयोः शुष्कार्द्रस्तोकव- हुचतुर्भङ्ग्यः, तत्र कल्याकल्पवि- धिर्दोषाश्च १५७ </td><td> ५७२-६०४ बालवृद्धमत्तोन्मत्तादिचत्वारिंश- द्विधदायकेषु केषुचिद्भजना तद्दोषाश्च १६४ ६०५-६०८ सचित्ताचित्तमिश्रैरुन्मिश्रे चतु- र्भङ्ग्यः, संहतोन्मिश्रयोर्विशेषः, आ- र्द्रशुष्कस्तोकवहुचतुर्भङ्ग्यः, कल्या- कल्पविधिश्च १६५ ६०९-६१२ अपरिणते द्रव्ये षट् कायाः, भावे दातृगृहीत्रोः १६६ ६१३-६२६ लिप्ते दध्यादिलेपोऽपि वर्ज्यः, नित्यतपसा संयमादिहानेर्भोजनं, षण्मास्याचाम्लैर्भोजनं, महाराष्ट्रादिवत् अलेपेन यापना, तक्रादीनां, ग्रहणं, शीता आहारोपधिशय्याः, अलेपा- </td></tr></table>	यूथदृष्टान्तः, भावे शङ्कितादि (१०) १४७ ५२१-५३० ग्रहणभोगयोश्चतुर्भङ्गी, उद्गम- (१६) अक्षितादि(९)षु शङ्का, उप- योगाच्छुद्धिः, श्रुतोपयोगगृहीतं केवल्यपि भुङ्क्ते, अन्यथा श्रुताप्रामा- ण्यादि, परिणामाशुद्धेः शङ्कासङ्गावे चानेषणीयम् १४८ ५३१-५३९ अक्षिते सचित्ते पृथिव्यव्वनस्प- तयः, अचित्ते गर्हिते तरे, हस्तमा- त्रयोश्चतुर्भङ्गी, संसक्तिमदकल्प्यम् १५० ५४०-५५७ निक्षिप्ते सचित्तमिश्रयोरनन्तरप- रम्परे, सचित्ते षोढा, स्वस्थानपर-	स्थानयोः, कल्याकल्पविधिः, सप्त- विधो विध्याताद्यमिः, यतना च, अनत्युष्णोदकमघटितकर्णं ग्राह्यं, पार्श्ववलिप्तानत्युष्णापरिशाटाघटन- भङ्गाः, भङ्गानयनरीतिः, अत्युष्णे दोषाः, वातहरितयोरनन्तरपरम्पर- भेदौ १५४ ५५८-५६२ सचित्ताचित्तमिश्रेषु पिहितेषु च- तुर्भङ्ग्यः, चरमे भजना १५५ ५६३-५७१ सचित्ताचित्तमिश्रसंहरणेषु च- तुर्भङ्ग्यः, तलक्षणं, अचित्ते आ- धारसंद्ध्यमाणयोः शुष्कार्द्रस्तोकव- हुचतुर्भङ्ग्यः, तत्र कल्याकल्पवि- धिर्दोषाश्च १५७	५७२-६०४ बालवृद्धमत्तोन्मत्तादिचत्वारिंश- द्विधदायकेषु केषुचिद्भजना तद्दोषाश्च १६४ ६०५-६०८ सचित्ताचित्तमिश्रैरुन्मिश्रे चतु- र्भङ्ग्यः, संहतोन्मिश्रयोर्विशेषः, आ- र्द्रशुष्कस्तोकवहुचतुर्भङ्ग्यः, कल्या- कल्पविधिश्च १६५ ६०९-६१२ अपरिणते द्रव्ये षट् कायाः, भावे दातृगृहीत्रोः १६६ ६१३-६२६ लिप्ते दध्यादिलेपोऽपि वर्ज्यः, नित्यतपसा संयमादिहानेर्भोजनं, षण्मास्याचाम्लैर्भोजनं, महाराष्ट्रादिवत् अलेपेन यापना, तक्रादीनां, ग्रहणं, शीता आहारोपधिशय्याः, अलेपा-
यूथदृष्टान्तः, भावे शङ्कितादि (१०) १४७ ५२१-५३० ग्रहणभोगयोश्चतुर्भङ्गी, उद्गम- (१६) अक्षितादि(९)षु शङ्का, उप- योगाच्छुद्धिः, श्रुतोपयोगगृहीतं केवल्यपि भुङ्क्ते, अन्यथा श्रुताप्रामा- ण्यादि, परिणामाशुद्धेः शङ्कासङ्गावे चानेषणीयम् १४८ ५३१-५३९ अक्षिते सचित्ते पृथिव्यव्वनस्प- तयः, अचित्ते गर्हिते तरे, हस्तमा- त्रयोश्चतुर्भङ्गी, संसक्तिमदकल्प्यम् १५० ५४०-५५७ निक्षिप्ते सचित्तमिश्रयोरनन्तरप- रम्परे, सचित्ते षोढा, स्वस्थानपर-	स्थानयोः, कल्याकल्पविधिः, सप्त- विधो विध्याताद्यमिः, यतना च, अनत्युष्णोदकमघटितकर्णं ग्राह्यं, पार्श्ववलिप्तानत्युष्णापरिशाटाघटन- भङ्गाः, भङ्गानयनरीतिः, अत्युष्णे दोषाः, वातहरितयोरनन्तरपरम्पर- भेदौ १५४ ५५८-५६२ सचित्ताचित्तमिश्रेषु पिहितेषु च- तुर्भङ्ग्यः, चरमे भजना १५५ ५६३-५७१ सचित्ताचित्तमिश्रसंहरणेषु च- तुर्भङ्ग्यः, तलक्षणं, अचित्ते आ- धारसंद्ध्यमाणयोः शुष्कार्द्रस्तोकव- हुचतुर्भङ्ग्यः, तत्र कल्याकल्पवि- धिर्दोषाश्च १५७	५७२-६०४ बालवृद्धमत्तोन्मत्तादिचत्वारिंश- द्विधदायकेषु केषुचिद्भजना तद्दोषाश्च १६४ ६०५-६०८ सचित्ताचित्तमिश्रैरुन्मिश्रे चतु- र्भङ्ग्यः, संहतोन्मिश्रयोर्विशेषः, आ- र्द्रशुष्कस्तोकवहुचतुर्भङ्ग्यः, कल्या- कल्पविधिश्च १६५ ६०९-६१२ अपरिणते द्रव्ये षट् कायाः, भावे दातृगृहीत्रोः १६६ ६१३-६२६ लिप्ते दध्यादिलेपोऽपि वर्ज्यः, नित्यतपसा संयमादिहानेर्भोजनं, षण्मास्याचाम्लैर्भोजनं, महाराष्ट्रादिवत् अलेपेन यापना, तक्रादीनां, ग्रहणं, शीता आहारोपधिशय्याः, अलेपा-		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४१/२] मूलसूत्र-२/२ 'पिंदनिर्युक्ति'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड, उत्त. ॥ १६७ ॥ ल्पबहुलेपद्रव्यादि, संसृष्टहस्तामत्र- सावशेषद्रव्यैर्भक्ताः १६९ ६२७-६२८ छर्दिते शीतोष्णमिश्रचतुर्भङ्ग्य- स्तदोषाश्च, शीतोष्णच्छर्दिते कायदाह- षट्कायविराधनाः, मधुविन्दुदृष्टान्तः १७० ॥ इत्येषणादोषाः ॥ ॥ अथ ग्रासैषणादोषाः ॥ ६२९-६३५ ग्रासेषणानिक्षेपाः (४) द्रव्ये मत्स्यदृष्टान्तः, भावे संयोजनायाः, अर्थसिद्धयै चरितकल्पिताहरणे, सा- धोरात्मानुशासनम् १७२ ६३६-६४१ द्रव्यसंयोजना बहिः, पात्रकव- लबदनेष्वन्तः, रसहेतौ दोषः, अप- वादश्च १७३ ६४२-६४३ पुरुषादेराहारप्रमाणं यात्रामात्रा- हारश्च मुनिः ६४४-६५४ अतिबहुकमतिबहुशः प्रकामनि- कामाभ्यां प्रमाणं, हीनादिभोजने गुणाः, हितमितस्वरूपं, कालापेक्ष- याऽऽहारमानम् १७५ ६५५-६६० साङ्गारसधूमौ तदोषाश्च १७६ ६६१-६७१ क्षुब्धेदनादीनि कारणानि, आत- क्कादीनि न्यूनाहारकारणानि, उप- संहारः, धर्मावश्यकयोगानामहानिः प्रयोजनं, सूत्रविधिना विराधना नि- र्जराफला १७९ ॥ इति ग्रासैषणादोषाः ॥ ॥ इति पिण्डनिर्युक्तिः ॥ पिण्डनि- र्युक्तिबृह- द्विषया- नुक्रमः ॥ १६७ ॥			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	॥ उत्तराध्ययने बृहद्विषयानुक्रमः ॥ <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> मङ्गलम् । उपोद्घातः । फलयोगम- ङ्गलादि ३ १-२ उत्तरनिक्षेपाः (१५), जघन्यादेः सोत्तरानुत्तरत्वे ५ ३ उत्तराध्ययनत्वे हेतुः ५ ४ अङ्गादिप्रभवत्वम् ६ ५-११ अध्ययनादीनां निक्षेपचतुष्कम्, नोआगमभावाध्ययनव्याख्या, दीप- वद्भावाक्षीणता, भावायः, तदे- कार्थिकानि च, वस्तस्य द्रव्यक्षपणा, त्रिधा भावक्षपणा ८ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १२ श्रुतस्कन्धनिक्षेपातिदेशो, नामाधि- काराणां प्रतिज्ञा च ९ १३-२६ अध्ययननामानि सर्वाध्ययना- धिकारः २७ पिण्डार्थोपसंहारः, एकैकाध्ययनप्र- तिज्ञा च १० २८ विनयश्रुतस्योपक्रमादिद्वारातिदेशः (अनुयोगद्वारवर्णनं) १५ २९ विनयनिक्षेपातिदेशः श्रुतनिक्षेपच- तुष्के द्रव्यभावौ च १८ १* साधुविनयकथनप्रतिज्ञा (संहि- तादिव्याख्या) २१ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ३० संयोगे निक्षेपषट्कं द्रव्ये द्विधात्वम् । (नामादिव्याख्याविधिस्थापना) २३ ३१ संयुक्तकसंयोगत्रैविध्यम् ३२ मूलाद्यैर्दुर्मादेः सचित्तसंयुक्तकसं- योगः २४ ३३ अणवादेरचित्तसंयुक्तकसंयोगः २५ ३४ जीवकर्मणोर्मिश्रसंयुक्तकसंयोगः ३५ परमाणुप्रदेशाभिप्रेतानभिप्रेताभिज्ञा- पैरितरेतरसंयोगः ३६ संस्थानस्कन्धभेदेन परमाणुसंयोगः २६ ३७ स्कन्धभावे हेतुः २७ </td></tr> </table>		मङ्गलम् । उपोद्घातः । फलयोगम- ङ्गलादि ३ १-२ उत्तरनिक्षेपाः (१५), जघन्यादेः सोत्तरानुत्तरत्वे ५ ३ उत्तराध्ययनत्वे हेतुः ५ ४ अङ्गादिप्रभवत्वम् ६ ५-११ अध्ययनादीनां निक्षेपचतुष्कम्, नोआगमभावाध्ययनव्याख्या, दीप- वद्भावाक्षीणता, भावायः, तदे- कार्थिकानि च, वस्तस्य द्रव्यक्षपणा, त्रिधा भावक्षपणा ८	१२ श्रुतस्कन्धनिक्षेपातिदेशो, नामाधि- काराणां प्रतिज्ञा च ९ १३-२६ अध्ययननामानि सर्वाध्ययना- धिकारः २७ पिण्डार्थोपसंहारः, एकैकाध्ययनप्र- तिज्ञा च १० २८ विनयश्रुतस्योपक्रमादिद्वारातिदेशः (अनुयोगद्वारवर्णनं) १५ २९ विनयनिक्षेपातिदेशः श्रुतनिक्षेपच- तुष्के द्रव्यभावौ च १८ १* साधुविनयकथनप्रतिज्ञा (संहि- तादिव्याख्या) २१	३० संयोगे निक्षेपषट्कं द्रव्ये द्विधात्वम् । (नामादिव्याख्याविधिस्थापना) २३ ३१ संयुक्तकसंयोगत्रैविध्यम् ३२ मूलाद्यैर्दुर्मादेः सचित्तसंयुक्तकसं- योगः २४ ३३ अणवादेरचित्तसंयुक्तकसंयोगः २५ ३४ जीवकर्मणोर्मिश्रसंयुक्तकसंयोगः ३५ परमाणुप्रदेशाभिप्रेतानभिप्रेताभिज्ञा- पैरितरेतरसंयोगः ३६ संस्थानस्कन्धभेदेन परमाणुसंयोगः २६ ३७ स्कन्धभावे हेतुः २७
मङ्गलम् । उपोद्घातः । फलयोगम- ङ्गलादि ३ १-२ उत्तरनिक्षेपाः (१५), जघन्यादेः सोत्तरानुत्तरत्वे ५ ३ उत्तराध्ययनत्वे हेतुः ५ ४ अङ्गादिप्रभवत्वम् ६ ५-११ अध्ययनादीनां निक्षेपचतुष्कम्, नोआगमभावाध्ययनव्याख्या, दीप- वद्भावाक्षीणता, भावायः, तदे- कार्थिकानि च, वस्तस्य द्रव्यक्षपणा, त्रिधा भावक्षपणा ८	१२ श्रुतस्कन्धनिक्षेपातिदेशो, नामाधि- काराणां प्रतिज्ञा च ९ १३-२६ अध्ययननामानि सर्वाध्ययना- धिकारः २७ पिण्डार्थोपसंहारः, एकैकाध्ययनप्र- तिज्ञा च १० २८ विनयश्रुतस्योपक्रमादिद्वारातिदेशः (अनुयोगद्वारवर्णनं) १५ २९ विनयनिक्षेपातिदेशः श्रुतनिक्षेपच- तुष्के द्रव्यभावौ च १८ १* साधुविनयकथनप्रतिज्ञा (संहि- तादिव्याख्या) २१	३० संयोगे निक्षेपषट्कं द्रव्ये द्विधात्वम् । (नामादिव्याख्याविधिस्थापना) २३ ३१ संयुक्तकसंयोगत्रैविध्यम् ३२ मूलाद्यैर्दुर्मादेः सचित्तसंयुक्तकसं- योगः २४ ३३ अणवादेरचित्तसंयुक्तकसंयोगः २५ ३४ जीवकर्मणोर्मिश्रसंयुक्तकसंयोगः ३५ परमाणुप्रदेशाभिप्रेतानभिप्रेताभिज्ञा- पैरितरेतरसंयोगः ३६ संस्थानस्कन्धभेदेन परमाणुसंयोगः २६ ३७ स्कन्धभावे हेतुः २७			
	[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु. आव. औष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६८ ॥	३८ संस्थानभेदाः ३० ३९-४१ संस्थानपञ्चकजघन्यप्रदेशाः २९ ४२ प्रदेशसंयोगेऽनादिसादिभेदौ ३० ४३ अभिप्रेतानभिप्रेतसंयोगौ ४४ मनोऽभिप्रेता औषधादिसंयोगाः ३१ ४५ द्रव्याद्यैरभिलाषसंयोगाः ३२ ४६-४७ द्रव्याद्यैः संबन्धनसंयोगाः ३३ ४८-४९ भावेऽनादेशसंयुक्तसंयोगाः, आ- देशभावसंयुक्तसंयोगाः ३४ ५० आत्मार्पितसम्बन्धनसंयोगाः (४) ५१ (११) सान्निपातिकोऽप्यनुद्यः ५२ बाह्यार्पितसंबन्धनसंयोगाः, (लेइया- दिः) ३५ ५३ (१५), स्वोद्यसान्निपातिको मिश्रः ।	५४ प्रकरणान्तरेणात्मादिसंयोगाः ३६ ५५ औद्यिकाद्याः (६) संयोगाः ३७ ५६ नामक्षेत्रकालैर्बाह्यसंयोगाः, तदुभ- येन मिश्रः ५७ आचार्यशिष्यादीनामपि बाह्यसं- योगः ३८ ५८ आचार्यशिष्यस्वरूपम् (सूरिगुणाः ३६) ५९ ज्ञानादिषूभयसंयोगः ४१ ५० निर्वृत्तिदेहमात्रादेरुभयसंयोगता ४२ ६१ कषायममतावतः सम्बन्धनसं- योगः ४३ ६२ सम्बन्धनसंयोगे संसारः, ततो मुक्तः साधुः	६३ क्षेत्रादिसम्बन्धनसंयोगाः २* विनीतलक्षणम् ४४ ३* अविनीतलक्षणम् ४५ ४* अविनीतफले शुनीदृष्टान्तः ५* अस्य शूकरदृष्टान्तेन शीलहानदु- ःशीलरती ४६ ६* ज्ञातदृष्टान्ताय हितैषिणे विनयक्रियो- पदेशः ४६ ७* शीललभानिष्कासने विनयफले । ८* विनयैषणाविधिः ४७ ९* क्षान्तिसेवाबालसङ्गहास्यकीडावर्ज- नम् १०* चाण्डालिकबह्वालापवर्जनमध्ययन- ध्याने च ४८	उत्तराध्य- यने बृह- द्विषया- नुक्रमः. ॥ १६८ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	११* चाण्डालिकसंभवै विधिः । १२* शिक्षाया भूयोऽभिच्छा पापत्यागश्च, गत्याकीर्णवत् ४८ १३* गत्याकीर्णपर्यायाः १४* अनाश्रवाद्याश्चित्तानुगाद्याश्च गुर्वप्र- सादप्रसादकारिणः, (चण्डरुद्राचार्य- दृष्टान्तः) ५० १५* गुरुचित्तप्रसादनविधिः (कुलपुत्र- भूतदृष्टान्तौ) ५२ १६* आत्मदमनफलम् (चौरदृष्टान्तः) ५३ १७* अंतिमपरदमनयोर्हेतवः (सैचनक- दृष्टान्तः) ५४ १८* आर्त्ता र्हो वा वाकर्मस्थो प्रत्यनीक- वात्सागः (प्रतिहृये)	१९* पार्श्वपुरःपृष्ठतोऽनिषदनमयुज्योरु, शर्यायामप्रतिश्रवणं (शुश्रूषाविनये) २०* पर्यस्तिकापक्षपिण्डपादप्रसारवर्जनम् । ५५ २१* आहूतो गुरुमुपतिष्ठेत् । २२* सकृत्पुनर्वा लपत्या चर्चं यत् प्रतिश्रुत्यात् २३* पृच्छाविधिश्च । ५६ २४* विनीते सूत्रार्थोभयार्पणम् । २५* सूषावधारणीमायादिवर्जनम् । २६* साव्यनिरर्थकमर्मभाग्वाग्वर्जनम् ५७ २७* समरागारादौ क्षिया सह स्थानात्ताप- वर्जनम् २८* शीतपरुषेण शिक्षायां लाभबुद्धिः प्रतिश्रुतिश्च । ५८	२९* शिक्षाप्रेरणयोः प्राज्ञाप्राज्ञयोर्बुद्धिः । ३०* शिक्षायां मूढानां द्वेषः ३१* अनुच्चाद्यासनः । ५९ ३२* काळेन निर्गमप्रतिक्रमणसमाचारः ३३* स्थानैषणभक्षणविधिः । ३४* अन्यभिक्षुकानतिक्रमणम् । ६० ३५* पिण्डग्रहणविधिः । ३६* प्रासेषणाविधिः ६१ ३७* मुकुतमुपकादिवाग्वर्जनम् । ३८* पण्डितबालयोः शिक्षायां गुरोः स्थितिः ६२ ३९* खड्गकादिभिः शासनै पापदृष्टि- मतिः । ४०* शिक्षायां सौम्यसाधुमतिः ।

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु.आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १६९ ॥	४०* आचार्यात्मनोरकोपनमुपघाततोत्र- गवेषितावर्जनं च । (अनश्रयाचार्य- दृष्टान्तः) ६३ ४१* आचार्यकोपे शिष्यविधिः ६४ ४२* क्षान्त्याद्याचरिताचरणेऽगर्हा । ४३* आचार्यमनोवाग्गतस्योपपादनम् । ४४* नोदनानोदनयोर्यथोपदिष्टकृत्यकारी । ६५ ४५* विनयात्प्राज्ञानां फलम् । ४६* विनयप्रसन्नात्पूज्यात्फलम् । ४७* पूज्यशास्त्रस्यैहिकं फलम् ६६ ४८* विनीतस्यैहिकामुष्मिकं फलम् ६७ (नयज्ञानक्रियाविशेषविचारः) ७१ ॥ इति विनयाध्ययनम् ॥ १ ॥	अथ परीषहाध्ययनम् ॥ २ ॥ ६५-६७ परीषहनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते कर्म- नोकर्मभेदौ, कर्मण्यनुदयश्च, नोक- र्मणि भेदत्रयं, भावे कर्मोदयः ७३ ६८ परीषहाध्ययने कुतः कस्येत्यादीनि १३ द्वाराणि ६९ कर्मप्रवादसूत्रताऽध्ययनस्य । ७० ऋजुसूत्रान्ताः त्रिषु, संयते शब्दः परीषहमानी ७४ ७१ नैगमे भङ्गाष्टकं, सङ्ग्रहे जीवनोजीवौ, व्यवहारे नोजीवः, (शेषाणां जीवः परीषहः ७५ ७२ प्रकृतिपुरुषयोः समवतारप्रतिज्ञा । ७३ परीषहाधारा मूलप्रकृतयः	७४-७८ भेदे परीषहाणां कर्मण्यवतारः ७६ ७९ गुणस्थाने परीषहावतारः । ८० त्रयाणामप्रहणाभोजने, ऋजुसूत्राणां प्राप्तकेऽध्यासना ७७ ८१ आद्यस्य हेतुः, द्वयोर्वेदना, ऋजो- र्जीवः, शेषाणामात्मा परीषहः । ८२ युगपत्परीषहसंख्या ७८ ८३ वर्षाप्रं त्रयाणां, ऋजोरन्तर्मुहूर्त, श- ब्दस्य समयं परीषहः । ८४ कण्डवाद्या वेदनाः सप्तवर्षशतीम् । (सनत्कुमारदृष्टान्तः) ८५ चतुर्णां लोकसंस्तारयोः, शेषाणामा- त्मनि परीषहः । ७९ ८६ उद्देशपृच्छानिर्देशाः ।	उत्तराध्य- यने विन- याध्य. प- रीषहाध्य. ॥ १६९ ॥

उत्तराध्य-
यने विन-
याध्य. प-
रीषहाध्य.

॥ १६९ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> १ सू. उद्देशपृष्ठानिर्देशैः सूत्रस्पर्शने परी- षहाः (२२) (वक्तृता, गुरुकुलवास- पौरुषेयतासिद्धिः) ८३ ४९* परीषहकथनप्रतिज्ञा। ५०-५१* क्षुधापरीषहः, ८७-८८ परीषह (२३) दृष्टान्तसूचा। ८४ ८९ हस्तिभूतिक्षुल्लकदृष्टान्तः (१) ८६ ५२-५३*९० पिपासापरीषहः, धनशर्म- दृष्टान्तः (२) ८८ ५४-५५*९१ शीतपरीषहः। वैभारगिरि- समीपवर्तिभद्रबाहुशिष्यचतुष्कदृष्टा- न्तः (३) ८९ ५६-५७*९२ उष्णपरीषहः। अर्हन्नकदृष्टा- न्तः। (४) ९१ </td> <td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ५८-५९*९३ दंशमशकपरीषहः। सुम- नोभद्रदृष्टान्तः (५) ९२ ६०-६१*९४-९७ अचेलकपरीषहः। (दिगम्बरनिराकरणं) सोमदेवदृष्टा- न्तः। (६) ९८ ६२-६३*९८-९९ अरतिपरीषहः, तत्सह- नोपायश्च, युवराजमित्रपुरोहित- दृष्टान्तः (७) १०३ ६४-६५*१००-१०५ स्त्रीपरीषहः। पाट- लिपुत्रे स्थूलभद्रदृष्टान्तः (८) १०७ ६६-६७*१०६ चर्यापरीषहः। सङ्गमशि- ष्यदत्तदृष्टान्तः (९) १०८ ६८-६९*१०७ नैषेधिकीपरीषहः। कुरु- दत्तदृष्टान्तः। (१०) ११० </td> <td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ७०-७१*१०८-१०९ शय्यापरीषहः। सो- मदत्तसोमदेवदृष्टान्तः। (११) १११ ७२-७३*११० आक्रोशपरीषहः। अर्जुन- मालाकारदृष्टान्तः (१२) ११४ ७४-७५*१११-११३ वधपरीषहः, स्कन्द- कतच्छिष्यदृष्टान्तः (१३) ११६ ७६-७७*११३। याज्ञापरीषहः। बलदेव- दृष्टान्तः (१४) ११७ ७८-७९*११४ अलाभपरीषहः। ढंढण- दृष्टान्तः (१५) ११९ ८०-८१*११५ रोगपरीषहः। कालवेशिक- दृष्टान्तः (१६) १२१ ८२-८३*११६ तृणस्पर्शपरीषहः। भद्रकु- मारदृष्टान्तः (१७) १२२ </td> </tr> </table>			१ सू. उद्देशपृष्ठानिर्देशैः सूत्रस्पर्शने परी- षहाः (२२) (वक्तृता, गुरुकुलवास- पौरुषेयतासिद्धिः) ८३ ४९* परीषहकथनप्रतिज्ञा। ५०-५१* क्षुधापरीषहः, ८७-८८ परीषह (२३) दृष्टान्तसूचा। ८४ ८९ हस्तिभूतिक्षुल्लकदृष्टान्तः (१) ८६ ५२-५३*९० पिपासापरीषहः, धनशर्म- दृष्टान्तः (२) ८८ ५४-५५*९१ शीतपरीषहः। वैभारगिरि- समीपवर्तिभद्रबाहुशिष्यचतुष्कदृष्टा- न्तः (३) ८९ ५६-५७*९२ उष्णपरीषहः। अर्हन्नकदृष्टा- न्तः। (४) ९१	५८-५९*९३ दंशमशकपरीषहः। सुम- नोभद्रदृष्टान्तः (५) ९२ ६०-६१*९४-९७ अचेलकपरीषहः। (दिगम्बरनिराकरणं) सोमदेवदृष्टा- न्तः। (६) ९८ ६२-६३*९८-९९ अरतिपरीषहः, तत्सह- नोपायश्च, युवराजमित्रपुरोहित- दृष्टान्तः (७) १०३ ६४-६५*१००-१०५ स्त्रीपरीषहः। पाट- लिपुत्रे स्थूलभद्रदृष्टान्तः (८) १०७ ६६-६७*१०६ चर्यापरीषहः। सङ्गमशि- ष्यदत्तदृष्टान्तः (९) १०८ ६८-६९*१०७ नैषेधिकीपरीषहः। कुरु- दत्तदृष्टान्तः। (१०) ११०	७०-७१*१०८-१०९ शय्यापरीषहः। सो- मदत्तसोमदेवदृष्टान्तः। (११) १११ ७२-७३*११० आक्रोशपरीषहः। अर्जुन- मालाकारदृष्टान्तः (१२) ११४ ७४-७५*१११-११३ वधपरीषहः, स्कन्द- कतच्छिष्यदृष्टान्तः (१३) ११६ ७६-७७*११३। याज्ञापरीषहः। बलदेव- दृष्टान्तः (१४) ११७ ७८-७९*११४ अलाभपरीषहः। ढंढण- दृष्टान्तः (१५) ११९ ८०-८१*११५ रोगपरीषहः। कालवेशिक- दृष्टान्तः (१६) १२१ ८२-८३*११६ तृणस्पर्शपरीषहः। भद्रकु- मारदृष्टान्तः (१७) १२२
१ सू. उद्देशपृष्ठानिर्देशैः सूत्रस्पर्शने परी- षहाः (२२) (वक्तृता, गुरुकुलवास- पौरुषेयतासिद्धिः) ८३ ४९* परीषहकथनप्रतिज्ञा। ५०-५१* क्षुधापरीषहः, ८७-८८ परीषह (२३) दृष्टान्तसूचा। ८४ ८९ हस्तिभूतिक्षुल्लकदृष्टान्तः (१) ८६ ५२-५३*९० पिपासापरीषहः, धनशर्म- दृष्टान्तः (२) ८८ ५४-५५*९१ शीतपरीषहः। वैभारगिरि- समीपवर्तिभद्रबाहुशिष्यचतुष्कदृष्टा- न्तः (३) ८९ ५६-५७*९२ उष्णपरीषहः। अर्हन्नकदृष्टा- न्तः। (४) ९१	५८-५९*९३ दंशमशकपरीषहः। सुम- नोभद्रदृष्टान्तः (५) ९२ ६०-६१*९४-९७ अचेलकपरीषहः। (दिगम्बरनिराकरणं) सोमदेवदृष्टा- न्तः। (६) ९८ ६२-६३*९८-९९ अरतिपरीषहः, तत्सह- नोपायश्च, युवराजमित्रपुरोहित- दृष्टान्तः (७) १०३ ६४-६५*१००-१०५ स्त्रीपरीषहः। पाट- लिपुत्रे स्थूलभद्रदृष्टान्तः (८) १०७ ६६-६७*१०६ चर्यापरीषहः। सङ्गमशि- ष्यदत्तदृष्टान्तः (९) १०८ ६८-६९*१०७ नैषेधिकीपरीषहः। कुरु- दत्तदृष्टान्तः। (१०) ११०	७०-७१*१०८-१०९ शय्यापरीषहः। सो- मदत्तसोमदेवदृष्टान्तः। (११) १११ ७२-७३*११० आक्रोशपरीषहः। अर्जुन- मालाकारदृष्टान्तः (१२) ११४ ७४-७५*१११-११३ वधपरीषहः, स्कन्द- कतच्छिष्यदृष्टान्तः (१३) ११६ ७६-७७*११३। याज्ञापरीषहः। बलदेव- दृष्टान्तः (१४) ११७ ७८-७९*११४ अलाभपरीषहः। ढंढण- दृष्टान्तः (१५) ११९ ८०-८१*११५ रोगपरीषहः। कालवेशिक- दृष्टान्तः (१६) १२१ ८२-८३*११६ तृणस्पर्शपरीषहः। भद्रकु- मारदृष्टान्तः (१७) १२२				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७० ॥ ८४-८५*११७ मलपरीषदः । सुनन्दश्रा- वकदृष्टान्तः (१८) १२४ ८६-८७*११८ सत्कारपरिषदः, पुरोहित- पादपीडकश्रावकदृष्टान्तः (१९) १२६ ८८-८९*११९ प्रज्ञापरीषदः । कालकाचा- र्यदृष्टान्तः (शक्रागमः) (२०) १२८ ९०-९१*१२०-१२१ अज्ञानपरीषदः । अ- ज्ञाकटपितृदृष्टान्तः (२१) स्थूलभ- द्रमिधिसूचनदृष्टान्तः (२१) १३१ ९२-९३*१२२-१४० दर्शनपरीषदः । (आत्मसंयमादिसिद्धिः) आर्याषाढ- दृष्टान्तः (२२) महाक्रान्त- उत्तराध्य- यने परी- षदाध्य. चतुरंगी- याध्य. ॥ १७० ॥		
	कुलालवाक्यम् । गङ्गाव्यूढपाट- लजनवाक्ये । दग्धौटजतापसवा- क्यं । गृहीतदण्डप्रभोत्तरवाक्यानि । बल्लीस्थितसर्पमक्षितवृक्षस्थाण्डे शकुनि- वाक्यम् । रोषे मातङ्गवाक्यम् । राशि चौरे नागरकवाक्यम् । पत्यपिते पुत्रे मातृवाक्यानि । उपयाचितच्छग- लोपदेशः । सामरणसंयमार्याषाढ- वाक्यानि १४० ९४* अध्ययनोपसंहार १४० ॥ इति परीषदाध्ययनं ॥ २ ॥ ॥ अथ चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥ १४१ एककनिक्षेपाः (७) १४१ १४२ चतुष्कनिक्षेपाः (७)		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	<table border="0" style="width: 100%;"><tr><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १६२-१६३ मिथ्यात्वादश्रद्धा, गुरुनियोगा- नाभोगाभ्यां वाऽतत्त्वश्रद्धा १५२ १६४ निहववक्तव्यताप्रतिज्ञा १५२ १६५-१६६ निहवदृष्टीनामाद्याः पुरुषाः (७) १५३ १६७ जमालेरधिकारः (१) १५७ १६८ अन्यप्रदेशजीववादितिव्यगुप्ताधि- कारः (२) १६० १६९ अव्यक्तवाद्यापाढशिष्याधिकारः (३) १६२ १७० सामुच्छेद्यश्चमित्राधिकारः (४) १६५ १७१ द्विक्रियाऽऽर्यगङ्गाधिकारः (५) १६८ १७२-१७४ षडलूकत्रैराशिकाधिकारः (६) परिव्राजकविद्यास्तत्रतिपक्षविद्याश्च १७२ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १७५-१७७ अबद्धिकगोष्ठामाहिलाधिकारः । (७) अबद्धताप्रतिपादनम् । अपरिमा- णप्रत्याख्यानम् (१२ संभोगाः) १७८ १७८-१-२+ दिगम्बराधिकारः (८) दिगा- म्बरमततत्त्वरूपरामूले १८१ १५-१६* चतुरङ्गीदुर्लभता । नानाकर्मजना- नाजातिषु भ्रमाभ्ररत्नदुर्लभता १८२ १७* देवनरकासुरेषु भ्रमाच्च १८* क्षत्रियचाण्डालादिषु भ्रमणादपि १९-१००* कर्मणोऽनिर्वेदः संसारभ्रमश्च । १८३ १०१* लघुकर्मणः शुद्धस्य नरत्त्वम् १८४ १०२* तपःशान्त्यहिंसादराय श्रुतेर्दुर्लभता १०३* श्रवणेऽपि श्रद्धा दुर्लभा १८५ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १०४* श्रुतिश्रद्धयोर्वीर्यस्य दुर्लभता । १०५* लब्धचतुरङ्गस्य कर्मनाशः । १०६* तस्यैव शुद्धिर्धर्मो निर्वाणं च १८६ १०७* ऐहिकामुष्मिकफलेन शिष्योपदेशः । १०८-१०९* मुक्त्यभावे श्रेष्ठदेवत्वम् १८७ ११०-११२* च्युतस्य दशाङ्गे कुले मानुष्यं, दशाङ्गानि च १८८ ११३-११४* पुनर्मानुष्ये भोगाः बोधिः संयमः सिद्धिश्च १८९ ॥ इति चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥ ॥ अथासंस्कृताध्ययनम् ॥ १७९ प्रमादाप्रमादयोर्निक्षेपचतुष्कं १९० </td></tr></table>	१६२-१६३ मिथ्यात्वादश्रद्धा, गुरुनियोगा- नाभोगाभ्यां वाऽतत्त्वश्रद्धा १५२ १६४ निहववक्तव्यताप्रतिज्ञा १५२ १६५-१६६ निहवदृष्टीनामाद्याः पुरुषाः (७) १५३ १६७ जमालेरधिकारः (१) १५७ १६८ अन्यप्रदेशजीववादितिव्यगुप्ताधि- कारः (२) १६० १६९ अव्यक्तवाद्यापाढशिष्याधिकारः (३) १६२ १७० सामुच्छेद्यश्चमित्राधिकारः (४) १६५ १७१ द्विक्रियाऽऽर्यगङ्गाधिकारः (५) १६८ १७२-१७४ षडलूकत्रैराशिकाधिकारः (६) परिव्राजकविद्यास्तत्रतिपक्षविद्याश्च १७२	१७५-१७७ अबद्धिकगोष्ठामाहिलाधिकारः । (७) अबद्धताप्रतिपादनम् । अपरिमा- णप्रत्याख्यानम् (१२ संभोगाः) १७८ १७८-१-२+ दिगम्बराधिकारः (८) दिगा- म्बरमततत्त्वरूपरामूले १८१ १५-१६* चतुरङ्गीदुर्लभता । नानाकर्मजना- नाजातिषु भ्रमाभ्ररत्नदुर्लभता १८२ १७* देवनरकासुरेषु भ्रमाच्च १८* क्षत्रियचाण्डालादिषु भ्रमणादपि १९-१००* कर्मणोऽनिर्वेदः संसारभ्रमश्च । १८३ १०१* लघुकर्मणः शुद्धस्य नरत्त्वम् १८४ १०२* तपःशान्त्यहिंसादराय श्रुतेर्दुर्लभता १०३* श्रवणेऽपि श्रद्धा दुर्लभा १८५	१०४* श्रुतिश्रद्धयोर्वीर्यस्य दुर्लभता । १०५* लब्धचतुरङ्गस्य कर्मनाशः । १०६* तस्यैव शुद्धिर्धर्मो निर्वाणं च १८६ १०७* ऐहिकामुष्मिकफलेन शिष्योपदेशः । १०८-१०९* मुक्त्यभावे श्रेष्ठदेवत्वम् १८७ ११०-११२* च्युतस्य दशाङ्गे कुले मानुष्यं, दशाङ्गानि च १८८ ११३-११४* पुनर्मानुष्ये भोगाः बोधिः संयमः सिद्धिश्च १८९ ॥ इति चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥ ॥ अथासंस्कृताध्ययनम् ॥ १७९ प्रमादाप्रमादयोर्निक्षेपचतुष्कं १९०
१६२-१६३ मिथ्यात्वादश्रद्धा, गुरुनियोगा- नाभोगाभ्यां वाऽतत्त्वश्रद्धा १५२ १६४ निहववक्तव्यताप्रतिज्ञा १५२ १६५-१६६ निहवदृष्टीनामाद्याः पुरुषाः (७) १५३ १६७ जमालेरधिकारः (१) १५७ १६८ अन्यप्रदेशजीववादितिव्यगुप्ताधि- कारः (२) १६० १६९ अव्यक्तवाद्यापाढशिष्याधिकारः (३) १६२ १७० सामुच्छेद्यश्चमित्राधिकारः (४) १६५ १७१ द्विक्रियाऽऽर्यगङ्गाधिकारः (५) १६८ १७२-१७४ षडलूकत्रैराशिकाधिकारः (६) परिव्राजकविद्यास्तत्रतिपक्षविद्याश्च १७२	१७५-१७७ अबद्धिकगोष्ठामाहिलाधिकारः । (७) अबद्धताप्रतिपादनम् । अपरिमा- णप्रत्याख्यानम् (१२ संभोगाः) १७८ १७८-१-२+ दिगम्बराधिकारः (८) दिगा- म्बरमततत्त्वरूपरामूले १८१ १५-१६* चतुरङ्गीदुर्लभता । नानाकर्मजना- नाजातिषु भ्रमाभ्ररत्नदुर्लभता १८२ १७* देवनरकासुरेषु भ्रमाच्च १८* क्षत्रियचाण्डालादिषु भ्रमणादपि १९-१००* कर्मणोऽनिर्वेदः संसारभ्रमश्च । १८३ १०१* लघुकर्मणः शुद्धस्य नरत्त्वम् १८४ १०२* तपःशान्त्यहिंसादराय श्रुतेर्दुर्लभता १०३* श्रवणेऽपि श्रद्धा दुर्लभा १८५	१०४* श्रुतिश्रद्धयोर्वीर्यस्य दुर्लभता । १०५* लब्धचतुरङ्गस्य कर्मनाशः । १०६* तस्यैव शुद्धिर्धर्मो निर्वाणं च १८६ १०७* ऐहिकामुष्मिकफलेन शिष्योपदेशः । १०८-१०९* मुक्त्यभावे श्रेष्ठदेवत्वम् १८७ ११०-११२* च्युतस्य दशाङ्गे कुले मानुष्यं, दशाङ्गानि च १८८ ११३-११४* पुनर्मानुष्ये भोगाः बोधिः संयमः सिद्धिश्च १८९ ॥ इति चतुरङ्गीयाध्ययनम् ॥ ३ ॥ ॥ अथासंस्कृताध्ययनम् ॥ १७९ प्रमादाप्रमादयोर्निक्षेपचतुष्कं १९०		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७१ ॥ १८०-१८१ मद्याद्याः प्रमादाः, प्रमादाप्रमा- दाभिधानहेतुता । १९१ ११५* जीवितेऽसंस्कृतेऽत्राणे च कः प्रमादः? (अट्टनदृष्टान्तः) १९३ १८२ संस्कृतासंस्कृतयोः स्वरूपम् १९४ १८३-२०५ करणनिक्षेपाः (६) । द्रव्ये कटा- दिकरणं सञ्ज्ञाकरणे । नोसञ्ज्ञायां प्रयोगविश्रसाभेदौ । अनादिसादी वि- श्रसाकरणे । चाक्षुषं विश्रसाकरणम् । प्रयोगे जीवाजीवौ, जीवे मूले शरी- राङ्गोपाङ्गादि कर्णस्कन्धादीन्द्रियो- पघातविशुद्धिश्चोत्तरे, संघातपरिशा- दोभयानि । (शरीरेषु संघातादिवि- चारः) पटादेः सङ्घातनाद्युत्तरकर- णम् । अजीवप्रयोगे वर्णादि । क्षेत्र- स्वाभिलापेनेक्षुकरणादि, कालकरणा- नि ओघेनैकादश, ध्रुवकरणचतुष्कम् (तिथिकरणज्ञानोपायः) वर्णादि- भेदेनाजीवभावकरणे (५), जीव- भावकरणे श्रुतनोश्रुते, श्रुते च बद्धा- बद्धे निशीथानिशीथे । नोश्रुते गुणे तपःसंयमौ, योगा योजनायाम् । कर्मणायुर्भ्यामधिकारः । २०७ ११६* पापघना नरकगामिनः (चौरदृ- ष्टान्तः) २०७ ११७* सन्धिसुखगृहीतचौरवत् पापिनो न मोक्षः (चौरदृष्टान्तः) २०९ ११८* कर्मफले बन्धूनामबन्धुता (आभी- रीवश्वकवणिगदृष्टान्तः) २११ उत्तराध्य- यने चतुरं- गीयाध्य. असंस्कृ- ताध्य. ॥ १७१ ॥			

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १२५-१२७* मोहगुणेषु रागद्वेषत्यागः क- षायत्यागश्च। मृत्युं यावत्प्रेमद्वेषानुग- मतजुगुप्सा २२८ ॥ इत्यसंस्कृताध्ययनम् ॥ ४ ॥ भाग २ ॥ अथाकाममरणाध्ययनम् ॥ २०८ कामनिक्षेपाः (४) मरणनिक्षेपाः (६) अभिप्रेतकामैः प्रकृतम् २२९ २०९ द्रव्यभावमरणे, भावे ओषधभवत- विकानि वा २३० २१०-२११ मरणे विभक्तयनुभागप्रदेशाग्रा- दीनि (८) द्वाराणि २१२-२१३ आवीच्यादिका मरणभेदाः (१७) २३१ २१४-२२४ नामविभागकथनप्रतिज्ञा, आवी- चेर्लक्षणं भेदपञ्चकं च। अवध्या- त्यन्तिकवल्गुमरणानि। अन्तःशल्य- मरणं, तत्फलं च। तद्भवबालप- ण्डितमिश्रच्छब्दस्थकेवलिवैहायसगृध्र- पृष्ठमरणानि। २३५ २२५ भक्तपरिज्ञेज्जिनीपादपोषगमनानि २३७ २२६ अनुभावेषूपक्रमेतरौ, आयुःप्रदेशाश्च। २२७-२३० एकसमयमरणसंख्या (५), भ- वचक्रे एकैकमरणसंख्या २३९ २३१-२३२ अनादिमेषु मरणेष्वनन्तो भागः, आद्यमनुसमयं, प्रथमचरमयोर्नान्त- रम्, आद्यमनादि २४० २३३ उपसंहार औद्विग्यपरिहारश्च। २३४ भक्तपरिज्ञादीनां (३) श्रेष्ठता २४१ २३५ मनुष्यसकाममरणाभ्यामधिकारः १२८* तार्येऽर्णवे प्रश्नः १२९* सकामाकाममरणे। २४२ १३०* बालानामकाममसकृत्, पण्डितानां सकामं सकृत्। १३१-१४४* कामगृहकूरकृतनास्तिकैहिक- कामाभिलाषिशङ्कितपरलोको लोक- दर्शी त्रसत्थावरहिंसको (पशुपालह- ष्टान्तः) मायी सुरमांसभोजी गृद्धो द्विधामलसंचयी आतङ्के मीतः कर्मा- नुप्रेक्षी प्रगाढनरकानुप्रेक्षी पञ्चात्ता- पवान् भग्नशकटवत् प्रतिपन्नाधर्म-		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७२ ॥	शोची कलिजितधूर्त इव संत्रस्तो- ऽकाममरणवान् २४८ १४५* सकाममरणस्वरूपम् २४९ १४६* सर्वभिक्षगारिषु तद्भावः १४७* भिक्षुगारिणोर्विषमशीलता २५० १४८* चीयजिनादीनामत्रावृत्तम् १४९* दुःशीलसुरतयोर्गती (द्रमकट्टान्तः) २५१ १५०-१५१* सामायिकपौषधक्रियावतो दे- वत्वम् २५२ १५२* साधोर्मोक्षदेवत्वे । १५३-१५४* आवासानां देवानां च स्वरूपं १५५* संयमतपोभ्यां शान्तानां गतिः २५३ १५६* शीलवतां मरणेऽत्रासः	१५७* दयाधर्मैशान्तिमैधाविनां प्रसन्नता २५४ १५८-१५९* मरणे रोमहर्षत्यागः, त्रया- णामन्यतममरणं मुनेः २५४ ॥ इत्यकाममरणाध्ययनम् ॥ ५ ॥ ॥ अथ क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥ २३६ महच्छन्दनिक्षेपाः (८) २५५ २३७-२४३ निर्ग्रन्थनिक्षेपाः (४) नोआग- मतः (३) भावे (५) (पुलाकादि- स्वरूपम्) ३-३०+ पुलाकादिस्वरूपम् । संयमश्रुत- प्रतिसेवनादीनि द्वाराणि । उत्कृ- ष्टाद्या निर्ग्रन्थाः, ग्रन्थे बाह्याभ्य- न्तरौ, (१०) (१४) अभ्यन्तरवा-	उत्तराध्य- यने अका- ममरणाध्य- क्षुल्लकनिर्ग्र- ॥ १७२ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १७२* सौसारापन्नं दृष्ट्वाऽब्रवीतः स्वाह । १७३* मोक्षार्थं देहवृत्तिः । १७४* कर्महेतुत्यागी यथाकृतपिण्डपान- भोक्ता २६९ १७५* लेपसन्निध्योत्त्यागः १७६* अनियसमुद्दिष्टु पिण्डेही २७० १७७* वैशाखिष्यत्युत्तराध्ययनस्य । ॥ इति धुल्लुक्निर्ग्रन्थोपाध्वयनम् ॥६॥ ॥ अथ औराभिकाध्ययनम् ॥ २४४-२४६ ऊरभ्रमिलेपाः (४) इत्ये औ, नोआमये विषा । न्वतिरिक्ते एक- अविकवलावुष्काभिमुखनामगोत्राः, आधोरभ्रः तदुत्थितं चाण्डवजम् २७१ २४७-२४८ ऊरभ्रादिदृष्टान्तपञ्चकसूचा । २४८ आरम्भरसगृद्धिदुर्गतिप्रत्यपायैरुपमा २७२ १७८* आदेशार्थमैलकपोषणम् (ऊरभ्र- दृष्टान्तः) २७३ २४९ आतुरदीर्घायुषो लक्षणम् । १७९-१८०* पुष्टे आदेशाकाङ्क्षा । आदेशा- गमे वधः २७४ १८१* आदेशार्थ्यूरभ्रवद्धर्मी निरयैषी । १८२-१८६* हिंसाया नरकहेतवः । आस- नादि धनं च रजोहेतू, तादात्विकस्य मरणे शोकः २७५ १८७* हिंसकानां नरकगामिता २७६ १८८* काकिन्वात्राभ्यां सहस्रकाषोपणरा- व्यक्त्युतिः (द्रमकराजदृष्टान्तौ) २७७ १८९* मनुष्यकायायुषो दिवि सहस्रगुणता १९०* मनुष्यकायाः काकिन्वात्रोपमाः २७८ १९१-१९२* बाणिकूत्रोपमा (बाणिकू- त्रत्रयदृष्टान्तः) २७९ १९३* मानुष्यं देवत्वं नरकतिर्यक्त्वे मूलं लाभो मूलच्छेदश्च (सत्त्वत्रय- दृष्टान्तः) १९४* नरकतिर्यक्त्वे लोलुपशठबाढस्य । २८० १९५* चिराहुर्लभोन्मज्जाऽस्य । १९६-१९७* मानुष्ये मूलत्वम् । शिक्षा- मुन्नता नरगतिकाः ।

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७३ ॥ १९८* सविशेषशिक्षाशीला अदीना देवग- तिका: २८२ १९९* पराजयज्ञानं किं न ? २८३ २००* कुशाग्रसमुद्रोदकवन्नरदेवयोः कामाः । २०१* अल्पे आयुषि योगक्षेमं किं न वि- न्यात् २८४ २०२-२०४* कामाऽनिवृत्तो मार्गभ्रंशी । कामनिवृत्तो देवगतिकः, च्युतोऽपि ऋद्धिद्युत्यादिमान् २८५ २०५-२०७* बालधीरयोः स्वरूपं तुलना गतिश्च ॥ इत्यौरभिकाध्ययनम् ॥ ७ ॥ ॥ अथ कापिलियाध्ययनम् ॥ २५०-२५२ कपिलनिक्षेपाः (४) द्रव्ये द्विधा, नोआगमे त्रिधा, व्यतिरिक्ते एकभविष्यदि (३) भावकपिलाध्य- यनोत्थानम् २८६ २५३-२५९ कपिलचरित्रम् (कपिलकथा) २८९ २०८* अध्रुवे संसारे दुर्गतिरोधकं किं २९० २०९* अस्नेहस्य दोषपदान्मुक्तिः २१०* प्राप्तज्ञानस्य चौरमोक्षार्थमुपदेशः २९१ २११* ग्रन्थकलहत्यागी अलेपकः । २१२* श्लेष्मे मक्षिकावद्भोगगृह्णाज्ञस्य बन्धः २९२ २१३* वणिजामतरतरणवत्साधोः काम- त्यागः २१४* अज्ञहिंसकासाधवो नरकगामिनः । २९३ २१५* प्राणवधाननुज्ञाता मुक्तिगामी । २१६* स्थलादुदकवद्वधविरतात्पापनिर्गमः । २१७* त्रसस्थावरयोर्वधत्यागः २९८ २१८-२१९* एषणारतो जातैषी अरसगृहो भिक्षुः, प्रान्तादि यापनार्थं सेवते । २९५ २२०* लक्षणस्वप्नादिप्रयोक्ता न साधुः । २२१-२२२* कामात्समाधिभ्रष्टा आसुरग- तिकाः संसारभ्रमिणो दुर्लभबो- धिकाः २९६ २२३* कृत्स्नलोकेनाप्यसन्तोष्यो दुष्पूर आत्मा २९७ २२४* लाभो लोभहेतुः, द्विमासलाभे को- टिलोभवत् । उत्तराध्य- यने और- श्रीयं का- पिलीयं च. ॥ १७३ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) २२५* स्त्रीषु न गृह्येत्, प्रलोभ्य दासवत्क्री- डन्ति ताः । २२६* स्त्रीत्यागी धर्मस्थो भिक्षुः २९८ २२७* कपिलाध्ययनक्रियाफलम् । ॥ इति कापिलियाध्ययनम् ॥ ८ ॥ ॥ अथ नमिप्रव्रज्याध्ययनम् ॥ २६०-२६३ नमिनिक्षेपाः (४) प्रव्रज्या- निक्षेपाः (४) द्रव्येऽन्यतीर्थिकी, भावे आरम्भपरिग्रहत्यागः २९९ २६४-२७९ प्रत्येकबुद्धास्तद्देशास्तद्बोधिदे- तवश्च । नमिवृत्तान्तसूचा । सम- समयं च्यवनं सिद्धिश्च प्रत्येकबुद्धा- नाम् । वृषभात्कलिङ्गराजबोधः । इन्द्रकेतोः पञ्चालराजस्थानित्यता- विचारः । वलयशब्देभ्यो नमोः । चू- ताद्गान्धारस्य । त्यागिनः कः सञ्चयः ? किं परकृत्यवृत्तिः ? किं गर्हा ? अहित- वारणेऽदुष्टतेति । (प्रत्येकबुद्ध(४)- कथा) ३०६ २२८-२२९* नमेश्रवणं जातिस्मृतिः पुत्र- मभिषिच्य दीक्षा । २३०-२३१* भुक्तभोगस्य त्यागः, राष्ट्रव- लावरोधपरिजनत्यागश्च ३०७ २३२* प्रव्रजति नगर्यां कोलाहलः । २३३-२३४* माह्नरूपेण शक्रागमनं, नग- रीकोलाहलप्रासादगृहदारुणशब्दहेतु- पृच्छा । ३०८ २३५-३३७* हेतुकारणचोदितनमिवाक्यं, वातद्विषमाणगन्धे वने खगाक्रन्दैः समाधानम् । ३०९ २३८-२३९* दह्यमानमन्दिरान्तःपुरोपेक्षा- प्रश्नः । ३१० २४०-२४१* अकिञ्चनस्य नगरीदाहे न दाहः २४२-२४३* अपुत्रकलत्रव्यापारस्य न प्रिया- प्रिये, एकत्वानुदर्शिनो भद्रं च २४४-२४५* प्राकारगोपुरादिकरणानन्तरं व्रजेतीन्द्रवाक्यम् ३११ २४६-२४९* श्रद्धातपःक्षान्त्यादेर्नगर्यर्गलप्रा- कारादित्वं कृत्वा मुक्तिरिति नमिः । ३१२ २५०-२५१* प्रासादादि कृत्वा व्रजेतीन्द्रः ।		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादे- अनु. आव. ओघ. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७४ ॥ २५२-२५३* शाश्वतस्थानजिगमिषा । २५४-२५५* नगरक्षेमं कृत्वा ब्रजेतीन्द्रः । ३१३ २५६-२५७* कार्यकारिषु दण्डादण्डौ । २५८-२५९* अनन्यपार्थिववशीकारः (इन्द्रः) २६०-२६३* दशलक्षजयादात्मजयः, जि- तात्मनः सुखमिन्द्रियकषायजयश्च (नमिः) । ३१४ २६४-२६५* यद्वा द्विजभोजनान्तरं ब्रज इन्द्रः २६६-२६७* दशलक्षमोक्षतात् श्रेयः संयमः (नमिः) ३१५ २६८-२६९* घोराश्रमे पौषधिको भव (इन्द्रः) २७०-२७१* कुशाग्रभोजी न धर्माशार्हः नमिः । ३१६ २७२-२७३* हिरण्यादि वर्द्धय (इन्द्रः) २७४-२७६* सुवर्णादिपर्वतैः पृथिव्यादि- मिथ्य नैकस्य सन्तोषः (नमिः) ३१७ २७७-२७८* दृष्टभोगत्यागेऽन्यभोगप्रार्थ- ना (इन्द्रः) । २७९-२८१* शस्यविषसर्पौपमकामार्थिनां नरकः, क्रोधादेर्वरकगत्यादिः (नमिः) ३१८ २८२-२८४* इन्द्रस्वरूपप्रकाशोऽक्रोधादिना नमिस्तुतिः ३१९ २८५-२८७* अत्रागुत्रोत्तमतया सिद्धिगम- नेन च स्तुतिः प्रदक्षिणाश्च, वन्दित्वा स्वर्गमश्न । २८८-२८९* समेषनुत्कर्षः, भोगनिवृत्तिर्दृ- ष्टान्भूता ३२० ॥ इति नमिप्रव्रज्याध्ययनम् ॥ ९ ॥ ॥ अथ द्रुमपत्रकाध्ययनम् ॥ २८०-२८३ द्रुमनिक्षेपा(४)ऽऽदिः, यथा स्थित्युपक्रमाभ्यां पत्रेणौपम्यं ३२१ २८४-३०६ शाखमहाशाखयागिलिदीक्षा, अष्टापदप्रतिमानन्तुश्चरमशरीरता, वज्रजीववैश्रमणस्याग्रे पुण्डरीकाध्य- यनकथनं, कौण्डिन्यादीनां दीक्षा- कैवल्ये, चिरसंस्तृष्टादिः, गौतमनि- श्रया शिष्योपदेशश्च ३३३ २९०* पाण्डुरपत्रवज्रराणां जीवितम् ३३४ ३०७-३०९ पक्षपत्रस्त्रिरपक्रोलाफः (क- लिपताः) उत्तराध्य- यने नमिप्र- व्रज्याध्य- द्रुमपत्रा- यं च. ॥ १७४ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) २९१* कुशाग्रबिन्दुवज्ररजीवितं स्तोकम् । ३३५ २९२* इत्वरं बहुविधैश्चास्मिन्कर्मनाशोपदेशः २९३* मानुष्यं दुर्लभं गाढाश्च विपाकाः । २९४-३०३* पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिद्वि- त्रिचतुष्टयेन्द्रियदेवनारककाय- स्थितिः ३३६ ३०४* प्रमादबहुलस्य संसारभ्रमणम् । ३०५-३०९* आर्यत्वाहीनपञ्चेन्द्रियतोत्त- मधर्मश्रुतिश्रद्धास्पर्शनानां दुर्लभता । ३३८ ३१०-३१५* श्रोत्रचक्षुर्घ्राणरसनस्पर्शनसर्व- बलानां हीनता । ३१६* अरतिगण्डादिभिः शरीरपातः । ३१७* अस्त्रिगधस्य शारदकुमुदजलवत्प्रस- न्नता । ३३९ ३१८* वान्तानाशी ३१९* द्वितीयमित्राद्यगवेषणम् । ३२०* जिनादर्शनेऽपि श्रद्धा । ३४० ३२१* निष्कण्टको महालयो मोक्षगन्ता । ३२२* विषममार्गावगाहे पश्चात्तापः । ३२३* तीरागतः पाराय त्वरस्व ३४१ ३२४* क्षेमशिवानुत्तरां सिद्धिं गच्छ । ३२५* उपदेशसर्वस्वम् । ३२६* रागद्वेषच्छेदः, सिद्धिगतश्च गौतमस्य । ॥ इति द्रुमपत्रकाध्ययनम् १० ॥ ॥ अथ बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ॥ ३१०-३१२ बहुश्रुतपूजाशब्दानां निक्षेपाः (४) द्रव्ये जीवपुद्गलाः भावे चतुर्दश पूर्वाणि क्षायिके केवलं बहु, द्रव्ये पोण्डका- दिपुस्तकादि भावे सम्यग्मिथ्या- श्रुते ३४३ ३१३-३१४ शुद्धकर्मसम्यग्दृष्टेः सच्छ्रुतं, कर्मादानकृतमिथ्यादृष्टेरसत् ३१५-३१७* ईश्वरशिवादेर्द्रव्यपूजा, जि- नादेर्मावपूजा, चतुर्दशपूर्विणोऽपि ३४४ ३२७* संयोगमुक्ताचारकथनप्रतिज्ञा । ३२८* स्तब्धलुब्धानिमग्नहप्रलाप्यविनीतोऽव- हुश्रुतः । ३२९-३३१* अशिक्षाहेतवः स्तम्भाद्याः (५) अधःशिराद्यास्तु शिक्षाहेतवः (८) ३४५		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नद्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७५ ॥ ३३२-३३९* अभीक्ष्णं क्रोधप्रबन्धत्वे(१४)- रविनीतः, नीचैर्वृत्त्याद्यै (१५) वि- नीतः ३४७ ३४०* गुरुकुलवासियोगोपधानादिमतः शि- क्षाहर्त्वम् ३४८ ३४१* शङ्खपयोवद्बहुश्रुते धर्मकीर्त्यौ । ३४२-३५६* कम्बोजाश्वाश्चारुदशूरषष्टि- हायनकुञ्जरयूथेशवृषभसिंहवासुदेव- चक्रवर्तीन्द्रविवाकरचन्द्रकोष्ठागार- जम्बूशीतामन्दस्वयम्भूरमणैरुपमा बहुश्रुतस्य ३५३ ३५७* गम्भीरदुष्प्रवर्षतायिनः सिद्धिः । ३५८* श्रुताधिष्ठित आत्मपरतारकः । ॥ इति बहुश्रुतपूजाध्ययनम् ११ ॥ ॥ अथ हरिकेशीयाध्ययनम् ॥ ३१९-३२० हरिकेशनिक्षेपा(४)ऽऽदिः ३५४ ३२१-३२७ हरिकेशपूर्वभवमदः प्रातिहार्य- मीक्षित्वा दीक्षा हरिकेशैकार्थिकानि । जन्म ऋषिवान्ता सुभद्रा, बलकुट्टे बल- कोटस्य गौरीगान्धार्यौ, सविषेतरसर्पौ, तयोर्वधमुक्ती, भद्रकतोपदेशः । अत्र कथादिकथाबहुमुण्डितो जनः । ३५७ ३५९-३६१* श्वपाककुलो गुणी हरिकेशः, पञ्चसमितस्त्रिगुप्तो यज्ञपाटमागतः । ३६२-३६४* तपःकृशं प्रान्तोपधिमनार्या जातिमदहिंसेन्द्रियभ्रमरता वर्णना- शबन्नादिभिरुपहसन्ति । ३५९ ३६५* प्राप्ते निन्दित्वा गमनप्रेरणा । ३६६-३६८* शरीरं प्रच्छाद्य तिन्दुकयक्षवा- क्यं, साधुगुणकथनं भिक्षायाच्चा । ३६० ३६९* द्विजार्थमेतत्तद्वच्छ(छात्राः) ३६१ ३७०* स्थलनिम्नन्यायेन देहि(यक्षः) ३७१* जातिविद्योपपेता द्विजाः क्षेत्रम् । (छात्राः) ३६२ ३७२-३७३* जातिविद्याविहीनाः क्रोधादि- मन्तः पापस्य क्षेत्रं, भिक्षाचर्यावन्तः पुण्यस्य (यक्षः) ३६३ ३७४* प्रत्यनीकाय न दद्वोऽन्नपानम् ।(छात्राः) ३७५* समितिसमाधिगुप्तिमतेऽज्ञाने यज्ञ- लाभो न (यक्षः) उत्तराध्य- यने द्रुमपत्र बहुश्रुत हरिकेशी- यानि. ॥ १७५ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ३७६-३७७* दण्डफलादिभिश्छात्रादीनां व- धायाऽऽदेशोऽध्यापकस्य, छात्रास्ताड- यन्ति ऋषिम् । ३६४ ३७८-३८१* अनिन्दिताङ्गी भद्रा प्रतः कुमा- रान् सान्त्वयति ऋषिं च स्तौति । ३६५ ३८२-३८९* असुरकृतं ताडनम्, भद्राकृतो- पालम्भः शरणगतिशिक्षा च । छात्रा- वस्था, सभार्याध्यापककृता क्षामणा प्रसादनं च ३६८ ३९०* यक्षकृतमेतदिति मुनिः । ३९१-३९४* शरणगतिः, अर्चनं, भक्तदा- नानुज्ञा, विज्ञप्तिर्दानं दिव्यपञ्चकं च । ३६९ ३९५* विस्मितद्विजकृता तपःप्रशंसा । ३७० </td><td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ३९६-३९७* ज्योतिरारम्भवाह्यशुद्धी न कु- शलदृष्टे, कुशादयः पापक्रियाः । ३९८-४००* प्रवृत्तियागकर्मक्षयप्रभः, वधा- दिविरतसंवृतादिर्यज्ञयाजी । ३७२ ४०१-४०२* ज्योतिस्तत्स्थानसुवादिप्रभे तपआदीनां ज्योतिरादिता ४०३-४०५* हृदतीर्थादिप्रभे धर्मादीनां ह- दत्वादि । ३७४ ॥ इति हरिकेशीयाध्ययनम् ॥१२॥ ॥ अथ चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ॥ ३२८-३३३ चित्रसंभूतयोर्निक्षेपा (४)- ऽऽदिः, चित्रसंभूतयोः पूर्वभवाः । (कथा संस्कृतेऽतः) ४०६* कृतनिदानब्रह्मदत्तजन्म ३७६ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ३३४-३५२ ब्रह्मदत्तचर्याहिण्डी । कन्यात- त्पित्रादयः । भ्रमणस्थानानि । ३८२ ४०७* चित्रः पुरिमताले श्रेष्ठी प्रव्रजितश्च । ४०८* काम्पिल्ये समागमः, मिथो वार्ता च । पुरोजातीनां प्रकाशः ऋद्धिदाना- दरश्च । ३८३ ४०९-४१२* अन्योऽन्यानुगानुरक्तौ आवां भ्रातरौ दासा इत्यादि ब्रह्मवाक्यम् । ४१३* त्वन्निदानाद्वियोगः । (मुनिः) । ३८४ ४१४* सत्यशौचफलम् (ब्रह्म) ४१५-४१७* स्वबाह्यान्तःसमृद्धिवर्णनं । ३८५ ४१८-४१९* प्रासादवित्तभृत्याद्यैर्निमग्नम् । ३८६ ४२०-४२२* गीतनृत्याभरणकामानामशु- </td></tr> </table>			३७६-३७७* दण्डफलादिभिश्छात्रादीनां व- धायाऽऽदेशोऽध्यापकस्य, छात्रास्ताड- यन्ति ऋषिम् । ३६४ ३७८-३८१* अनिन्दिताङ्गी भद्रा प्रतः कुमा- रान् सान्त्वयति ऋषिं च स्तौति । ३६५ ३८२-३८९* असुरकृतं ताडनम्, भद्राकृतो- पालम्भः शरणगतिशिक्षा च । छात्रा- वस्था, सभार्याध्यापककृता क्षामणा प्रसादनं च ३६८ ३९०* यक्षकृतमेतदिति मुनिः । ३९१-३९४* शरणगतिः, अर्चनं, भक्तदा- नानुज्ञा, विज्ञप्तिर्दानं दिव्यपञ्चकं च । ३६९ ३९५* विस्मितद्विजकृता तपःप्रशंसा । ३७०	३९६-३९७* ज्योतिरारम्भवाह्यशुद्धी न कु- शलदृष्टे, कुशादयः पापक्रियाः । ३९८-४००* प्रवृत्तियागकर्मक्षयप्रभः, वधा- दिविरतसंवृतादिर्यज्ञयाजी । ३७२ ४०१-४०२* ज्योतिस्तत्स्थानसुवादिप्रभे तपआदीनां ज्योतिरादिता ४०३-४०५* हृदतीर्थादिप्रभे धर्मादीनां ह- दत्वादि । ३७४ ॥ इति हरिकेशीयाध्ययनम् ॥१२॥ ॥ अथ चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ॥ ३२८-३३३ चित्रसंभूतयोर्निक्षेपा (४)- ऽऽदिः, चित्रसंभूतयोः पूर्वभवाः । (कथा संस्कृतेऽतः) ४०६* कृतनिदानब्रह्मदत्तजन्म ३७६	३३४-३५२ ब्रह्मदत्तचर्याहिण्डी । कन्यात- त्पित्रादयः । भ्रमणस्थानानि । ३८२ ४०७* चित्रः पुरिमताले श्रेष्ठी प्रव्रजितश्च । ४०८* काम्पिल्ये समागमः, मिथो वार्ता च । पुरोजातीनां प्रकाशः ऋद्धिदाना- दरश्च । ३८३ ४०९-४१२* अन्योऽन्यानुगानुरक्तौ आवां भ्रातरौ दासा इत्यादि ब्रह्मवाक्यम् । ४१३* त्वन्निदानाद्वियोगः । (मुनिः) । ३८४ ४१४* सत्यशौचफलम् (ब्रह्म) ४१५-४१७* स्वबाह्यान्तःसमृद्धिवर्णनं । ३८५ ४१८-४१९* प्रासादवित्तभृत्याद्यैर्निमग्नम् । ३८६ ४२०-४२२* गीतनृत्याभरणकामानामशु-
३७६-३७७* दण्डफलादिभिश्छात्रादीनां व- धायाऽऽदेशोऽध्यापकस्य, छात्रास्ताड- यन्ति ऋषिम् । ३६४ ३७८-३८१* अनिन्दिताङ्गी भद्रा प्रतः कुमा- रान् सान्त्वयति ऋषिं च स्तौति । ३६५ ३८२-३८९* असुरकृतं ताडनम्, भद्राकृतो- पालम्भः शरणगतिशिक्षा च । छात्रा- वस्था, सभार्याध्यापककृता क्षामणा प्रसादनं च ३६८ ३९०* यक्षकृतमेतदिति मुनिः । ३९१-३९४* शरणगतिः, अर्चनं, भक्तदा- नानुज्ञा, विज्ञप्तिर्दानं दिव्यपञ्चकं च । ३६९ ३९५* विस्मितद्विजकृता तपःप्रशंसा । ३७०	३९६-३९७* ज्योतिरारम्भवाह्यशुद्धी न कु- शलदृष्टे, कुशादयः पापक्रियाः । ३९८-४००* प्रवृत्तियागकर्मक्षयप्रभः, वधा- दिविरतसंवृतादिर्यज्ञयाजी । ३७२ ४०१-४०२* ज्योतिस्तत्स्थानसुवादिप्रभे तपआदीनां ज्योतिरादिता ४०३-४०५* हृदतीर्थादिप्रभे धर्मादीनां ह- दत्वादि । ३७४ ॥ इति हरिकेशीयाध्ययनम् ॥१२॥ ॥ अथ चित्रसंभूतीयाध्ययनम् ॥ ३२८-३३३ चित्रसंभूतयोर्निक्षेपा (४)- ऽऽदिः, चित्रसंभूतयोः पूर्वभवाः । (कथा संस्कृतेऽतः) ४०६* कृतनिदानब्रह्मदत्तजन्म ३७६	३३४-३५२ ब्रह्मदत्तचर्याहिण्डी । कन्यात- त्पित्रादयः । भ्रमणस्थानानि । ३८२ ४०७* चित्रः पुरिमताले श्रेष्ठी प्रव्रजितश्च । ४०८* काम्पिल्ये समागमः, मिथो वार्ता च । पुरोजातीनां प्रकाशः ऋद्धिदाना- दरश्च । ३८३ ४०९-४१२* अन्योऽन्यानुगानुरक्तौ आवां भ्रातरौ दासा इत्यादि ब्रह्मवाक्यम् । ४१३* त्वन्निदानाद्वियोगः । (मुनिः) । ३८४ ४१४* सत्यशौचफलम् (ब्रह्म) ४१५-४१७* स्वबाह्यान्तःसमृद्धिवर्णनं । ३८५ ४१८-४१९* प्रासादवित्तभृत्याद्यैर्निमग्नम् । ३८६ ४२०-४२२* गीतनृत्याभरणकामानामशु-				

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)								
	<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 10px;"> नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७६ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 10px;"> भतां विरतौ सुखं च चित्रराजाय शास्ति । ३८७ ४२३-४२५* पूर्वभवान् दिष्टा मोक्षहेतुदी- क्षोपदेशः । ३८८ ४२६* अशाश्वते जीविते पुण्यभ्रष्टः शोचति । ४२७-४२८* सिंहान्मृगवन्मरणे कर्मणि चाशरणम् । ३८९ ४२९-४३०* द्विपदक्षेत्रगृहधनादेर्भिन्नता । ४३१* जरा वर्णहारिणी, मा कर्म कार्षीः (मुनिः) ३९० ४३२* भोगाः सङ्गकराः । ४३३-४३५* अप्रतिक्रान्तनिदाना कामभो- गमूर्च्छा, पङ्कममृतागवत्त्यागेऽस- मर्थः । ३९१ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ४३६-४३७* क्षीणफलद्रुमपक्षिन्यायेन भोगा अनित्याः, त्यागेऽशक्तोऽपि धर्मस्थितो भावी देवस्त्वम् । ३९२ ४३८* आरम्भपरिग्रहसक्तत्वं गच्छाम्य- हम् । (मुनिः) ४३०* ब्रह्मदत्तस्याप्रतिष्ठाननरके गतिः । ३५४-३५८ ब्रह्मशेषवक्तव्यता । (गाथा असंप्रदायाः) ३९३ ४४०* चित्रस्य मुक्तिः । ॥ इति चित्रसंभूतीयाध्ययनम् १३॥ ॥ अथ इषुकारीयाध्ययनम् ॥ ३५९-३७२ इषुकारनिक्षेपा (४)दिः । इषुका- रपूर्वभवादिः । (इषुकारकथा) ३९६ ४४१-४४३* देवभवाद् इषुकारादीनामव- तारः ३९७ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ४४४-४४५* जातिस्मृत्या पुत्रयोर्वैराग्यम् । ४४६-४४७* मोक्षामिकाङ्क्षिणोः तयोः पितु- रापृच्छा । ३९८ ४४८-४४९* सुतोत्पत्तौ वेदाध्ययनादि कृत्वा भवतमारण्यकौ(पिता) ३९९ ४५०-४५५* वेदादीनामत्रावृता कामा अन- र्थमूलाः, अनपेक्षितो मृत्युः । (कुमारौ) ४०१ ४५६* धनस्त्रीकामास्त्रपःफलम्(पिता) ४५७* आत्महिते धनादेर्निरर्थकता(कु०) । ४५८* शरीरमात्रो जीवः । (पि०) ४०२ ४५९-४६१* नित्यजीवत्वबन्धयोः साधनम्, पूर्ववत्पापाकरणं सदुःखे गृहेऽरतिश्च (कु०) ४०३ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 10px;"> उत्तराध्य- यने चित्र- संभूति येषु- कारिये. ॥ १७६ ॥ </td></tr> </table>				नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७६ ॥	भतां विरतौ सुखं च चित्रराजाय शास्ति । ३८७ ४२३-४२५* पूर्वभवान् दिष्टा मोक्षहेतुदी- क्षोपदेशः । ३८८ ४२६* अशाश्वते जीविते पुण्यभ्रष्टः शोचति । ४२७-४२८* सिंहान्मृगवन्मरणे कर्मणि चाशरणम् । ३८९ ४२९-४३०* द्विपदक्षेत्रगृहधनादेर्भिन्नता । ४३१* जरा वर्णहारिणी, मा कर्म कार्षीः (मुनिः) ३९० ४३२* भोगाः सङ्गकराः । ४३३-४३५* अप्रतिक्रान्तनिदाना कामभो- गमूर्च्छा, पङ्कममृतागवत्त्यागेऽस- मर्थः । ३९१	४३६-४३७* क्षीणफलद्रुमपक्षिन्यायेन भोगा अनित्याः, त्यागेऽशक्तोऽपि धर्मस्थितो भावी देवस्त्वम् । ३९२ ४३८* आरम्भपरिग्रहसक्तत्वं गच्छाम्य- हम् । (मुनिः) ४३०* ब्रह्मदत्तस्याप्रतिष्ठाननरके गतिः । ३५४-३५८ ब्रह्मशेषवक्तव्यता । (गाथा असंप्रदायाः) ३९३ ४४०* चित्रस्य मुक्तिः । ॥ इति चित्रसंभूतीयाध्ययनम् १३॥ ॥ अथ इषुकारीयाध्ययनम् ॥ ३५९-३७२ इषुकारनिक्षेपा (४)दिः । इषुका- रपूर्वभवादिः । (इषुकारकथा) ३९६ ४४१-४४३* देवभवाद् इषुकारादीनामव- तारः ३९७	४४४-४४५* जातिस्मृत्या पुत्रयोर्वैराग्यम् । ४४६-४४७* मोक्षामिकाङ्क्षिणोः तयोः पितु- रापृच्छा । ३९८ ४४८-४४९* सुतोत्पत्तौ वेदाध्ययनादि कृत्वा भवतमारण्यकौ(पिता) ३९९ ४५०-४५५* वेदादीनामत्रावृता कामा अन- र्थमूलाः, अनपेक्षितो मृत्युः । (कुमारौ) ४०१ ४५६* धनस्त्रीकामास्त्रपःफलम्(पिता) ४५७* आत्महिते धनादेर्निरर्थकता(कु०) । ४५८* शरीरमात्रो जीवः । (पि०) ४०२ ४५९-४६१* नित्यजीवत्वबन्धयोः साधनम्, पूर्ववत्पापाकरणं सदुःखे गृहेऽरतिश्च (कु०) ४०३	उत्तराध्य- यने चित्र- संभूति येषु- कारिये. ॥ १७६ ॥
नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७६ ॥	भतां विरतौ सुखं च चित्रराजाय शास्ति । ३८७ ४२३-४२५* पूर्वभवान् दिष्टा मोक्षहेतुदी- क्षोपदेशः । ३८८ ४२६* अशाश्वते जीविते पुण्यभ्रष्टः शोचति । ४२७-४२८* सिंहान्मृगवन्मरणे कर्मणि चाशरणम् । ३८९ ४२९-४३०* द्विपदक्षेत्रगृहधनादेर्भिन्नता । ४३१* जरा वर्णहारिणी, मा कर्म कार्षीः (मुनिः) ३९० ४३२* भोगाः सङ्गकराः । ४३३-४३५* अप्रतिक्रान्तनिदाना कामभो- गमूर्च्छा, पङ्कममृतागवत्त्यागेऽस- मर्थः । ३९१	४३६-४३७* क्षीणफलद्रुमपक्षिन्यायेन भोगा अनित्याः, त्यागेऽशक्तोऽपि धर्मस्थितो भावी देवस्त्वम् । ३९२ ४३८* आरम्भपरिग्रहसक्तत्वं गच्छाम्य- हम् । (मुनिः) ४३०* ब्रह्मदत्तस्याप्रतिष्ठाननरके गतिः । ३५४-३५८ ब्रह्मशेषवक्तव्यता । (गाथा असंप्रदायाः) ३९३ ४४०* चित्रस्य मुक्तिः । ॥ इति चित्रसंभूतीयाध्ययनम् १३॥ ॥ अथ इषुकारीयाध्ययनम् ॥ ३५९-३७२ इषुकारनिक्षेपा (४)दिः । इषुका- रपूर्वभवादिः । (इषुकारकथा) ३९६ ४४१-४४३* देवभवाद् इषुकारादीनामव- तारः ३९७	४४४-४४५* जातिस्मृत्या पुत्रयोर्वैराग्यम् । ४४६-४४७* मोक्षामिकाङ्क्षिणोः तयोः पितु- रापृच्छा । ३९८ ४४८-४४९* सुतोत्पत्तौ वेदाध्ययनादि कृत्वा भवतमारण्यकौ(पिता) ३९९ ४५०-४५५* वेदादीनामत्रावृता कामा अन- र्थमूलाः, अनपेक्षितो मृत्युः । (कुमारौ) ४०१ ४५६* धनस्त्रीकामास्त्रपःफलम्(पिता) ४५७* आत्महिते धनादेर्निरर्थकता(कु०) । ४५८* शरीरमात्रो जीवः । (पि०) ४०२ ४५९-४६१* नित्यजीवत्वबन्धयोः साधनम्, पूर्ववत्पापाकरणं सदुःखे गृहेऽरतिश्च (कु०) ४०३	उत्तराध्य- यने चित्र- संभूति येषु- कारिये. ॥ १७६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ४६२* व्याधवागुराप्रहरणप्रश्नाः । (पि०) ४६३-४६५* मृत्युजरारात्रयः, ताः धर्म्यध- र्मिणोः सफलाः अफलाश्च(कु०)। ४०४ ४६६* पश्चाद् यास्यामः (पि०) ४६७-४६८* मृत्युसख्यपलायनाभावाद्धर्मे त्तरा । (कु०) ४०५ ४६९-४७०* पुत्रत्यक्तस्याशोभनता (पुरो- हितः) । ४७१* मुक्तभोगौ गमिष्यावः । (पु० पत्नी) ४०६ ४७२* समलभालाभसुखदुःखो मौनीभवि- ष्यामि । (पु०) ४७३* भिक्षाचर्या दुःखं, मुहूर्त्त भोगान् । (पु. पत्नी) ४०७ ४७४-४७५* पुत्रौ विरक्तौ, धीराणां श्राम- ण्यम् । (पु०) ४७६* पतिपुत्रानुसरणाऽनुमतिः (पु० पत्नी) ४०८ ४७७-४८०* तद्धनप्राहिणे राज्ञे राज्ञीशिक्षा, मा वान्ताशी भव, न ते तुष्टिश्चलाः कामा धर्मस्त्राणम् । ४०९ ४८१-४८८* राज्ञ्या वैराग्यम् । ४११ ४८९-४९३* राजराज्ञयोर्दीक्षा, मोक्षश्च स- र्वेषाम् । ४१२ ॥ इतीपुकारीयाध्ययनम् १४ ॥ ॥ अथ सभिक्षुकाध्ययनम् ॥ ३७३-३७८ भिक्षुनिक्षेपा(४)दिः । द्रव्यभा- वभेदभेदभेदव्यानि । रागादिभुङ्गे- दकाः सिद्ध्यन्ति । ४१३ ४९४-५०९* मौनचरणादि-रागोपरमणादि- आक्रोशवधसहनादि-प्रान्तशयनास- नादि-सत्कारानीहादि-मोहनिरासादि- स्वरभौमादिवर्जन-मन्त्रमूलादिवर्जन- क्षत्रियश्लोकादिवर्जन-संस्तवत्याग- अदत्तत्याग-शुद्धप्रास-धूमपरिहार-नि- र्भय-दृढसम्यक्त्वाशिल्पजीवनादिगु- णोपेतो भिक्षुः । ४२० ॥ इति सभिक्षुकाध्ययनम् १५ ॥ ॥ अथ ब्रह्मचर्यसमाध्यध्ययनम् ॥ ३७९ एककनिक्षेपाः (७) । ४२१ ३८० दशकनिक्षेपाः (६) दशप्रदेशिकः, अवगाहनस्थित्योश्च, जीवाजीवपर्या- याश्च ।		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'						
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)						
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७७ ॥	<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ३८१-३८२ ब्रह्मनिक्षेपाः (४) स्थापनायां ब्राह्मणोत्पत्तिः, द्रव्येऽज्ञस्य, भावे साधोः, रक्षायै स्थानान्यस्य । ३८३ चरणनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गतिभक्षणे । ३८४ समाधिनिक्षेपाः (४) ४२२ ३८५ स्थाननिक्षेपाः (१४) २सू. समाधिस्थानोद्देशः । ४२३ ३ पृच्छा, स्त्रीपशुपण्डकासंसक्तशयनादि- सेवनं, विपर्यये दोषाः ४२४ ४ पूर्ववत्स्त्रीकथावर्जनम् । ५ पूर्ववत्स्त्रीनिषद्यावर्जनम् । ६ पूर्ववदिन्द्रियालोकवर्जनम् । ४२५ ७ कुड्याद्यन्तरकूजितादिश्रवणवर्जनम् । ८ पूर्ववत्क्रीडितवर्जनम् ४२६ ९ प्रणीताहारवर्जनम् । </td><td style="width: 50%; vertical-align: top; padding: 5px;"> १० अतिभोजनवर्जनम् । ११ विभूषात्यागः । ४२७ १२ शब्दाद्यननुपातिता । ५१०-५१९* दशस्थानश्लोकाः । ४२९ ५२०-५२२* स्त्रीसंसक्तशयनादीनां ताल- पुटोपमत्वम् । ४२९ ५२३-५२४* त्यक्तकामादिः धर्मरामादिरतः स्यात् । ४३० ५२५-५२६* ब्रह्मचर्यमहिमा । ॥ इति ब्रह्मचर्यसमाध्यध्ययनम् १६ ॥ ॥ अथ पापश्रमणाध्ययनम् ॥ ३८६-३८७ पापनिक्षेपाः (६)। क्षेत्रे नरकः, कालेऽतिदुष्पमा । ३८८ श्रमणनिक्षेपाः (४) । ज्ञानसंयमयुतो भावे । ४३२ </td></tr> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ३८९-३९० अकरणीयसेवी पापश्रमणस्तद्व- र्जको मुक्तिगामी । ५२७-५२९* प्रव्रज्य शय्यादिरतः सुख- शीलः पापश्रमणः । ५३०-५४५* आचार्यनिन्दकाऽतर्पकप्राणा- दिमर्दकाप्रमार्जितसंस्ताराद्यारोहक- द्रुतचारिप्रतिलेखनाप्रमत्तगुरुपरिभा- वकबहुमायिविवादोदीरकास्थिरासन- सरजस्कशयनविकृतिभोजनयावत्सू- र्यभोजनाचार्यत्यागपरगेहव्यापारकुटु- म्बपिण्डाः पापश्रमणाः । ४३६ ५४६-५४७* पापश्रमणता तद्वर्जने च फलं । ४३७ ॥ इति पापश्रमणाध्ययनम् १७ ॥ </td><td style="width: 50%; vertical-align: top; padding: 5px;"> उत्तराध्य- यने सभिधु- ब्रह्मचर्य पा- पश्रमणानि. ॥ १७७ ॥ </td></tr> </table>		३८१-३८२ ब्रह्मनिक्षेपाः (४) स्थापनायां ब्राह्मणोत्पत्तिः, द्रव्येऽज्ञस्य, भावे साधोः, रक्षायै स्थानान्यस्य । ३८३ चरणनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गतिभक्षणे । ३८४ समाधिनिक्षेपाः (४) ४२२ ३८५ स्थाननिक्षेपाः (१४) २सू. समाधिस्थानोद्देशः । ४२३ ३ पृच्छा, स्त्रीपशुपण्डकासंसक्तशयनादि- सेवनं, विपर्यये दोषाः ४२४ ४ पूर्ववत्स्त्रीकथावर्जनम् । ५ पूर्ववत्स्त्रीनिषद्यावर्जनम् । ६ पूर्ववदिन्द्रियालोकवर्जनम् । ४२५ ७ कुड्याद्यन्तरकूजितादिश्रवणवर्जनम् । ८ पूर्ववत्क्रीडितवर्जनम् ४२६ ९ प्रणीताहारवर्जनम् ।	१० अतिभोजनवर्जनम् । ११ विभूषात्यागः । ४२७ १२ शब्दाद्यननुपातिता । ५१०-५१९* दशस्थानश्लोकाः । ४२९ ५२०-५२२* स्त्रीसंसक्तशयनादीनां ताल- पुटोपमत्वम् । ४२९ ५२३-५२४* त्यक्तकामादिः धर्मरामादिरतः स्यात् । ४३० ५२५-५२६* ब्रह्मचर्यमहिमा । ॥ इति ब्रह्मचर्यसमाध्यध्ययनम् १६ ॥ ॥ अथ पापश्रमणाध्ययनम् ॥ ३८६-३८७ पापनिक्षेपाः (६)। क्षेत्रे नरकः, कालेऽतिदुष्पमा । ३८८ श्रमणनिक्षेपाः (४) । ज्ञानसंयमयुतो भावे । ४३२	३८९-३९० अकरणीयसेवी पापश्रमणस्तद्व- र्जको मुक्तिगामी । ५२७-५२९* प्रव्रज्य शय्यादिरतः सुख- शीलः पापश्रमणः । ५३०-५४५* आचार्यनिन्दकाऽतर्पकप्राणा- दिमर्दकाप्रमार्जितसंस्ताराद्यारोहक- द्रुतचारिप्रतिलेखनाप्रमत्तगुरुपरिभा- वकबहुमायिविवादोदीरकास्थिरासन- सरजस्कशयनविकृतिभोजनयावत्सू- र्यभोजनाचार्यत्यागपरगेहव्यापारकुटु- म्बपिण्डाः पापश्रमणाः । ४३६ ५४६-५४७* पापश्रमणता तद्वर्जने च फलं । ४३७ ॥ इति पापश्रमणाध्ययनम् १७ ॥	उत्तराध्य- यने सभिधु- ब्रह्मचर्य पा- पश्रमणानि. ॥ १७७ ॥
३८१-३८२ ब्रह्मनिक्षेपाः (४) स्थापनायां ब्राह्मणोत्पत्तिः, द्रव्येऽज्ञस्य, भावे साधोः, रक्षायै स्थानान्यस्य । ३८३ चरणनिक्षेपाः (६), द्रव्ये गतिभक्षणे । ३८४ समाधिनिक्षेपाः (४) ४२२ ३८५ स्थाननिक्षेपाः (१४) २सू. समाधिस्थानोद्देशः । ४२३ ३ पृच्छा, स्त्रीपशुपण्डकासंसक्तशयनादि- सेवनं, विपर्यये दोषाः ४२४ ४ पूर्ववत्स्त्रीकथावर्जनम् । ५ पूर्ववत्स्त्रीनिषद्यावर्जनम् । ६ पूर्ववदिन्द्रियालोकवर्जनम् । ४२५ ७ कुड्याद्यन्तरकूजितादिश्रवणवर्जनम् । ८ पूर्ववत्क्रीडितवर्जनम् ४२६ ९ प्रणीताहारवर्जनम् ।	१० अतिभोजनवर्जनम् । ११ विभूषात्यागः । ४२७ १२ शब्दाद्यननुपातिता । ५१०-५१९* दशस्थानश्लोकाः । ४२९ ५२०-५२२* स्त्रीसंसक्तशयनादीनां ताल- पुटोपमत्वम् । ४२९ ५२३-५२४* त्यक्तकामादिः धर्मरामादिरतः स्यात् । ४३० ५२५-५२६* ब्रह्मचर्यमहिमा । ॥ इति ब्रह्मचर्यसमाध्यध्ययनम् १६ ॥ ॥ अथ पापश्रमणाध्ययनम् ॥ ३८६-३८७ पापनिक्षेपाः (६)। क्षेत्रे नरकः, कालेऽतिदुष्पमा । ३८८ श्रमणनिक्षेपाः (४) । ज्ञानसंयमयुतो भावे । ४३२						
३८९-३९० अकरणीयसेवी पापश्रमणस्तद्व- र्जको मुक्तिगामी । ५२७-५२९* प्रव्रज्य शय्यादिरतः सुख- शीलः पापश्रमणः । ५३०-५४५* आचार्यनिन्दकाऽतर्पकप्राणा- दिमर्दकाप्रमार्जितसंस्ताराद्यारोहक- द्रुतचारिप्रतिलेखनाप्रमत्तगुरुपरिभा- वकबहुमायिविवादोदीरकास्थिरासन- सरजस्कशयनविकृतिभोजनयावत्सू- र्यभोजनाचार्यत्यागपरगेहव्यापारकुटु- म्बपिण्डाः पापश्रमणाः । ४३६ ५४६-५४७* पापश्रमणता तद्वर्जने च फलं । ४३७ ॥ इति पापश्रमणाध्ययनम् १७ ॥	उत्तराध्य- यने सभिधु- ब्रह्मचर्य पा- पश्रमणानि. ॥ १७७ ॥						

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ अथ संजयतीयाध्ययनम् ॥ ३९१-३९३ संजयनिक्षेपा(४)दिः । ५४८-५५०* ह्यादियुतः मृगयानिर्गतः संजयः । ४३८ ३९४-३९५ मृगयानिर्गमः । ५५१-५५२* केशरोद्याने साधोः पार्श्वे मृग-गतिः । ४३९ ३९६ अफोबमण्डपे गर्दभाध्वानम् । ४३९ ५५३-५५७* ३९७-४०० साधुदर्शनं मन्द-पुण्यतेक्षणं क्षामणा साधुमौनं नृप-भयं च । पूर्ववत् । ५५८-५६४* अभयदो भव, गन्ता त्यागी, चञ्चलायुः प्रेतार्थी, स्वार्थकुटुम्बी तपस्वी परकार्यकर्मेशी । ४४१ ५६५-५६६* ४०१-४०३ संजयदीक्षा गा-थानवकानुवादः । ४४२ ५६७-५६८* संजयं प्रति त्यागरूपनामगो-त्रादिप्रश्नस्तदुत्तरं च । ४४३ ५७०-५७८* क्रियावाद्याद्याः (४), बुद्ध-प्रादुष्टता एते, फलं चैषाम् । तेषां मायाविता । तद्विषयं स्वज्ञानं ब्रह्मलो-कच्यवन्, नानारुचिर्वर्जनं प्रश्नवर्जनं च । ४४६ ५७९-५८०* तज्ज्ञानं जिनशासनं क्रियाऽक्रि-ययोर्ग्रहणवर्जने । ४४७ ५८१-५९७* भरतसगरमघवत्सनत्कुमार-शान्तिकुन्धवरमहापद्महरिषेणजयद-शार्णभद्रप्रत्येकबुद्धो (४) दायनश्चेत-विजयमहाबलानां त्यागमोक्षौ । ४४९ ५९८-६००* दृढपराक्रमोपदेशः, संसार-तरणं सिद्धिश्च । ४५० ४०४ संजयसिद्धिः । ॥ इति संजयतीयाध्ययनम् १८ ॥ ॥ अथ मृगापुत्रीयाध्ययनम् ॥ ४०५-४०८ मृगापुत्रनिक्षेपा(४)दिः । ४५१ ६०१-६०४* सुग्रीवाधिपबलभद्रमृगापुत्रव-लश्रीः(मृगापुत्रः)दोगुन्दुक इव क्रीडन् नगरालोकी । ६०५-६०८* ४०९-४१५ साधुदर्शनाज्जाति-स्मृतिः । पूर्वोक्तानुवादः । ४५२ ६०९-६१०* ४१६ विरक्तः प्रव्रज्याकामः पितराबुवाच । तदेव । ४५३

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७८ ॥ ६११-६२३* भोगा विषफलवत्कटुविपाकाः ४२१ तदेव । शरीरमनित्यत्वाद्याघ्रातमसारे व्या- ६९६-६९८* उपसंहारः ४६५ धिरोगाद्यालये नरत्वेऽरतिर्जन्मादि ॥ इति मृगापुत्रीयाध्ययनम् १९ ॥ दुःखं क्षेत्रादेर्वियोगः असुन्दरा भोगा ॥ अथ महानिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥ अपाथेयाटवीगमनवत्प्रदीप्तगृहशयन- ४२२-४२४ क्षुल्लकप्रतिपक्षमहन्निक्षेपादि । वत्संसारः । ४५५ ४६६ ६२४-६४३* साधुधर्मदुष्करता । ४५७ ४२५-४२८ पञ्च निर्गन्थाः, प्रज्ञापनादि (३७) ६४४-६७४* नरकदुःखवर्णनम् । ४६१ द्वाराणि । उपसंहारः । ४७१ ६७५* निष्प्रतिकर्मता (श्रामण्ये) ४६२ ६९९* मङ्गलं कृत्वा शिक्षाप्रतिज्ञा । ४७२ ६७६-६८३* अरण्यमृगचर्या । ४६३ ७००-७०६* श्रेणिककृता संजयप्रशंसा पृ- ६८४-६८७* मृगापुत्रदीक्षा । च्छा च ४७३ ४१७-४२० तदेव ४६४ ७०७* अनाथत्वं मुनिवत् हेतुः । ६८८-६९३* मृगापुत्रानगारवर्णनम् । ४६५ ७०८-७०९* नाथभवनम् । ६९४-६९५* मृगापुत्रसिद्धिः । ७१०-७११* अनाथः कथं नाथः ? । ७१२-७१३* अश्वहस्त्यादिभिर्नाथत्वम् । ४७४ ७१४-७३३* अनाथत्वस्वरूपे स्वपूर्ववृत्तम् । ४७६ ७३४-७३५* आत्मनो वैतरण्यादित्वम् । ४७७ ७३६-७४८* श्रामण्येऽपि कुमार्यसंभवाद्- नाथता । ४८० ७४९-७५१* कुशीलत्यागिनो मार्गेण मोक्षः । ७५२-७५८* श्रेणिकतुष्टिः क्षामणोपसंहा- रश्च । ४८१ ॥ इति महानिर्ग्रन्थीयाध्ययनम् ॥ २० ॥ ॥ अथ समुद्रपालीयाध्ययनम् ॥ ४२९-४३० समुद्रपालयोर्निक्षेपा(४)दिः । ४८२ उत्तराध्य- यनेसंजतीय मृगापुत्र महानिर्ग्र- न्थीयानि. ॥ १७८ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"><tr><td> ७५९-७६८ समुद्रपालजन्मविवाहवध्यदर्शन- संवेगमातापितृपृच्छा दीक्षा च । ४३१-४४१ तदेव सविशेषम् ४८४ ७६९-७८१ समुद्रपालानगरवर्णनम् । ४८७ ७८२* समुद्रपालसिद्धिः । ४४२ तदेव । ४८८ ॥ इति समुद्रपालीयाध्य० ॥२०॥ ॥ अथ रथनेमीयाध्ययनम् ॥ ४४३-४४५ रथनेमिनिक्षेपादिः ४८८ ७८३-७९९* महर्द्ध्या नेमेरुद्राहमहोत्सवः, मृगरोधप्रश्नश्च । सारथेरुत्तरम् ४९१ ८००-८०६* नेमेर्दीक्षा ४९२ ८०७-८०९* वासुदेवादिकृता नेमिस्तुतिः ८१०-८१२* राजीमतीदीक्षा । वासुदेवा- शीर्वादः । ४९३ </td><td> ८१४-८३०* ४४६-४५० गुहायां रथने- मिना समागमः, भोगप्रार्थना, राजीमत्या निश्चलता उपदेशश्च । रथ- नेमेर्मागप्रतिपत्तिः । (नूपुरपण्डिता- ख्यानम्) द्वयोर्भोक्षः । तदेव सवि- शेषम् । ४९७ ८३१* उपसंहारः । ॥ इति रथनेमीयाध्ययनम् २२ ॥ ॥ अथ केशिगौतमीयाध्ययनम् ॥ ४५१-४५४ गौतमनिक्षेपादिः (केशिनोऽपि) ४९८ ८३२* श्रीपार्श्ववर्णनम् । ८३३-८३५* सुविहितकेशिनस्तिन्दुके आ- गनम् । </td><td> ८३६-८३९* श्रीगौतमस्यागमनं कोष्ठके । ४९९ ८४०-८४४* उभयोराचारभेदचिन्ता । ५०० ८४५-८५१* गौतमस्य गमनं, पलालादिभिः प्रतिपत्तिः, द्वयोः शोभा, लोकसमा- गमः । ५०२ ८५२-८५३* पृच्छाया अनुज्ञा । ४५५-४५७ व्रतलिङ्गादि (१२) प्रश्नोद्देशः । ८५४-८५८* चतुःपञ्चयामयोः केशिनः प्रश्नः, ऋजुजडवक्रजडत्वादिना गौत- मस्योत्तरम् । ५०३ ८५९-८६४* सचेलाचेलकप्रश्नः, प्रत्यया- दिभिरुत्तरम् । ५०४ ८६५-८६९* अनुज्ञायां शत्रुतत्पराजयप्रश्न </td></tr></table>	७५९-७६८ समुद्रपालजन्मविवाहवध्यदर्शन- संवेगमातापितृपृच्छा दीक्षा च । ४३१-४४१ तदेव सविशेषम् ४८४ ७६९-७८१ समुद्रपालानगरवर्णनम् । ४८७ ७८२* समुद्रपालसिद्धिः । ४४२ तदेव । ४८८ ॥ इति समुद्रपालीयाध्य० ॥२०॥ ॥ अथ रथनेमीयाध्ययनम् ॥ ४४३-४४५ रथनेमिनिक्षेपादिः ४८८ ७८३-७९९* महर्द्ध्या नेमेरुद्राहमहोत्सवः, मृगरोधप्रश्नश्च । सारथेरुत्तरम् ४९१ ८००-८०६* नेमेर्दीक्षा ४९२ ८०७-८०९* वासुदेवादिकृता नेमिस्तुतिः ८१०-८१२* राजीमतीदीक्षा । वासुदेवा- शीर्वादः । ४९३	८१४-८३०* ४४६-४५० गुहायां रथने- मिना समागमः, भोगप्रार्थना, राजीमत्या निश्चलता उपदेशश्च । रथ- नेमेर्मागप्रतिपत्तिः । (नूपुरपण्डिता- ख्यानम्) द्वयोर्भोक्षः । तदेव सवि- शेषम् । ४९७ ८३१* उपसंहारः । ॥ इति रथनेमीयाध्ययनम् २२ ॥ ॥ अथ केशिगौतमीयाध्ययनम् ॥ ४५१-४५४ गौतमनिक्षेपादिः (केशिनोऽपि) ४९८ ८३२* श्रीपार्श्ववर्णनम् । ८३३-८३५* सुविहितकेशिनस्तिन्दुके आ- गनम् ।	८३६-८३९* श्रीगौतमस्यागमनं कोष्ठके । ४९९ ८४०-८४४* उभयोराचारभेदचिन्ता । ५०० ८४५-८५१* गौतमस्य गमनं, पलालादिभिः प्रतिपत्तिः, द्वयोः शोभा, लोकसमा- गमः । ५०२ ८५२-८५३* पृच्छाया अनुज्ञा । ४५५-४५७ व्रतलिङ्गादि (१२) प्रश्नोद्देशः । ८५४-८५८* चतुःपञ्चयामयोः केशिनः प्रश्नः, ऋजुजडवक्रजडत्वादिना गौत- मस्योत्तरम् । ५०३ ८५९-८६४* सचेलाचेलकप्रश्नः, प्रत्यया- दिभिरुत्तरम् । ५०४ ८६५-८६९* अनुज्ञायां शत्रुतत्पराजयप्रश्न
७५९-७६८ समुद्रपालजन्मविवाहवध्यदर्शन- संवेगमातापितृपृच्छा दीक्षा च । ४३१-४४१ तदेव सविशेषम् ४८४ ७६९-७८१ समुद्रपालानगरवर्णनम् । ४८७ ७८२* समुद्रपालसिद्धिः । ४४२ तदेव । ४८८ ॥ इति समुद्रपालीयाध्य० ॥२०॥ ॥ अथ रथनेमीयाध्ययनम् ॥ ४४३-४४५ रथनेमिनिक्षेपादिः ४८८ ७८३-७९९* महर्द्ध्या नेमेरुद्राहमहोत्सवः, मृगरोधप्रश्नश्च । सारथेरुत्तरम् ४९१ ८००-८०६* नेमेर्दीक्षा ४९२ ८०७-८०९* वासुदेवादिकृता नेमिस्तुतिः ८१०-८१२* राजीमतीदीक्षा । वासुदेवा- शीर्वादः । ४९३	८१४-८३०* ४४६-४५० गुहायां रथने- मिना समागमः, भोगप्रार्थना, राजीमत्या निश्चलता उपदेशश्च । रथ- नेमेर्मागप्रतिपत्तिः । (नूपुरपण्डिता- ख्यानम्) द्वयोर्भोक्षः । तदेव सवि- शेषम् । ४९७ ८३१* उपसंहारः । ॥ इति रथनेमीयाध्ययनम् २२ ॥ ॥ अथ केशिगौतमीयाध्ययनम् ॥ ४५१-४५४ गौतमनिक्षेपादिः (केशिनोऽपि) ४९८ ८३२* श्रीपार्श्ववर्णनम् । ८३३-८३५* सुविहितकेशिनस्तिन्दुके आ- गनम् ।	८३६-८३९* श्रीगौतमस्यागमनं कोष्ठके । ४९९ ८४०-८४४* उभयोराचारभेदचिन्ता । ५०० ८४५-८५१* गौतमस्य गमनं, पलालादिभिः प्रतिपत्तिः, द्वयोः शोभा, लोकसमा- गमः । ५०२ ८५२-८५३* पृच्छाया अनुज्ञा । ४५५-४५७ व्रतलिङ्गादि (१२) प्रश्नोद्देशः । ८५४-८५८* चतुःपञ्चयामयोः केशिनः प्रश्नः, ऋजुजडवक्रजडत्वादिना गौत- मस्योत्तरम् । ५०३ ८५९-८६४* सचेलाचेलकप्रश्नः, प्रत्यया- दिभिरुत्तरम् । ५०४ ८६५-८६९* अनुज्ञायां शत्रुतत्पराजयप्रश्न		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 5px;"> नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७९ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> उत्तरं च आत्मकषायेन्द्रियजयादिना ५०५ ८७०-८७४* तथा पाशकर्त्तनप्रश्नः, राग- द्वेषच्छेदादिना उत्तरम् । ८७५-८७९* लतोन्मूलनप्रश्नः, भववृष्णा- दिना उत्तरम् । ५०६ ८८०-८८४* अग्निनिर्वापणप्रश्नः, कषायाम्नि- श्रुतशीलतपोजलैरुत्तरम् । ५०७ ८८५-८८९* दुष्टाश्वनिग्रहप्रश्नः, मनोनिग्र- हादिनोत्तरम् । ८९०-८९४* कुपथप्रश्नः, कुप्रवचनादिनो- त्तरम् । ५०८ ८९५-८९९* श्रोतोवारणप्रश्नः, जरामरण- वेगधर्मद्वीपादिनोत्तरम् । ५०९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ९००-९०४* संसारपारगमनप्रश्नः, संसार- नावादिभिरुत्तरम् ५१० ९०५-९०९* तमोनाशप्रश्नः, जिनभानुनो- त्तरम् ९१०-९१५* प्राप्यस्थानप्रश्नः निर्वाणादि- नोत्तरं । ५११ ९१६-९२०* गौतमनमस्कारः, केशिबोधः, समागमफलनिर्देशः, लोकसन्तोष आशीश्च ५१२ ॥ इति केशिगौतमीयाध्ययनम् २३ ॥ ॥ अथ प्रवचनमात्राध्ययनम् ॥ ४५८-४६२* प्रवचने निक्षेपाः (४) । व्य- तिरिक्ते कुतीर्थिकानि भावे द्वादशा- ङ्गम् । मातनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते भाजने द्रव्यम्, भावे प्रवचनमातरः । </td><td style="width: 35%; vertical-align: top; padding: 5px;"> अध्ययननामान्वर्थः । ५१४ ९२१-९२३* अष्टप्रवचनमात्रादेशः ५१५ ९२४-९२८* आलम्बनादि कारणेर्या- द्रव्यादि (४) ५१६ ९२९-९३०* अक्रोधादेरसावद्यादिर्भाषा ०। ९३१-९३२* शुद्धमिक्षादिरेषणा ५१७ ९३३-९३४* आदाननिक्षेपसमितिः । ९३५-९३८* उच्चारदेरनापातादौ विस्तीर्णादौ च त्यागः। समितीनामुपसंहारः, ५१८ ९३९* गुप्तिकथनप्रतिज्ञा । ९४०-९४१* संरम्भादिनिवृत्ता सत्यादियुता मनोगुप्तिः (४) तथैव वचोगुप्तिः । ५१८ ९४४-९४५* स्थानादौ संरम्भादेः कायनि- वर्त्तनं कायगुप्तिः । ५१९ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 5px;"> उत्तराध्य- यने समुद्र- पालीय रथ- नेमीय के- शिगौतमीय प्रवचनानि, ॥ १७९ ॥ </td></tr> </table>				नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७९ ॥	उत्तरं च आत्मकषायेन्द्रियजयादिना ५०५ ८७०-८७४* तथा पाशकर्त्तनप्रश्नः, राग- द्वेषच्छेदादिना उत्तरम् । ८७५-८७९* लतोन्मूलनप्रश्नः, भववृष्णा- दिना उत्तरम् । ५०६ ८८०-८८४* अग्निनिर्वापणप्रश्नः, कषायाम्नि- श्रुतशीलतपोजलैरुत्तरम् । ५०७ ८८५-८८९* दुष्टाश्वनिग्रहप्रश्नः, मनोनिग्र- हादिनोत्तरम् । ८९०-८९४* कुपथप्रश्नः, कुप्रवचनादिनो- त्तरम् । ५०८ ८९५-८९९* श्रोतोवारणप्रश्नः, जरामरण- वेगधर्मद्वीपादिनोत्तरम् । ५०९	९००-९०४* संसारपारगमनप्रश्नः, संसार- नावादिभिरुत्तरम् ५१० ९०५-९०९* तमोनाशप्रश्नः, जिनभानुनो- त्तरम् ९१०-९१५* प्राप्यस्थानप्रश्नः निर्वाणादि- नोत्तरं । ५११ ९१६-९२०* गौतमनमस्कारः, केशिबोधः, समागमफलनिर्देशः, लोकसन्तोष आशीश्च ५१२ ॥ इति केशिगौतमीयाध्ययनम् २३ ॥ ॥ अथ प्रवचनमात्राध्ययनम् ॥ ४५८-४६२* प्रवचने निक्षेपाः (४) । व्य- तिरिक्ते कुतीर्थिकानि भावे द्वादशा- ङ्गम् । मातनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते भाजने द्रव्यम्, भावे प्रवचनमातरः ।	अध्ययननामान्वर्थः । ५१४ ९२१-९२३* अष्टप्रवचनमात्रादेशः ५१५ ९२४-९२८* आलम्बनादि कारणेर्या- द्रव्यादि (४) ५१६ ९२९-९३०* अक्रोधादेरसावद्यादिर्भाषा ०। ९३१-९३२* शुद्धमिक्षादिरेषणा ५१७ ९३३-९३४* आदाननिक्षेपसमितिः । ९३५-९३८* उच्चारदेरनापातादौ विस्तीर्णादौ च त्यागः। समितीनामुपसंहारः, ५१८ ९३९* गुप्तिकथनप्रतिज्ञा । ९४०-९४१* संरम्भादिनिवृत्ता सत्यादियुता मनोगुप्तिः (४) तथैव वचोगुप्तिः । ५१८ ९४४-९४५* स्थानादौ संरम्भादेः कायनि- वर्त्तनं कायगुप्तिः । ५१९	उत्तराध्य- यने समुद्र- पालीय रथ- नेमीय के- शिगौतमीय प्रवचनानि, ॥ १७९ ॥
नन्द्यादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १७९ ॥	उत्तरं च आत्मकषायेन्द्रियजयादिना ५०५ ८७०-८७४* तथा पाशकर्त्तनप्रश्नः, राग- द्वेषच्छेदादिना उत्तरम् । ८७५-८७९* लतोन्मूलनप्रश्नः, भववृष्णा- दिना उत्तरम् । ५०६ ८८०-८८४* अग्निनिर्वापणप्रश्नः, कषायाम्नि- श्रुतशीलतपोजलैरुत्तरम् । ५०७ ८८५-८८९* दुष्टाश्वनिग्रहप्रश्नः, मनोनिग्र- हादिनोत्तरम् । ८९०-८९४* कुपथप्रश्नः, कुप्रवचनादिनो- त्तरम् । ५०८ ८९५-८९९* श्रोतोवारणप्रश्नः, जरामरण- वेगधर्मद्वीपादिनोत्तरम् । ५०९	९००-९०४* संसारपारगमनप्रश्नः, संसार- नावादिभिरुत्तरम् ५१० ९०५-९०९* तमोनाशप्रश्नः, जिनभानुनो- त्तरम् ९१०-९१५* प्राप्यस्थानप्रश्नः निर्वाणादि- नोत्तरं । ५११ ९१६-९२०* गौतमनमस्कारः, केशिबोधः, समागमफलनिर्देशः, लोकसन्तोष आशीश्च ५१२ ॥ इति केशिगौतमीयाध्ययनम् २३ ॥ ॥ अथ प्रवचनमात्राध्ययनम् ॥ ४५८-४६२* प्रवचने निक्षेपाः (४) । व्य- तिरिक्ते कुतीर्थिकानि भावे द्वादशा- ङ्गम् । मातनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते भाजने द्रव्यम्, भावे प्रवचनमातरः ।	अध्ययननामान्वर्थः । ५१४ ९२१-९२३* अष्टप्रवचनमात्रादेशः ५१५ ९२४-९२८* आलम्बनादि कारणेर्या- द्रव्यादि (४) ५१६ ९२९-९३०* अक्रोधादेरसावद्यादिर्भाषा ०। ९३१-९३२* शुद्धमिक्षादिरेषणा ५१७ ९३३-९३४* आदाननिक्षेपसमितिः । ९३५-९३८* उच्चारदेरनापातादौ विस्तीर्णादौ च त्यागः। समितीनामुपसंहारः, ५१८ ९३९* गुप्तिकथनप्रतिज्ञा । ९४०-९४१* संरम्भादिनिवृत्ता सत्यादियुता मनोगुप्तिः (४) तथैव वचोगुप्तिः । ५१८ ९४४-९४५* स्थानादौ संरम्भादेः कायनि- वर्त्तनं कायगुप्तिः । ५१९	उत्तराध्य- यने समुद्र- पालीय रथ- नेमीय के- शिगौतमीय प्रवचनानि, ॥ १७९ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1"><tr><td> ९४६-९४७* समितिगुप्तोर्विशेषः, तद्व्य- फलं च । ५२० ॥ इति प्रवचनमात्राध्ययनम् २४ ॥ ॥ अथ यज्ञीयाध्ययनम् ॥ ४६३-४६५ यज्ञनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते द्वि- जयज्ञादि, भावे तपःसंयमयत्तना, वि- जयघोषयज्ञे जयघोषसाधोरध्ययनो- त्थानम् ५२१ ४६६-४७३ जयघोषचरित्रम् । ५२२ ९४८-९५२* मनोरमे जयघोषस्य वासः वि- जयघोषयज्ञे भिक्षायाच्चा । ५२३ ९५३-९५५* ऋत्विग्भ्य इदं, न तुभ्यं देयम् । (याजकः) ९५६-९५९* वेदयज्ञादिमुखाज्ञः । (मुनिः) ५२४ </td><td> ९६०-९६२* निरुत्तरः प्रच्छ स्वरूपम् । (या०) ९६३-९८१* वेदादिमुखब्राह्मणादिस्वरूपम् । (मुनिः) ५२९ ९८२-९८५* मुनिप्रशंसा दीक्षाविज्ञप्तिश्च । ५३० ९८६-९८९* निरीहता. मृत्तिकागोलकदृष्टा- न्तश्च ९९०-९९१* विजयघोषदीक्षा, द्वयोर्मोक्षश्च । ५३१ ४७२-४८२ द्वयोश्चरित्रम् । ५३२ ॥ इति यज्ञीयाध्ययनम् २५ ॥ ॥ अथ सामाचार्यध्ययनम् ॥ ४८३-४८८ सामनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते शर्करादौ । भावे इच्छामिथ्यादि । </td><td> आचारनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते नमनादि भावे आचारः सामाचार्याः ५३३ ४८९ अध्ययननामान्वर्थः । ९९२* दुःखमोक्षिणीसामाचारीकथनप्रतिज्ञा ९९३-९९५ सामाचार्यः (१०) आवश्य- क्याद्याः । ५३४ ९९६-९९८* (१०) सामाचारीविषयः ५३५ ९९९-१००१* स्वाध्यायवैयावृत्यनियोगः (ओघे) ५३६ १००२-१००३* पौरुषीचतुष्कृत्यम् । ५३७ १००४-१००७* छायाया पौरुषीज्ञानं प्रति- लेखनाकालज्ञानं च । ५३८ </td></tr></table>	९४६-९४७* समितिगुप्तोर्विशेषः, तद्व्य- फलं च । ५२० ॥ इति प्रवचनमात्राध्ययनम् २४ ॥ ॥ अथ यज्ञीयाध्ययनम् ॥ ४६३-४६५ यज्ञनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते द्वि- जयज्ञादि, भावे तपःसंयमयत्तना, वि- जयघोषयज्ञे जयघोषसाधोरध्ययनो- त्थानम् ५२१ ४६६-४७३ जयघोषचरित्रम् । ५२२ ९४८-९५२* मनोरमे जयघोषस्य वासः वि- जयघोषयज्ञे भिक्षायाच्चा । ५२३ ९५३-९५५* ऋत्विग्भ्य इदं, न तुभ्यं देयम् । (याजकः) ९५६-९५९* वेदयज्ञादिमुखाज्ञः । (मुनिः) ५२४	९६०-९६२* निरुत्तरः प्रच्छ स्वरूपम् । (या०) ९६३-९८१* वेदादिमुखब्राह्मणादिस्वरूपम् । (मुनिः) ५२९ ९८२-९८५* मुनिप्रशंसा दीक्षाविज्ञप्तिश्च । ५३० ९८६-९८९* निरीहता. मृत्तिकागोलकदृष्टा- न्तश्च ९९०-९९१* विजयघोषदीक्षा, द्वयोर्मोक्षश्च । ५३१ ४७२-४८२ द्वयोश्चरित्रम् । ५३२ ॥ इति यज्ञीयाध्ययनम् २५ ॥ ॥ अथ सामाचार्यध्ययनम् ॥ ४८३-४८८ सामनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते शर्करादौ । भावे इच्छामिथ्यादि ।	आचारनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते नमनादि भावे आचारः सामाचार्याः ५३३ ४८९ अध्ययननामान्वर्थः । ९९२* दुःखमोक्षिणीसामाचारीकथनप्रतिज्ञा ९९३-९९५ सामाचार्यः (१०) आवश्य- क्याद्याः । ५३४ ९९६-९९८* (१०) सामाचारीविषयः ५३५ ९९९-१००१* स्वाध्यायवैयावृत्यनियोगः (ओघे) ५३६ १००२-१००३* पौरुषीचतुष्कृत्यम् । ५३७ १००४-१००७* छायाया पौरुषीज्ञानं प्रति- लेखनाकालज्ञानं च । ५३८
९४६-९४७* समितिगुप्तोर्विशेषः, तद्व्य- फलं च । ५२० ॥ इति प्रवचनमात्राध्ययनम् २४ ॥ ॥ अथ यज्ञीयाध्ययनम् ॥ ४६३-४६५ यज्ञनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते द्वि- जयज्ञादि, भावे तपःसंयमयत्तना, वि- जयघोषयज्ञे जयघोषसाधोरध्ययनो- त्थानम् ५२१ ४६६-४७३ जयघोषचरित्रम् । ५२२ ९४८-९५२* मनोरमे जयघोषस्य वासः वि- जयघोषयज्ञे भिक्षायाच्चा । ५२३ ९५३-९५५* ऋत्विग्भ्य इदं, न तुभ्यं देयम् । (याजकः) ९५६-९५९* वेदयज्ञादिमुखाज्ञः । (मुनिः) ५२४	९६०-९६२* निरुत्तरः प्रच्छ स्वरूपम् । (या०) ९६३-९८१* वेदादिमुखब्राह्मणादिस्वरूपम् । (मुनिः) ५२९ ९८२-९८५* मुनिप्रशंसा दीक्षाविज्ञप्तिश्च । ५३० ९८६-९८९* निरीहता. मृत्तिकागोलकदृष्टा- न्तश्च ९९०-९९१* विजयघोषदीक्षा, द्वयोर्मोक्षश्च । ५३१ ४७२-४८२ द्वयोश्चरित्रम् । ५३२ ॥ इति यज्ञीयाध्ययनम् २५ ॥ ॥ अथ सामाचार्यध्ययनम् ॥ ४८३-४८८ सामनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते शर्करादौ । भावे इच्छामिथ्यादि ।	आचारनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते नमनादि भावे आचारः सामाचार्याः ५३३ ४८९ अध्ययननामान्वर्थः । ९९२* दुःखमोक्षिणीसामाचारीकथनप्रतिज्ञा ९९३-९९५ सामाचार्यः (१०) आवश्य- क्याद्याः । ५३४ ९९६-९९८* (१०) सामाचारीविषयः ५३५ ९९९-१००१* स्वाध्यायवैयावृत्यनियोगः (ओघे) ५३६ १००२-१००३* पौरुषीचतुष्कृत्यम् । ५३७ १००४-१००७* छायाया पौरुषीज्ञानं प्रति- लेखनाकालज्ञानं च । ५३८		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- ओष. आव. अनु. दश. पिण्ड. उच्च. ॥ १८० ॥	१००८-१०११* रात्रिपौरुषी (४) कृतं तज्ज्ञानोपायश्च । ५३९ १०१२-१०२८* प्रतिलेखनाविधिराहारा- नाहारकारणानि विहारस्वाध्यायका- लप्रतिक्रमणादि । ५४४ १०२८-१०४२* दैवसिकप्रतिक्रमण- विधिः कालग्रहणं रात्रिकप्रतिक्रमण- विधिश्च । ५४७ १०४३* उपसंहारः, सामाचारीफलम् । ॥ इति सामाचार्यध्ययनम् २६ ॥ ॥ अथ खलुङ्कीयाध्ययनम् ॥ ४९०-४९८ खलुङ्कनिक्षेपाः (४) खलुङ्कस्व- रूपम् । खलुङ्कसाधुस्वरूपम् । खलु- ङ्कत्वं त्यक्त्वा ऋजुः स्यात् ५४८	१०४४-१०४५* गर्गस्य समाधिः शिष्यो- पदेशश्च । ५५० १०४६-१०५१* खलुङ्ककुशिययोः साम्य- म् । ५५२ १०५२-१०५७* गौरवक्रोधमिक्षालसत्वाद्याः कुशियदुर्गुणाः । ५५३ १०५८-१०६०* उद्वेगेन कुशियत्यागः शी- तीभावश्च । ५५४ ॥ इति खलुङ्कीयाध्ययनम् २७ ॥ ॥ अथ मोक्षमार्गाध्ययनम् ॥ ४९९-५०५ मोक्षनिक्षेपाः (४) मार्गनिक्षेपाः (४) गतिनिक्षेपाः (४) अध्ययन- नामान्वर्थः । ५५५	१०६१* ज्ञानादिमोक्षमार्गकथनप्रतिज्ञा । ५५६ १०६१-१०६३* मार्गस्वरूपं तत्फलं च । १०६४* ज्ञानपञ्चकम् । ५५७ १०६५-१०६६* ज्ञानविषयो द्रव्यगुणपर्या- यलक्षणं च । ५५८ १०६७-१०७२* धर्माधर्मादेर्लोकत्वं, तेषा- मेकानेकते लक्षणानि च । ५६२ १०७३* पर्यायलक्षणम् । १०७४-१०९१* जीवादिश्रद्धामयं सम्य- क्त्वं निसर्गरुच्याद्याः (१०) सम्य- क्त्वलिङ्गानि । सम्यक्त्वमहिमा, तदाचाराश्च । ५६७ १०९२-१०९३* चारित्रपञ्चकम् ५६९	उत्तराध्य- यने यज्ञीय सामाचारी खलुङ्कीय मोक्षमार्गाः ॥ १८० ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) १०९४* द्विविधं तपः । १०९५-१०९६* मोक्षप्राप्तौ ज्ञानादीनां व्या- पारः संयमतपःफलं च । ॥ इति मोक्षमार्गाध्ययनम् ॥२८॥ ॥ अथ सम्यक्त्वपराक्रमाध्ययनम् ॥ ५०६-५१२ सम्यक्त्वपराक्रमाप्रमादरवी- तरागश्रुतज्ञानानि । अप्रमादश्रुत- निक्षेपाः (४) अध्ययनान्वर्थश्च । ५०१ १३ अध्ययनोद्देशः ५०२ १४ संवेगादीनि (७३) द्वाराणि ५०३ १५-८७ संवेग १ निर्वेद २ धर्मश्रद्धा ३ शु- श्रूषा ४ऽऽलोचना ५ निन्दना ६ ग- र्हणा ७ सामायिक ८ चतुर्विंशतिस्तव- ९ वन्दनक १० प्रतिक्रमण ११- कायोत्सर्ग १२ प्रत्याख्यान १३ स्तव- स्तुतिः १४ कालग्रहण १५ प्रायश्चित्त- १६ क्षामणा १७ स्वाध्याय १८ वा- चना १९ प्रतिपृच्छा २० पराव- र्त्तना २१ अनुप्रेक्षा २२ धर्मकथा- २३ श्रुताराधनै २४ कामनस्कता- २५ संयम २६ तपो २७ व्यवदान- २८ सुखसाता २९ प्रतिबद्धता ३०- विविक्तशय्यादि ३१ विनिवर्त्तना- ३२ संभोगो ३३ पथ्या ३४ हार- ३५ कषाय ३६ योग ३७ शरीर- ३८ सहाय ३९ भक्त ४० सद्भाव- प्रत्याख्यान ४१ प्रतिक्रमता ४२ वै- यावृत्त्य ४३ सर्वगुणसंपूर्णता ४४- वीतरागता ४५ क्षान्ति ४६ मुक्त्या- ४७ जैव ४८ मार्दव ४९ भाव ५०- करण ५१ योगसत्य ५२ मनो ५३- वचः ५४ कायगुप्ताता ५५ मनो- ५६ वचः ५७ कायसमाधारणा ५८- ज्ञान ५९ दर्शन ६० चारित्रसंप- न्नता ६१ श्रोत्र ६२ चक्षु ६३- घ्राण ६४ जिह्वा ६५ स्पर्शनेन्द्रिय- निग्रह ६६ क्रोध ६७ मान ६८- माया ६९ लोभविजय ७० प्रेम- द्वेषमिध्यादर्शनविजय ७१ यथायुः- पालन ७२ सर्वहाना ७३ नां फ- लानि । ५९८ ८८ उपसंहारः । ५९८ ॥ इति सम्यक्त्वपराक्रमाध्ययनम् ॥२९॥ ३९ नं०

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- अनु. आव. ओष. दश. पिण्ड. उत्त. ॥ १८१ ॥	॥ अथ तपोमार्गाध्ययनम् ॥ ५१३-५१६ तपोमार्गगतीनां निक्षेपादिः ॥ ५१९ १०९८* कर्मक्षयहेतुस्तपः । १०९९-११०३* अनाश्रवस्तटाकदृष्टान्तेन, संवरनिर्जरे ६०० ११०४* बाह्याभ्यन्तरतपसी (६) ११०५-१११०* बाह्यं तपः (६) अनशने इत्त्वरे श्रेणिप्रतरघनवर्गवर्गप्रकीर्णानि, इतरस्मिन् सविचाराविचारादि ॥ ६०३ ११११-११२१* अवमौर्दये द्रव्यक्षेत्रकाल- भावपर्यायैः (पेटाद्वैपेटाद्याः ६) ६०६ ११२२* अष्टविधगोचरैषणाभिग्रहाः ६०७ ११२३-११२५* विक्त्यादित्यागः, वीरा- सनादि, एकान्तादिः (क्रमेण) ६०८		सम्यक्त्व- तपोमार्गच- रणाप्रमादा- ध्ययनानि २९-३२. ॥ १८१ ॥
		११२६* बाह्यस्योपसंहारः, अभ्यन्तरप्रतिज्ञा । ११२७-११३४* सप्रभेदमभ्यन्तरं तपः त- त्फलं च । ६१० ॥ इति तपोमार्गाध्ययनम् ॥ ३० ॥ ॥ अथ चरणविध्यध्ययनम् ॥ ५१७-५२१ चरणविध्योर्निक्षेपाः भावचरण- विधिनाऽधिकारः । ६११ ११३५-११५५* चरणविधिप्रतिज्ञा, एका- दित्रयत्रिंशदन्तस्थानानि विरती राग- द्वेषादीनि तत्फलं च । ६१८ ॥ इति चरणविध्यध्ययनम् ॥ ३१ ॥ ॥ अथ प्रमादस्थानाध्ययनम् ॥ ५२२-५२३ प्रमादनिक्षेपाः (४) व्यतिरिक्ते मद्याद्याः, भावे विषयाः ।		
		५२४-५२५ स्थाननिक्षेपाः (१५) भावप्रमा- देन संख्याभावस्थानाभ्यां चाधिकारः । ६२० ५२६-५२७ आद्यान्तजिनयोः प्रमादोऽहोरा- त्रान्तमुहूर्त्तं । ५२८ प्रमादिनोऽनन्तसंसारः । ५२९ ज्ञानदर्शनचारित्र्येष्वप्रमादः ६२१ ११५६-११५८* मोक्षकथनप्रतिज्ञा मोक्ष- कारणानि तत्कारणानि च (वृद्धसे- वादीनि) ६२२ ११५९* मिताहारनिपुणसहायविवेकनिकेत- नसमाधिकामो मुनिः । ६२३ ११६०* कामासङ्गेनैकाकी । ११६१-११६३* मोहतृष्णयोर्मोहकर्मणोः		

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) कर्मभवयोर्दुःखमोहयोस्तृष्णालोभयो- रन्योऽन्यं कार्यकारणता । ६२४ ११६४-११७५* रागादिघातोपायाः, रस- परिहारः, विविक्तशय्या स्त्रीनिषद्या- रूपादीक्षणत्यागः, स्त्रीदुस्त्यजता, वि- षयकटुकता । ६२८ ११७६-१२५४* प्रियाप्रियविषयत्यागः, इ- न्द्रियानिन्द्रियगृद्धिदोषाः । ६३४ १२५५* विषयेभ्यो रागिणो दुःखं, नान्यस्य । ६३५ १२५६* भोगा न साम्यविगती, किन्तु राग- द्वेषौ ६३५ १२५७-१२५९ क्रोधादित्यागः, अकल्प्यादि- त्यागः ६३६ १२६०-१२६६* बन्धहेतुररागिणो मोक्षाय, नेन्द्रियार्था रागाय, असंकल्पात्तृष्णा- हानिः, कैवल्यं, मोक्षः, कृतार्थता, उपसंहारश्च । ६३९ ॥ इति प्रमादस्थानाध्ययनम् ॥३२॥ ॥ अथ कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ॥ ५३०-५३५ कर्मनिक्षेपाः (४) द्रव्यनोकर्मणि लेप्यकर्मादि । प्रकृतिनिक्षेपाः (४) नो- कर्मणि ग्रहणप्रायोग्यमुक्तानि । ६४० १२६७* संसारहेतुकर्मप्रतिज्ञा ६४१ १२६८-१२९१* अष्ट कर्माणि । ज्ञानावर- णादेरुत्तरभेदाः (५-९-२-२८-४-२- १६-५) प्रदेशक्षेत्रकालभावकथनप्र- तिज्ञा तन्निरूपणमुपसंहारश्च । ६४८ ५३६ प्रकृत्यादिज्ञानात्तत्संवरक्षणे । ॥ इति कर्मप्रकृत्यध्ययनम् ॥३३॥ ॥ अथ लेख्याध्ययनम् ॥ ५३७-५४५ लेख्यानिक्षेपाः (४) नोकर्मणि जीवे भव्याभन्ययोः सप्तविधाः, अजीवे दशविधाः (चन्द्रादीनाम्), कर्मणि कृष्णाद्याः, भावे शुद्धाशुद्धे, नोकर्मणि प्रयोगविश्रसे, अध्ययननि- क्षेपाः (४) (कर्मनिस्थन्दोऽपि लेख्या) ६५१ ५४८ प्रशस्ताप्रशस्तयोस्त्यागादानौ । १२९२-१२९३* उपक्रमो लेख्यानां नामा- दिद्वाराणि च । ६५२ १२९४* लेख्यानामानि । १२९५-१३००* लेख्यावर्णः । ६५३ १३०१-६* लेख्यारसः । ६५४

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन' मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए 'संवृतिक आगम सुत्ताणि'	नन्दादि- ओष.आव. अनु. दश. पिण्ड,उत्त. ॥ १८२ ॥ १३०७-११* लेइयागन्धस्पर्शपरिणामाः । ६५५ १३१३-२३* लेइयालक्षणानि ६५७ १३२४-४६* लेइयायाः स्थानानि, सामान्येन गत्यपेक्षया च जघन्योत्कृष्टा स्थितिः, ६६१ १३४७-१३४८* लेइयातो गतिः । १३४९-५२* लेइयाप्रथमचरमसमययोर्नोपपातः, किन्त्वन्तर्मुहूर्ते गते स्थिते च, उपसंहारश्च । ६६२ ॥ इति लेइयाध्ययनम् ॥ ३४ ॥ ॥ अध्यानमारमार्गाध्ययनम् ॥ ५४९-५५१ अनगरमार्गागतीनां निक्षेपाः(४) ६६३ कर्मप्रकृति- लेइयान- गारजीवा- जीवविभ- क्तिरूपाणि ३३-३६. ॥ १८२ ॥

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगम-४३] मूलसूत्र-४ 'उत्तराध्ययन'
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) मवगाहनाऽनन्तस्थितिर्ज्ञानादियुक्त- त्वं च । ६८७ १४४०* सिद्धानां क्षेत्रस्वरूपे । १४४१-४२* संसारिणस्त्वस्थावराः पृथि- व्यव्वनस्पतयस्त्रिधा स्थावराः। ६८८ १४४३-१४४९* पृथिव्यां सूक्ष्मबादरौ पर्या- प्तापर्याप्तौ बादरे रूक्षे (७) खरौ ६८९ १४५०-१४५६* सूक्ष्माः सर्वलोकेऽनाना- त्वाः, बादरा वैश्वे, स्थितिश्च पृथिव्याः, वर्णादिभेदाः । ६९० १४५७-१४६४* अप्कायेऽपि भेदस्थित्या- युर्वर्णादिभेदाः । ६९१ १४६५-१४७८* वनस्पतेः प्रत्येकसाधा- रणप्रभेदाः सूक्ष्मस्वरूपं स्थित्यायुर्व- र्णादिभेदाः । स्थावरोपसंहारः, त्रस- कथनप्रतिज्ञा, तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्या- स्त्रसाः । ६९३ १४८१-१४८९* तेजसो भेदाः कालस्थित्या- युर्वर्णादिभेदाश्च । ६९४ १४९०-९८* वायोभेदकालस्थित्यायुर्वर्णादि । १४९९-१६१९* द्वीन्द्रियाद्या उदारत्रसाः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियनारकपञ्चेन्द्रियति- र्यङ्मनुष्यचतुर्विधदेवानां भेदका- लस्थित्यायुर्वर्णादिभेदाः । ७०५ १६२०-१६२१* सिद्धसंसारिणो जीवाः, रूप्यरूपिणोऽजीवास्तान् श्रुत्वा श्र- द्धाय संयमे रमेत । ७०५ १६२२-२७* अनुपालितसंयमस्य द्वादश वर्षाणि संलेखना ७०७ १६२८-३१* कन्दर्पादिका अशुभा भावनाः फलं च तासां । ७०८ १६३२-१६३३* जितवचनकरणाकरणयोः फलम् । ७०९ १६३४* आलोचनाश्रवणे बह्वागमज्ञानादि कारणम् । १६३५-३९* कन्दर्पादिभावनानां स्वरूपं त- त्फलं च ७१२ १६४०* शास्त्रोपसंहारः । ५६०-५६२ पारगामिनो भव्याः, अभव्या न तदधीयेत शास्त्रम् । ७१३ ॥ इति जीवाजीवविभक्त्यध्ययनम् ॥३६॥ ॥ इत्युत्तराध्ययनबृहद्विषयानुक्रमः ॥

AN ALPHABETICAL INDEX

OF

The Aphorisms etc. occurring in Nandisûtra, Anuyogadvāra, Âvas'yaka, Oghanirukti
Das'avaikâlîka, Piṇḍaniryukti and Uttarâdhyayanasûtra.

ALONG WITH

detailed lists of subjects treated in these seven Âgamas.

Copies 1250.]

Price Rs. 2-0-0.

[A. D. 1928.

आगम संबंधी साहित्य	नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [आगमसूत्र]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः नन्दी-आदि-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)
	मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः नन्दी-आदि-सप्त-सूत्राणां लघु-बृहत् विषयानुक्रमः परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः



पूज्य आगमोधधारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च
नन्द्यादिनां विषयानुक्रमः

(किंचित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः
“नन्दी-आदि-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः”
नाम्ना परिसमाप्तः

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'